राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

नई दिल्ली से प्रकाशित

वर्ष : 12
अंक : 19
पृष्ठ : 08
नई दिल्ली
गुरुवार 04 अगस्त 2022
मूल्य : 1.50/-
RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट | पेज 3 ड्राइवर की लापरवाही ने 40 बच्चों की जान डाली जोखिम में, जल्दी निकलने के चक्कर में तोड़ा रेलवे बैरियर, ड्राइवर गिरफ्तार | पेज 5 सीएम योगी की हिन्दू युवा वाहिनी में बड़ा फेरबदल, प्रदेश कार्यकारिणी समेत सभी जिलों की इकाइयां भंग | पेज 7 अल-ज़वाहिरी का खात्मा पर परिवार को नहीं आई खरोंच, अमेरिका ने किया खास तकनीक का इस्तेमाल

राजस्थान में लंपी वायरस से 4296 गौवंश की मौत

गुजरात में भी बिगड़े हालात; जयपुर में अलर्ट जारी, मंत्री बोले- हमारी चिंता बढ़ी

जयपुर। राजस्थान, गुजरात समेत 10 राज्यों में गाय-भैंस में जानलेवा लंपी वायरस का संक्रमण तेज हो गया है। राजस्थान में करीब 2 लाख गायें इससे संक्रमित हैं। सरकार के सर्वे में 4296 गौवंश की मौतें रिकॉर्ड हुई हैं। यहां जिन 11 जिलों में इंफेक्शन फैला है, उनमें 70 से 80 लाख कैटल हैं।

बीमार मिले 78 से 80 हजार गौवंश का अब तक ट्रीटमेंट किया जा रहा है। उधर, गुजरात में लंपी संक्रमण को लेकर हालात भयावह हो चुके हैं। खासकर कच्छ और सौराष्ट्र अंचलों में बड़ी संख्या में गौवंश इसकी चपेट में हैं।

पशुपालन मंत्री लालचंद कटारिया ने आज रिव्यू मीटिंग में कहा कि हालात

चिंताजनक हैं। राजस्थान से गौवंश के सैंपल भोपाल लैब भेजे रहे हैं। वहीं, प्रभावित जिलों को 12 लाख रुपए तक का बजट दिया गया है।

कटारिया ने कहा-केन्द्र से आई टीम ने कल बीकानेर और आज जोधपुर में दौरा किया है। वह टीम भी रिपोर्ट ले रही है।

उन्होंने कहा कि जयपुर में स्टेट कंट्रोल रूम से मॉनिटरिंग की जा रही है और जयपुर सहित प्रदेश की सभी 3000 हजार गौशालाओं में अलर्ट जारी किया गया है।

4 जिले सबसे ज्यादा प्रभावित

मुख्य सचिव उषा शर्मा ने लंपी डिजीज को 15 दिन में कंट्रोल करने के निर्देश पशुपालन विभाग और जिला कलेक्टर्स को दिए हैं। 4 जिलों- बाड़मेर, जालोर, जोधपुर, सिरोही संक्रमण ज्यादा होने के कारण क्लोज मॉनिटरिंग की जा रही है। बाड़मेर में हालात बिगड़ने पर जयपुर से एडिशनल डायरेक्टर पीसी भाटी को भेजा गया है। इनके अलावा गंगानगर में कुछ गायों की मौतों की सूचना है। डूंगरपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर, राजसमंद और गुजरात बॉर्डर से सटे जिलों में भी अलर्ट है।

10 राज्यों में फैली बीमारी, गुजरात के 33 में से 20 जिलों में महामारी

पशुपालन सचिव ने बताया देश के 10 राज्यों में गायों में यह बीमारी फैल चुकी है। इनमें राजस्थान के अलावा गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, उड़ीसा, असम, कर्नाटक, केरल शामिल हैं। गुजरात की स्थिति सबसे खराब है। राजस्थान में अभी मॉर्टेलिटी रेट (पशु मृत्युदर) 1.4 परसेंट आ रही है।

नेशनल हेराल्ड केस, लगातार दूसरे दिन ईडी का एक्शन

यंग इंडिया का दफ्तर सील

नई दिल्ली। नेशनल हेराल्ड केस में प्रवर्तन निदेशालय ने बुधवार लगातार दूसरे दिन कार्रवाई की है। श्वष्ठ ने दिल्ली की हेराल्ड बिल्डिंग में स्थित यंग इंडिया कंपनी का ऑफिस सील कर दिया है। मनी लॉन्ड्रिंग केस में जांच एजेंसी ने यह कार्रवाई की है। यंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड का ऑफिस सील होने के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी का बयान आया है। उन्होंने कहा कि बीजेपी 2-3 उद्योगपतियों के लिए काम करती है। उन्होंने छोटे, मध्यम व्यापारियों के लिए कुछ नहीं किया।

कांग्रेस नेता बुधवार को दो दिवसीय दौरे पर कर्नाटक पहुंचे थे, लेकिन वो अपना दौरा छोड़कर दिल्ली वापस आ रहे हैं। राहुल रात करीब 10:30 बजे दिल्ली पहुंचेंगे। मंगलवार को ही ईडी की टीम ने सुबह से देर शाम तक नेशनल हेराल्ड के दिल्ली, मुंबई और कोलकाता समेत 16 ठिकानों पर छापेमारी की थी। यह कार्रवाई सोनिया और राहुल से पूछताछ के बाद की गई थी।

बीजेपी हमें डराना चाहती है : अजय माकन

ईडी की कार्रवाई के बाद कांग्रेस नेता अजय माकन ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा कि यह विनाश काल है, विनाश काले विपरीत बुद्धि। बीजेपी हमें डराना चाहती है, लेकिन हम जनता के मुद्दों पर आवाज उठाते रहेंगे।

कांग्रेस ने 5 अगस्त को महंगाई, बेरोजगारी और जीएसटी जैसे मुद्दों पर देश और प्रदेशों में प्रदर्शन करने का ऐलान किया था। हम प्रधानमंत्री आवास और राष्ट्रपति आवास के बाहर प्रदर्शन करेंगे। बुधवार को डीसीपी की तरफ से हमें चिट्ठी आई है और हमें प्रदर्शन करने की अनुमति देने से इनकार कर दिया। ये प्रतिशोध की राजनीति है, बीजेपी लोगों को मुद्दों से भटकाना चाह रही है। सत्य की आवाज नहीं डरेगी पुलिसिया पहरों से। गांधी के अनुयायी लड़ के जीतेंगे इन अंधेरों से। नेशनल हेराल्ड का ऑफिस सील करना, कांग्रेस मुख्यालय को पुलिस पहरे में कैद करना तानाशाह की डर और बौखलाहट दोनों दिखाता है, लेकिन महंगाई और बेरोजगारी के सवाल तो फिर भी पूछे जाएंगे।

तानाशाह के हर फरमान से लड़ना है

मंगलवार को ईडी की छापेमारी के खिलाफ नेशनल हेराल्ड दफ्तर के बाहर बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया था। प्रदर्शन कर रहे कार्यकर्ताओं ने सरकार के खिलाफ नारे भी लगाए। ईडी की कार्रवाई पर राहुल गांधी ने कहा था- कांग्रेस आप लोगों की है और आप कांग्रेस की ताकत हैं। हमें तानाशाह के हर फरमान से लड़ना है।

सोनिया से 100 से ज्यादा सवाल हुए

नेशनल हेराल्ड केस में सोनिया गांधी से 3 दिन में 12 घंटे सवाल हुए थे। 21 जुलाई को 3 घंटे, 26 जुलाई को 6 घंटे और 27 अगस्त को 3 घंटे ईडी ने पूछताछ की थी। इस दौरान उनसे 100 से ज्यादा सवाल किए गए। ईडी ने राहुल गांधी से भी जून में पांच दिनों में 50 घंटे से ज्यादा समय तक पूछताछ की थी।

भोपाल में 'ईओडब्ल्यू' छापे के दौरान क्लर्कने खाया जहर

अब तक 85 लाख कैश मिले, नोट गिनने के लिए मंगानी पड़ी मशीन

एजेंसी

भोपाल/जबलपुर। भोपाल में बुधवार को मेडिकल एजुकेशन डिपार्टमेंट के क्लर्क के घर EOW ने छापा मारा। छापे के दौरान क्लर्क हीरो केसवानी ने जहर खा लिया। अभी तक करोड़ों की संपत्ति उजागर हो चुकी है। केसवानी के घर अभी भी EOW की कार्रवाई चल रही है। मेडिकल एजुकेशन डिपार्टमेंट में क्लर्क हीरो केसवानी के घर से अब तक 85 लाख कैश और 12 से ज्यादा प्रॉपर्टी की जानकारी मिली है। इसकी कीमत 4 करोड़ से ज्यादा बताई जा रही है।

अब तक 3 कार, 1 स्कूटर, बैरागढ़ में डेढ़ करोड़ के मकान का पता चला है।

सतपुड़ा भवन में 6वीं मंजिल पर इनका दफ्तर है। अभी केसवानी आयुष्मान भारत योजना और स्वशासी संस्था सेक्शन का काम देख रहे थे।

4 हजार सैलरी से शुरू की थी नौकरी

हीरो केसवानी ने 4 हजार रुपए की शुरुआती सैलरी से शुरुआत की थी। सातवें वेतनमान के बाद 50 हजार रुपए सैलरी मिल रही थी।

इनकी अधिकांश प्रॉपर्टी पत्नी के नाम मिली। जहर पीने के बाद केसवानी को हमीदिया अस्पताल में भर्ती कराया गया है। फिलहाल उसकी हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है।

जबलपुर का असिस्टेंट इंजीनियर निकला करोड़ों का मालिक

जबलपुर नगर निगम में पदस्थ असिस्टेंट इंजीनियर के घर पर बुधवार सुबह EOW का छापा पड़ा। अब तक की जांच में इंजीनियर के पास करोड़ों रुपए की आय से अधिक संपत्ति होने का खुलासा हुआ है। EOW के SP देवेंद्र सिंह ने बताया कि आदित्य शुक्ला जबलपुर नगर निगम में असिस्टेंट इंजीनियर हैं। इंजीनियर ने अपनी नौकरी के दौरान जो प्रॉपर्टी बनाई, वो उनकी आय से 203 प्रतिशत अधिक है।

14 महीने बाद ममता कैबिनेट का विस्तार

9 कैबिनेट मंत्रियों ने शपथ ली, बाबुल को भी दीदी ने बनाया मंत्री

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में 14 महीने बाद बुधवार को ममता बनर्जी कैबिनेट का दूसरी बार विस्तार हुआ। राजभवन में राज्यपाल एल गणेशन ने 9 नए मंत्रियों को शपथ दिलाई। इनमें 7 कैबिनेट और 2 स्वतंत्र प्रभार मंत्री हैं। ममता ने विधानसभा चुनाव के बाद सितंबर 2021 में भाजपा छोड़ तृणमूल में आए पूर्व सांसद बाबुल सुप्रियो को भी मंत्री बनाया है।

कैबिनेट मिनिस्टर : बाबुल सुप्रियो, स्नेहाशीष चक्रबर्ती, पार्थ भौमिक, उदयन गुहा, प्रदीप मजूमदार, तजमुल हुसैन, सत्यजीत बर्मन। मंत्री स्वतंत्र प्रभार : बीरबाहा हंसदा, बिप्लब रॉय चौधरी।

3-4 मंत्रियों का कटेगा पत्ता, संगठन में भेजा जाएगा

ममता परफॉर्मेंस के आधार पर 3-4 मंत्रियों को हटा भी सकती हैं। खबरें हैं कि इन सभी को संगठन के कामकाज में लगाया जाएगा। सूत्रों के अनुसार जिन मंत्रियों को हटाने की चर्चा है उनमें सोमेन महापात्रा, परेश अधिकारी, चंद्रकांत सिंह और मलय घटक का नाम है।

पार्थ के ईडी जांच में फंसने के बाद संगठन में भी हुआ बदलाव

सोमवार को कैबिनेट बैठक के बाद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा था कि सुब्रत मुखर्जी, साधन पांडे के निधन और पार्थ के जेल जाने से सरकार का कामकाज प्रभावित हो रहा है। इसलिए कैबिनेट विस्तार किया जाएगा। ममता के इस बयान के कुछ देर बाद ही तृणमूल जिला संगठन में बड़ा बदलाव किया गया था।

बड़े-बड़े विभागों में मंत्री नहीं

ममता कैबिनेट के बड़े-बड़े विभागों में अनुभवी मंत्रियों की कमी है। सुब्रत मुखर्जी और साधन पांडे के निधन की वजह से पंचायती राज, PHE, खाद्य और उपभोक्ता और सहकारिता विभाग में कोई मंत्री नहीं है, जबकि पार्थ के हटने से वाणिज्य और उद्योग का प्रभार भी ममता के पास है। ऐसे में इन विभागों की जिम्मेदारी किसी दी जाएगी, ये भी देखना होगा।

चुनाव में लुभावने वादों का आंकलन हो : सुप्रीम कोर्ट

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को कहा कि चुनावी लाभ के लिए करदाताओं की गाढ़ी कमाई मुफ्त उपहार पर लुटाने के लुभावने वादे का अर्थव्यवस्था पर होने वाले नफा-नुकसान के आंकलन के लिए रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, नीति आयोग जैसा एक विशेषज्ञ निकाय का गठन किया जाना चाहिए। शीर्ष अदालत ने इस निकाय के गठन के लिए संबंधित पक्षों को विचार-विमर्श कर अपनी राय एक सप्ताह में देने को कहा हैं। मुख्य न्यायाधीश एन. वी. रमना और न्यायमूर्ति कृष्ण मुरारी और न्यायमूर्ति हिमा कोहली की पीठ ने कहा कि ये सभी नीति से जुड़े गंभीर मुद्दे हैं।

हरियाणा में मीथेन गैस लीक से 4 मजदूरों की मौत

बहादुरगढ़ की कंपनी में वेस्ट टैंक साफ करने उतरे थे मजदूर, सभी मृतक यूपी के निवासी

बहादुरगढ़। हरियाणा के बहादुरगढ़ शहर में बुधवार की दोपहर एक कंपनी में मीथेन गैस का रिसाव होने से 4 श्रमिकों की मौत हो गई है। हादसा उस वक्त हुआ, जब कर्मचारी कंपनी के वेस्ट टैंक की सफाई करने में जुटे थे।

बहादुरगढ़ के गांव रोहद स्थित इंडस्ट्रियल एरिया में एयरोफ्लेस सीलिंग मटेरियल मैन्युफैक्चरिंग कंपनी है। कंपनी में इंजन की गैस किट बनाई जाती है। यहां सफाई के लिए कई वेस्ट टैंक बनाए गए हैं। बुधवार की दोपहर कुछ कर्मचारी वेस्ट टैंक की सफाई में

जुटे थे। इसी दौरान गैस लीक हो गई और उसकी चपेट में 6 कर्मचारी आ गए। कंपनी दिल्ली के पटेल नगर निवासी हितेश की है।

जैसे ही गैस लीक हुई कर्मचारी अचेत होकर गिरने लगे। कर्मचारियों को बहादुरगढ़ के ही निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन तब तक 4 श्रमिकों की मौत हो चुकी है। दो की हालत अब भी गंभीर है। मरने वालों में

यूपी के तिहार निवासी राजबीर, नवाबगंज के अजय कुमार, शाहजहांपुर के जगतपाल और बाराबंकी के प्रकाश शामिल हैं। यूपी के ही मयंक और विकास की हालत गंभीर बनी हुई है। दोनों आईसी में हैं।

सूचना के बाद झज्जर के डीसी शक्ति सिंह और एसपी वसीम अकरम मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। इंडस्ट्रियल सेफ्टी अधिकारियों ने श्रमिकों की मौत का कारण मीथेन गैस बताया है। फैक्ट्री के वेस्ट टैंक की सफाई पिछले लंबे समय से नहीं हुई थी। गंदगी काफी समय से जमा होने के कारण वहां पर मीथेन गैस बन गई थी। पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी हुई है। जांच के लिए प्रशासनिक स्तर पर भी एक टीम बनाई गई है।

गन्ने एफआरपी 3.5 रुपये क्विंटल निर्धारित

नयी दिल्ली। केन्द्र सरकार ने आगामी पेराई सत्र के लिए गन्ने का उचित और लाभकारी मूल्य (एफआरपी) प्रति क्विंटल 305 रुपये तय किया है। चालू सत्र के लिए न्यूनतम 10 प्रतिशत चीनी पड़ता के साथ गन्ने का एफआरपी 290 रुपये प्रति क्विंटल है। मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति की बुधवार को हुई बैठक के इस निर्णय की जानकारी देते हुए एक बयान में कहा गया है कि पेराई सत्र 22-23 के लिए न्यूनतम 10.25 प्रतिशत चीनी पड़ता के साथ गन्ने का एफआरपी 305 रुपये प्रति क्विंटल रखा गया है। इसके ऊपर प्रति 0.1 प्रतिशत चीनी का पड़ता बढ़ने पर एफआरपी में 3.05 रुपये प्रति क्विंटल दिये जायेंगे। बयान में यह भी कहा गया है कि चीनी का पड़ता 9.5 प्रतिशत से कम होने पर किसानों को 282.125 रुपये प्रति क्विंटल की दर से एफआरपी मिलेगी। विज्ञप्ति के अनुसार कृषि एवं लागत मूल्य आयोग ने 2022-23 के लिए गन्ने की ए2 और परिवार की मजदूरी जोड़कर उत्पादन लागत 162 रुपये क्विंटल निर्धारित की है। इस तरह आगामी सत्र के लिए गन्ने का एफआरपी उसकी लागत के 50 प्रतिशत से अधिक है। पिछले आठ वर्ष में गन्ने का एफआरपी कुल मिलाकर 34 प्रतिशत बढ़ाया गया है ताकि किसानों की आय में वृद्धि हो सके।

आंध्र प्रदेश की क्लॉथ फैक्ट्री में गैस लीक

121 महिला कर्मचारी अस्पताल में भर्ती; गैस सैंपल जांच के लिए भेजा गया

एजेंसी

विशाखापट्टनम। आंध्र प्रदेश के अनकापल्ली जिले में मंगलवार को एक क्लॉथ फैक्ट्री में गैस लीकेज हुआ था। यहां के अत्चुतापुरम इलाके में हुए लीकेज की वजह से अस्पताल में एडमिट होने वाली महिला कर्मचारियों की संख्या बढ़कर 121 हो गई है। राहत की बात यह है कि इस हादसे में किसी की जान नहीं गई है।

पुलिस के मुताबिक, घटना मंगलवार शाम 7 बजे की हैं। फैक्ट्री में

मौजूद अन्य सभी को सुरक्षित निकाल लिया गया। फिलहाल लीक के कारणों का पता नहीं चल पाया है। मामले की जांच की जा रही है। वहीं, पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड ने गैस सैंपल को जांच के लिए इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल टेक्नोलॉजी, हैदराबाद भेज दिया है।

जांच पूरी होने तक फैक्ट्री बंद करने के आदेश

सभी गैस पीड़ितों का अत्चुतापुरम, अनकापल्ली और विशाखापट्टनम के अस्पतालों में इलाज चल रहा है। इनमें गैस सूंघने के बाद मतली और उल्टी के लक्षण देखे गए। राज्य के उद्योग मंत्री गुडीवाड़ा अमरनाथ ने हादसे की जांच के आदेश दिए हैं। मंत्री ने कहा- फैक्ट्री में 2 महीने के भीतर दूसरी बार ऐसा हुआ है, इसलिए जांच पूरी होने तक उसे बंद कर दिया गया है।

शर्मनाक | प्रयागराज के एसआरएन अस्पताल में नहीं मिली एंबुलेंस; सैनिकों ने देखा तो मदद की

बेटे का शव कंधे पर रख पैदल निकल पड़ा पिता

एजेंसी

प्रयागराज। प्रयागराज में अपने बेटे का शव कंधे पर लेकर जाते हुए एक पिता का वीडियो सामने आया है। 15 किलोमीटर पैदल चलने के बाद सेना के जवानों ने गाड़ी उपलब्ध कराई और घर भेजा। करछना तहसील के रहने वाले बजरंगी का 12 साल का बेटा शुभम करंट लगने से झुलस गया था। शुभम का इलाज स्वरूपरानी नेहरू यानी एसआरएन अस्पताल में चल रहा था। मौत के बाद पिता ने बेटे का शव ले जाने के लिए एंबुलेंस मांगी, लेकिन अस्पताल से घर तक शव ले जाने के लिए उसे एंबुलेंस नहीं मिली।

कमिश्नर बोले- मामले की जांच कराएंगे

इस घटना का वीडियो सामने आने पर कमिश्नर विजय विश्वास पंत ने कहा, इसमें उच्चस्तरीय जांच कराएंगे। जो भी दोषी होगा, उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। शासन स्तर से जो भी पीड़ित परिवार को राहत मिल सकती है, दिलाई जाएगी। मामले में CMO डॉ. नानक सरन ने बताया, डीएम से मुझे पता चला है। यह गंभीर मामला है। पूरे मामले की जांच के लिए हमने टीमें बनाई हैं। जो भी दोषी होगा, उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

सड़क पर चल रहे लोगों ने बनाया वीडियो

इलाज में सारा पैसा खत्म होने की वजह से बजरंगी बेटे का शव कंधे पर रखकर घर ले जाने लगा। इसके बावजूद अस्पताल के कर्मचारियों और डॉक्टरों का दिल नहीं पसीजा। सड़क पर चल रहे लोग वीडियो बनाते रहे, पर मदद करने कोई आगे नहीं आया। बजरंगी शव लेकर 15 किलोमीटर तक पैदल चल चुका था। तभी नैनी के काफी आगे सेना के कुछ जवानों ने उसे देखा, तो गाड़ी उपलब्ध कराई। वीडियो सामने आने पर कमिश्नर ने CMO को जांच करने के निर्देश दिए हैं।

करंट से झुलस गया था शुभम

करछना तहसील के सेमरहा डीह गांव में बजरंगी यादव रहते हैं। बजरंगी का 12 साल का बेटा शुभम गांव में ही मंदिर की तरफ गया था। वहां उसे करंट लग गया। इससे वह बुरी तरह झुलस गया था। मंगलवार रात उसे इलाज के लिए एसआरएन में भर्ती कराया गया। इलाज के दौरान शुभम की मौत हो गई। इसके बाद शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। पोस्टमार्टम होने के बाद बजरंगी अपने बेटे का शव गांव लेकर जाना चाहता था। मगर, उसके पास पैसे नहीं बचे थे। उसने अस्पताल के कर्मचारियों और डॉक्टरों से कहा, बेटे का शव घर ले जाने के लिए कोई गाड़ी या एंबुलेंस दिला दीजिए। बजरंगी ने कुछ एंबुलेंस वालों से खुद बात की, तो सभी किराया मांगने लगे। इसके बाद बजरंगी को कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। बेटे का शव घर ले जाना भी मजबूरी थी। आखिर में उसने शव को कंधे पर रख लिया और पैदल ही गांव की तरफ चल दिया।

कोरोनामुक्त होने वालों की संख्या 4.34 करोड़ से अधिक

नयी दिल्ली। देश में पिछले 24 घंटे में कोरोना संक्रमित 19,823 लोगों के स्वस्थ्य होने के साथ ही कोरोनामुक्त होने वालों की संख्या बढ़कर चार करोड़ 34 लाख तीन हजार 610 हो गयी है।

इस बीच देश में आज सुबह सात बजे तक 204.84 करोड़ टीके लगाये जा चुके हैं। पिछले 24 घंटों में 23,49,651 लोगों का टीकाकरण किया गया।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से बुधवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक 17,135 नये मामलों के साथ संक्रमितों की कुल संख्या 4,40,67,144 हो गयी है। इसी अवधि में 35 और मरीजों की मौत होने से मृतकों का आंकड़ा बढ़कर 5,26,477 हो गया है। सक्रिय मामलों की संख्या अभी 1,37,057 है।

देश में सक्रिय मामलों की दर 0.31 प्रतिशत है, जबकि रिकवरी दर 98.49 और मृत्यु दर 1.19 फीसदी है।

पिछले 24 घंटे में 4,64,919 कोविड परीक्षण किये गये हैं और अब तक कुल 87.63 करोड़ लोगों की जांच की जा चुकी है।

पश्चिम बंगाल में कोरोना सक्रिय मामले 1239 घटकर 12254 रह गये हैं और इससे निजात पाने वालों की संख्या 2061580 हो गयी है। इस महामारी से चार और मरीजों की मौत होने से अभी तक राज्य में 21376 लोगों की मौत हो चुकी है।

ओडिशा में पिछले 24 घंटों में कोरोना सक्रिय मामले 1411 घटकर 5518 रह गये हैं और इससे निजात पाने वालों की संख्या 1300023 हो गयी है। इस महामारी से एक और मरीजों की मौत होने से अभी तक राज्य में 9142 लोगों की मौत हो चुकी है।

महाराष्ट्र में भी कोरोना सक्रिय मामले 225 घटकर 12583 रह गये हैं और इस बीमारी से ठीक होने वालों की संख्या 7889478 हो गयी है। राज्य में इस महामारी से पांच और लोगों की जान जाने से मृतकों का आंकड़ा बढ़कर 148110 हो गया है।

शार्ट न्यूज

केंद्र सरकार ने 348 मोबाइल ऐप को किया बैन, चीन को भेज रहे थे भारतीयों का डाटा

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने बुधवार को बताया कि चीन एवं दूसरे देशों द्वारा विकसित ऐसे 348 मोबाइल ऐप की पहचान की गयी है और उन्हें प्रतिबंधित किया गया है जो यूजर की जानकारी एकत्र कर रहे थे और देश के बाहर स्थित सर्वरों को अनधिकृत तरीके से भेज रहे थे। इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने लोकसभा में रोडमल नागर के प्रश्न के लिखित उत्तर में यह जानकारी दी। सदस्य ने पूछा था कि क्या सरकार ने देश से बाहर सूचना भेजने वाले किसी ऐप की पहचान की है और यदि ऐसे किसी ऐप का पता चला है तो क्या उन्हें प्रतिबंधित किया गया है। जवाब में मंत्री ने बताया कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने ऐसे 348 ऐप की पहचान की है और मंत्रालय के अनुरोध पर इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने इन सभी ऐप्लीकेशन को ब्लॉक कर दिया है। मंत्री ने कहा कि इस तरह के डेटा प्रसारण भारत की संप्रभुता और अखंडता, भारत की रक्षा और राज्य की सुरक्षा का उल्लंघन करते हैं। चंद्रशेखर ने बताया कि इन ऐप को चीन समेत विभिन्न देशों द्वारा विकसित किया गया है।

तीर्थयात्रियों का नया जत्था अमरनाथ रवाना

श्रीनगर। केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के अमरनाथ में स्थित हिम शिवलिंग के दर्शन के लिए बुधवार सुबह एक हजार से अधिक तीर्थयात्रियों का नया जत्था पहलगाम और बालटाल रास्तों से रवाना हुआ। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि अमरनाथ यात्रा 30 जून को शुरू होने के बाद से अब तक 923 तीर्थयात्रियों ने गुफा मंदिर में दर्शन करने वालों की कुल संख्या 2,97,907 हो गई है। मौसम साफ होने के कारण दक्षिण कश्मीर में पारंपरिक नुनवान पहलगाम आधार शिविर और गांदरबल जिले के छोटे बालटाल से श्रद्धालुओं के आज अमरनाथ गुफा तक जाने की अनुमति मिली। डोमेल के माध्यम से बालटाल से होते हुए, पवित्र गुफा के दर्शन के लिए 139 महिलाओं, दो साधु और छह बच्चों सहित 458 तीर्थयात्री पैदल और टट्टू पर रवाना हुए। उन्होंने बताया कि नए जत्थे में से 152 तीर्थयात्रियों को बालटाल से हेलीकॉप्टर द्वारा दर्शन कराने के लिए ले जाया गया। इस दौरान, पहलगाम में पारंपरिक नुनवान आधार शिविर और दक्षिण कश्मीर में चंदनवाड़ी और पंजतरणी के मार्गों पर पांच सौ से अधिक तीर्थयात्रियों को आगे बढ़ने की अनुमति दी गई। कश्मीर की स्वतंत्र वेधशाला ने दोपहर और शाम के बीच गरज के साथ हल्की बौछारें पड़ने की चेतावनी दी है।

श्रीनगर में एफएए आवेदकों का विरोध प्रदर्शन

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर सेवा चयन बोर्ड (जेकेएसएसबी) की ओर से जारी सूची को स्थगित करने के अधिकारियों के फैसले के खिलाफ पिछले तीन सप्ताह से कई चयनित वित्त लेखा सहायक (एफएए) यहां विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। एफएए आवेदक अंतिम चयन सूची जारी करने की मांग कर रहे हैं। एफएए के लिए भर्ती प्रक्रिया नवंबर 2020 से चल रही है। उस महीने जेकेएसएसबी ने 950 से अधिक एफएए आवेदकों के लिए विज्ञापन दिया और 1.50 लाख से अधिक आवेदकों ने इसके लिए आवेदन किया। परीक्षा कई बार स्थगित की गई और आखिरकार इस साल मार्च में आयोजित की गई। प्रशासन ने पदों के लिए 972 उम्मीदवारों को चयन किया। सूची जारी होने के तुरंत बाद, विसंगतियों की खबरें सामने आईं और सूची को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। श्रीनगर में प्रेस एन्क्लेव में एक विरोध प्रदर्शन के दौरान एक नाराज उम्मीदवार ने पूछा, ऐसी अफवाहें हैं कि चयन प्रक्रिया को खत्म कर दिया जाएगा। यदि किसी अधिकारी ने भर्ती प्रक्रिया में गलत किया है तो हमारा क्या कसूर है? एफएए सूची की वजह से हमें क्यों निशाना बनाया जा रहा है? पिछले महीने, उम्मीदवारों के बेरोकटोक विरोध के बीच सरकार ने कहा कि अधिकारियों का एक पैनल एफएए की चयन सूची की जांच कर रहा है।

एसआईए ने सात ठिकानों पर छापेमारी की

श्रीनगर। जम्मू कश्मीर पुलिस की राज्य जांच एजेंसी (एसआईए) ने बुधवार को केन्द्र शासित प्रदेश में आतंकवाद के वित्त पोषण के सिलसिले में सात ठिकानों पर छापेमारी की। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। एसआईए ने बारामूला, कुपवाडा और पुंछ जिलों के विभिन्न ठिकानों में छापेमारी की है। एसआईए का गठन केन्द्र शासित सरकार ने पिछले नवंबर में आतंकवाद से संबंधित मामलों की जांच और अभियोजन के लिए किया था। एसआईए राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) और अन्य केंद्रीय एजेंसियों के साथ समन्वय करने के लिए 'आतंकवाद से संबंधित मामलों की त्वरित और प्रभावी जांच और अभियोजन के लिए आवश्यक उपाय करने' के लिए एक नोडल एजेंसी भी है।

अमरावती उमेश कोल्हे हत्या मामला : एनआईए ने दो को लिया हिरासत में

अमरावती (महाराष्ट्र)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने महाराष्ट्र के अमरावती में केमिस्ट उमेश कोल्हे हत्या मामले में दो लोगों को बुधवार को हिरासत में लिया। सूत्रों ने बताया कि हिरासत में लिये गये दो लोगों में से एक नमूना मस्जिद का मौलाना है और दूसरा इस हत्याकांड के मास्टरमाइंड इरफान शेख का ड्राइवर है। हत्याकांड के बाद इरफान के ड्राइवर ने ही उसे पनाह दी थी। सूत्रों ने बताया कि दोनों को पूछताछ के लिए मुम्बई ले जाया गया है। गौरतलब है कि 54 वर्षीय उमेश की 21 जून की रात करीब 10 बजे दुकान बंद करके घर लौटते समय रास्ते में चाकू भोंककर हत्या कर दी गयी थी। बताया गया कि उमेश ने पैगम्बर मोहम्मद के खिलाफ कथित आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाली भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की पूर्व प्रवक्ता नुपूर शर्मा के समर्थन में कुछ व्हाट्सएप ग्रुपों पर पोस्ट डाली थीं।

अल्मोड़ा के अजय ने साइकिल से लद्दाख के खरदूंगला पास की यात्रा कर बनाया कीर्तिमान

नैनीताल। उत्तराखंड के अल्मोड़ा निवासी अजय सिंह ने 29 दिन में साइकिल से लद्दाख के 5359 मीटर ऊंचे खरदूंगला पास की यात्रा कर कीर्तिमान बनाया है। यात्रा पूरी कर वापस लौटे श्री सिंह ने जिलाधिकारी वंदना और अपर जिलाधिकारी सीएस मर्तोलिया से भेंट की। उन्हें यात्रा से जुड़ी रोचक जानकारी दी और चित्र भेंट किये। उन्होंने बताया कि एक जून को उन्होंने अल्मोड़ा से यात्रा प्रारंभ की। इस बीच वह नैनीताल, काशीपुर, हरिद्वार, देहरादून, हिमाचल, चंडीगढ़ और होशियारपुर होते हुए श्रीनगर और यहां से 3528 मीटर की ऊंचाई पर स्थित जोजिला पास होते हुए खरदुंगला पहुंचे। बेहद दुर्गम और बर्फीली चोटियों के बीच उन्होंने चीन सीमा पर सटे नामिकला पास (3700 मीटर), लाचुंगला पास (5059), नकीला पास (4738) तथा 4890 मीटर की ऊंचाई पर बसे बारालाछला पास की यात्रा भी की। उन्होंने कहा कि अल्मोड़ा जिला प्रशासन के सहयोग से संचालित इस यात्रा के दौरान उन्हें कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा है। संसाधनों की कमी के बावजूद उन्होंने अनवरत यात्रा की। पैंगोग झील और सर्चू के बीच वह बेहद कठिन दौर से गुजरे। यहां एक टैक्सी चालक ने उनकी आर्थिक मदद की।

सिद्धबली स्टोन क्रेशर मामला : हाईकोर्ट ने भूतत्व और खनिकर्म निदेशक को किया तलब

नैनीताल। उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने राजाजी टाइगर रिजर्व (आरटीआर) से सटे सिद्धबली स्टोन क्रेशर के मामले में स्पष्ट जानकारी नहीं दे पाने के प्रकरण में भूतत्व और खनिकर्म विभाग के निदेशक को व्यक्तिगत रूप से अदालत में पेश होने के निर्देश दिये हैं। मुख्य न्यायाधीश विपिन सांघी व न्यायमूर्ति आरसी खुल्बे की युगलपीठ ने बुधवार को कोटद्वार निवासी देवेन्द्र सिंह अधिकारी की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई के बाद ये निर्देश जारी किये। दरअसल युगलपीठ में मानकों के विपरीत ईको सेंसटिव जोन में सिद्धबली स्टोन क्रेशर को लगाये जाने को लेकर सुनवाई चल रही है। आज इसी मामले में अदालत में खनिकर्म विभाग के निदेशक की ओर से जवाब पेश किया गया लेकिन अपुष्ट जानकारी होने पर अदालत ने विभाग के निदेशक को 23 अगस्त को व्यक्तिगत रूप से अदालत में पेश होने का निर्देश दिया।

आजादी का अमृत महोत्सव : 5 से 15 अगस्त तक सभी स्मारकों, संग्रहालयों में फ्री एंट्री

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के तहत संरक्षित सभी स्मारकों में प्रवेश 5 और 15 अगस्त के दौरान नि:शुल्क होगा। यानी देश के संरक्षित सभी स्मारकों में एंट्री के लिए कोई भी फीस नहीं देनी होगी। बता दें कि पूरा देश 75वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के हिस्से के रूप में 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है। इसी को देखते हुए केंद्र सरकार ने ये फैसला किया है। केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री जी किशन रेड्डी ने बुधवार को यह जानकारी दी।

सोशल मीडिया पर घोषणा करते हुए रेड्डी ने एएसआई के एक बयान को साझा किया। इसमें कहा गया है कि उत्सव के हिस्से के रूप में 5 से 15 अगस्त तक किसी भी टिकट वाले केंद्रीय संरक्षित स्मारकों के साथ-साथ पुरातत्व स्थल संग्रहालयों पर कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। रेड्डी ने लिखा कि एएसआई ने 5 और 15 अगस्त से देश भर में अपने सभी संरक्षित स्मारकों/स्थलों पर आगंतुकों/पर्यटकों के लिए प्रवेश नि:शुल्क कर दिया है।

केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के तहत भारत की आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए कई पहल कर रहा है। स्मारकों, संग्रहालयों में फ्री एंट्री भी इसी का एक हिस्सा है। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जे पी नड्डा सहित केंद्र की सत्ताधारी पार्टी के अन्य नेताओं ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट की 'डिस्प्ले' तस्वीर पर मंगलवार को 'तिरंगा' लगाया और लोगों से भी ऐसा करने का आग्रह किया।

जम्मू-कश्मीर में बिटकॉइन से हो रही आतंकी फंडिंग : एसआईए

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर पुलिस की राज्य जांच एजेंसी (एसआईए) ने बुधवार को केन्द्र शासित प्रदेश में आतंकवाद के लिए बिटकॉइन व्यापार के माध्यम से पैसा उपलब्ध कराने के संबंध में सात स्थानों पर छापेमारी की।

पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि जम्मू-कश्मीर के कई स्थानों पर तलाशी ली गई और संदिग्धों के मेंढर, पुंछ, बारामूला, कुपवाड़ा और हंदवाड़ा घरों पर तलाशी ली गई। यह कार्रवाई श्रीनगर के काउंटर इंटेलीजेंस पुलिस स्टेशन में दर्ज एक मामले की जांच के संबंध में की गई।

मामला बिटकॉइन व्यापार के जरिए आतंकवादियों को फंडिंग से जुड़ा है। पुलिस ने कहा कि इसमें पाकिस्तानी मास्टरमाइंड की पहचान की गई है। प्रवक्ता ने कहा कि शुरूआती चरण में जिन विवरणों की जांच की जा रही है, उनमें पाकिस्तान का एक मास्टरमाइंड शामिल है जो पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियों के सक्रिय समर्थन के साथ जम्मू-कश्मीर में बड़े पैमाने पर हिंसा और आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है। उसके बारे में जानकारी को गोपनीय रखा जा रहा है।

प्रवक्ता के अनुसार जिन घरों की तलाशी ली गई उनसे मिले सबूतों से यह पता चला है कि पाकिस्तान से आने वाला पैसा इन लोगों तक पहुंच गया है।

उन्होंने कहा कि कई खातों का इस्तेमाल इस पैसे को जमा करने के लिए किया गया है जो जम्मू-कश्मीर के बाहर हैं।

ट्विटर पर महबूबा की डीपी में तिरंगे के साथ जम्मू-कश्मीर का पुराना झंडा

श्रीनगर। जम्मू -कश्मीर में पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने अपने ट्विटर अकाउंट की डीपी में बुधवार को बदलाव किया जिसमें उनके दिवंगत पिता एवं पूर्व मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नजर आ रहे हैं और उनके सामने तिरंगे के साथ राज्य का पुराना झंडा भी नजर आ रहा है जिसकी मान्यता अब समाप्त हो चुकी है।

पंद्रह अगस्त तक श्री मोदी द्वारा अपने सोशल मीडिया अकांउट्स पर तिरंगे की डीपी लगायी गयी और इसके बाद देशवासियों से भी ऐसा ही करने की अपील की गयी।

प्रधानमंत्री की इस अपील के साथ पीडीपी प्रमुख ने भी अपनी डीपी में बदलाव किया है लेकिन धारा 370 हटाये जाने और राज्य का दर्जा समाप्त करके दो केंद्र शासित प्रदेश बनाये जाने के फैसले के विरोध को भी दर्शाया है।

मुफ्ती ने कहा मैने अपने अकाउंट की डीपी बदल दी है क्योंकि झंडा खुशी और गर्व का प्रतीक है। हमारे राज्य के ध्वज को भारत के झंडे के साथ जोड़ा गया था जिसमें कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। इस जुड़ाव को खत्म करके इसे छीन लिया गया। आप हमसे हमारा झंडा छीन सकते हैं लेकिन उससे जुड़ी सामूहिक चेतना को कभी नहीं मिटा सकते।

गौरतलब है कि पांच अगस्त 2019 को संविधान की धारा 370 को हटाये जाने के फैसले के बाद जम्मू-कश्मीर को मिला विशेष राज्य का दर्जा खत्म कर दिया गया था और इसके बाद से राज्य का ध्वज भी अमान्य हो गया।

तेलंगाना विधायक राजगोपाल रेड्डी ने कांग्रेस से दिया इस्तीफा

हैदराबाद। तेलंगाना से मुनुगोडु विधायक कोमातीरेड्डी राजगोपाल रेड्डी ने मंगलवार शाम कांग्रेस पार्टी और राज्य विधानसभा से इस्तीफा देने की घोषणा की। जगोपाल ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि वह तेलंगाना विधानसभा अध्यक्ष से मिलेंगे और एक या दो दिन में अपना इस्तीफा सौंप देंगे। उन्होंने कहा कि उन्होंने यह फैसला अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों के कल्याण के लिए और तेलंगाना राज्य में एक परिवार के शासन के खिलाफ लिया है। उन्होंने कहा, टीआरएस नेता कहते रहे हैं कि उपचुनाव की स्थिति में ही निर्वाचन क्षेत्र (मुनुगोड़े) का विकास होगा, उन्होंने कहा, मुझे उम्मीद है कि उपचुनाव से विकास होगा और सीएम केसीआर अपना वादा पूरा करेंगे।

20 साल से लापता थी मुंबई की महिला, अब पाकिस्तान में सोशल मीडिया पर दिखी

एजेंसी

मुंबई। एक बार फिर साबित हो गया है कि अगर सही से इस्तेमाल किया जाए तो सोशल मीडिया मानव जाति के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। ताजा मामला मुंबई की एक महिला का है। महिला अपनी मां को पिछले 20 साल से खोज रही थी। लेकिन अब सोशल मीडिया के जरिए उनका पता चला है। उनकी मां पाकिस्तान में देखी गई हैं। मुंबई की रहने वाली यास्मीन शेख बताती हैं कि उनकी मां कुक के तौर पर काम करने दुबई गई थीं लेकिन वह कभी नहीं लौटीं।

यास्मीन शेख ने समाचार एजेंसी एएनआई को बताया, मुझे अपनी मां के बारे में 20 साल बाद पाकिस्तान स्थित सोशल मीडिया अकाउंट से पता चला। उस अकाउंट से एक वीडियो पोस्ट किया गया था जिसमें वो दिखीं। उन्होंने कहा, वह अक्सर 2-4 साल के लिए कतर जाती थीं लेकिन इस बार वह एक एजेंट की मदद से गई थीं और कभी वापस नहीं आई।

यास्मीन ने बताया, हमने उनकी तलाश करने की कोशिश की लेकिन सारी कोशिशें बेकार गईं। हम शिकायत भी दर्ज नहीं करा सके क्योंकि हमारे पास कोई सबूत नहीं था। यास्मीन शेख ने आगे कहा कि उनकी माँ, हमीदा बानो दुबई में एक कुक के रूप में काम करने के लिए गई थीं और फिर कभी अपने परिवार से संपर्क नहीं किया। उन्होंने कहा, जब हम अपनी माँ के ठिकाने के बारे में जानने के लिए एजेंट से मिलने जाते थे, तो वह कहती थी कि मेरी माँ हमसे मिलना या बात नहीं करना चाहती। उसने हमें आश्वासन दिया कि वे ठीक हैं। हालांकि, वह (माँ) अपने में वीडियो में स्पष्ट रूप से कह रही हैं कि एजेंट ने उनसे कहा था कि वह किसी को भी सच्चाई न बताए।

त्रिपुरा ने कर्मचारियों के लिए पांच फीसदी डीए बढ़ाने, 500 नौकरी देने की घोषणा की

अगरतला। त्रिपुरा में डेढ़ साल के अंतराल के बाद मंत्रिपरिषद की एक बैठक में 1.88 लाख से अधिक सरकारी कर्मचारियों, पेंशनभोगियों और उनके परिवार के सदस्यों को पांच प्रतिशत महंगाई भत्ता (डीए) जारी करने की घोषणा की, जिसमें 2956 दैनिक और अनियमित कर्मचारी शामिल हैं। डीए की दर जुलाई से प्रभावी होगी।

राज्य सरकार के कर्मचारियों के लिए महंगाई की भरपाई के लिए पांच प्रतिशत डीए की घोषणा के साथ-साथ केंद्र और राज्य सरकार के कर्मचारियों के बीच डीए भुगतान के अंतर को घटाकर अब 26 प्रतिशत कर दिया गया है। राज्य में भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) नीत सरकार ने चार साल के अंतराल के बाद पहली बार फरवरी, 2021 में अपने कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को तीन प्रतिशत डीए जारी किया था। भाजपा ने सत्ता में आने के साथ ही वादा किया था कि सभी कर्मचारियों को सातवें वेतन आयोग लागू किया जाएगा लेकिन पार्टी अभी तक केवल मूल समानता की ला सकी है।

सूचना मंत्री सुशांत चौधरी ने हालांकि कहा है कि त्रिपुरा सरकार 523.80 करोड़ रुपए के अतिरिक्त भार को सहन करेगी। उन्होंने कहा कि मंत्रिमंडल ने त्रिपुरा लोक सेवा आयोग के माध्यम से त्रिपुरा इंजीनियर्स सेवा के ग्रेड -5 (ए) और ग्रेड -5 (बी) में राज्य लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) में 100 डिग्री स्तर सहित 200 जूनियर इंजीनियरों की भर्ती करने का भी फैसला किया है।

इसके अलावा फार्मासिस्ट (होमियोपैथी) के 22 पदों, 25 पद आयुर्वेदिक फार्मासिस्ट और 39 लेब्रोटरी तकनीशियन के साथ-साथ स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के तहत 100 स्टॉफ नर्सों की भर्ती की जाएगी। राज्य मंत्रिमंडल ने इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग के तहत बहुउद्देशीय पर्यवेक्षकों (पुरुष और महिला) के लिए 90 पदोन्नति पदों के सृजन के प्रस्ताव को भी मंजूरी दे दी है। श्री चौधरी ने कहा कि लेखापरीक्षा निदेशालय में 12 पद एलडीसी और चार सहायक निदेशक (पदोन्नति), छह वरिष्ठ सूचना अधिकारी (प्रमोशनल) और छह रिपोर्टर (प्रत्यक्ष पद) पदों का भी सृजन किया गया है, जिन्हें शीघ्रातिशीघ्र भरा जाएगा।

उदयपुर में नारायण सेवा का 38वां सामूहिक विवाह 28 अगस्त से

उदयपुर। निर्धन एवं दिव्यांगों की सेवा में निरन्तर 37 वर्षों से समर्पित नारायण सेवा संस्थान का 38वां दो दिवसीय नि:शुल्क दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह वैदिक रीति से 28 एवं 29 अगस्त को उदयपुर में आयोजित होगा। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि संस्थान परिवार 37 विवाह समारोह के माध्यम से अब तक 2151 जोड़ों की गृहस्थी बसा चुका है। वे सभी अपनी संतति के साथ खुशहाल जीवनयापन कर रहे हैं। इस विवाह समारोह में भाग लेने वाले दिव्यांग एवं निर्धन युवक-युवतियों के आय-आयु प्रमाण पत्र आदि का वेरीफिकेशन किया जा चुका है। संस्थान वर्ष में दो बार विवाह समारोह आयोजित करता है।

उत्तराखण्ड में भूमाफिया के खिलाफ होगी अब कड़ी कार्रवाई : डीजीपी

देहरादून। उत्तराखण्ड के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) अशोक कुमार ने सरकारी, निजी भूमि तथा भवनों पर अवैध कब्जा करने वाले भू-माफियाओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। कुमार ने कहा ऐसे भूमाफियाओं को चिह्नित कर, उनके विरूद्ध अभियोग पंजीकृत करते हुए गुण्डा एक्ट के अन्तर्गत जिला बदर करने, गैगस्टर एक्ट के अन्तर्गत कार्रवाई करते हुए अवैध रूप से अर्जित की गयी सम्पत्ति का अधिग्रहण करने तथा इनका पिछला इतिहास खोले जाने एवं इनके लाइसेंसी शस्त्रों को भी निरस्त करने हेतु समस्त जनपद प्रभारियों को निर्देशित किया है।

डीजीपी ने मंगलवार को अधीनस्थों को निर्देश दिए कि चिह्नित भू-माफियाओं का थाना, जनपद तथा परिक्षेत्र स्तर पर रजिस्टर (डेटाबेस) तैयार कर उसे अध्यावधिक रखने एवं अन्य जनपदीय प्रभारियों से समन्वय स्थापित कर इनके विरूद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई करते हुए कृत कार्रवाई की मासिक सूचना नियमित रूप से पुलिस मुख्यालय को उपलब्ध कराई जाय।

उन्होंने ऐसे भू-माफियाओं के विरूद्ध निजी सम्पत्ति के सम्बन्ध में, जनता द्वारा की गयी शिकायत पर तत्काल अभियोग पंजीकृत करने तथा सरकारी एवं लावारिस भूमि, नदी, सार्वजनिक सड़क आदि के सम्बन्ध में सम्बन्धित विभाग को सूचित करने के लिये भी निर्देशित किया है। साथ ही जनपदीय पुलिस प्रभारियों को जिला मजिस्ट्रेट से समन्वय स्थापित कर तत्काल प्रथम सूचना दर्ज कराकर विधिक कार्यवाही हेतु भी निर्देशित किया गया है।

हिमाचल के शहरी क्षेत्रों में आशा कार्यकर्ताओं की होगी नियुक्ति

हमीरपुर। हिमाचल प्रदेश सरकार ने शहरी क्षेत्रों में घर-घर जाकर बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों की तरह शहरी क्षेत्रों में भी आशा कार्यकर्ताओं को नियुक्त करने का फैसला लिया है।

प्रमुख सचिव (स्वास्थ्य) सुभाशीष पांडा ने बताया कि आठ सौ आबादी के लिए एक आशा कार्यकर्ता को तैनात किया जाएगा और केंद्र सरकार से इसकी मंजूरी मिल गयी है।

पांडा ने बुधवार को कहा कि विभाग जल्द ही राज्य में 780 से अधिक आशा कार्यकर्ताओं की भर्ती करेगा। मौजूदा समय में राज्य के विभिन्न हिस्सों में जनता के स्वास्थ्य देखभाल के लिए 7,964 आशा कार्यकर्ता तैनात हैं।

उन्होंने बताया कि सभी नई आशा कार्यकर्ता प्रखंड चिकित्सा अधिकारी (बीएमओ) के अधीन काम करेंगी। लोगों को घर-घर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए उन्हें राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम), राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन के तहत नियुक्त किया जाएगा।

पांडा ने कहा कि एक आशा कार्यकर्ता को राज्य सरकार से 4,700 रुपये और केंद्र सरकार से 2,000 रुपये मासिक पारिश्रमिक मिलता है।

ठाकुर ने राइड विद प्राइड की टैक्सियों को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

शिमला। हिमाचल के मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने बुधवार को राइड विद प्राइड टैक्सियों के चालकों को गाड़ी की चाबी सौंपी और हरी झंडी दिखाकर इन टैक्सियों को रवाना किया।

इस अवसर पर आज मुख्यमंत्री ने ओक ओवर शिमला से हिमाचल पथ परिवहन निगम को राइड विद प्राइड योजना के अंतर्गत स्मार्ट सिटी शिमला द्वारा प्रदान की गई 18 नई ईनोवा टैक्सियां शहर के लोगों को समर्पित करते हुए कहा कि शिमला प्रदेश की राजधानी होने के साथ-साथ एक प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय पर्यटक स्थल भी है।

शिमला स्मार्ट सिटी ने शहर का रूप-रंग बदला है और इस योजना के अन्तर्गत यहां आने वाले पर्यटकों के साथ ही स्थानीय लोगों की सुविधा के लिए अनेक कदम उठाए गए हैं। यह आज से ही शहर में 18 गाड़ियां से जनता के लिए अपनी सेवाएं देना प्रारम्भ कर देंगी।

उन्होंने कहा कि राइड विद प्राइड टैक्सी सेवा के माध्यम से बुजुर्गों, महिलाओं, शारीरिक तौर पर अक्षम लोगों सहित स्थानीय निवासियों तथा यहां आने वाले पर्यटकों को परिवहन की और बेहतर सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

उन्होंने कहा कि हिमाचल पथ परिवहन निगम द्वारा राइड विद प्राइड टैक्सियों का पहले से ही संचालन किया जा रहा है और यह सेवा महिलाओं, वरिष्ठ नागरिकों तथा रोगियों के लिए अत्यन्त उपयोगी साबित हो रही है।

उन्होंने कहा कि शिमला शहर में प्रतिदिन तीन हजार से अधिक यात्री राइड विद प्राइड टैक्सी सेवा उपयोग अपने दैनिक कार्यों के लिए कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि स्मार्ट सिटी शिमला द्वारा हिमाचल पथ परिवहन निगम को 18 ईनोवा टैक्सियों के अतिरिक्त 12 टैम्पो ट्रैवलर तथा 20 इलैक्ट्रिक बसें भी स्वीकृत की गई हैं, जो आगामी सितम्बर माह में जनता को समर्पित कर दी जायेंगी।

स्मार्ट सिटी शिमला के अंतर्गत टैम्पो ट्रैवलर, इलैक्ट्रिक बसें, ढली बस स्टैंड, चार्जिंग स्टेशन तारादेवी और डीजिटल पेमेंट सिस्टम के लिए कुल 46 करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकृत की गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल पथ परिवहन निगम के बेड़े में हाल ही में 205 नई बसें शामिल की गई हैं। वर्तमान में निगम के बेड़े में कुल बसों की संख्या 3100 तक पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2022-23 में 397 और नई बसों की खरीद के लिए स्वीकृति प्रदान कर दी गई है।

राखी व्यवसायी की हत्या का खुलासा, तीन आरोपी गिरफ्तार

अलवर। राजस्थान में अलवर पुलिस ने राखी व्यवसाई घनश्याम सैनी की हत्या के मामले का खुलासा करते हुए आज तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया। 10 करोड़ की फिरौती मांग के लिए अपहरण कर हत्या की थी।

पुलिस जांच में ये बात सामने आई की मृतक घनश्याम सैनी ने कुख्यात चीकू गैंग को आर्थिक सहायता की थी तभी से कुछ बदमाश घनश्याम से रंजिश रखते थे। रंजिश और रंगदारी के लिए इस वारदात को अंजाम दिया था। पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गोतम ने आज यहां बताया कि इस घटना के बाद सआईटी का गठन किया गया। कई पुलिस टीम गठित की गई। टीम द्वारा अलवर शहर में घटना के सबंध में विभि-?न स्थानों के सीसीटीवी फुटेज खंगाले एवं तकनीकी आधार एंव आसूचना के माध्यम से गहनता से वारदात में सम्मिलित बदमाशों की तलाश की गई तो घटना के समय मृतक घनश्याम सैनी को अपने घर से निकलकर कटिंग करवाने के लिए स्कूटी पर सवार होकर जाते समय एक मोटरसाईकिल सवार व्यक्ति एंव उसके पीछे एक स्कार्पियो गाडी द्वारा पीछा करना पाया गया।

उक्त स्कार्पियो वाहन में ही मृतक घनश्याम सैनी का अपहरण कर ले जाना पाया गया।

जिस पर अनुसन्धान को गहनतापूर्वक आगे बढाते हुए सर्वप्रथम अभियुक्त बलजीत उर्फ बल्ली जाति गुर्जर उम्र 25 साल निवासी टिहली थाना तिजारा अलवर को ग्राम लूलवाडी (पलवल हरियाणा) को गिरफ्तार कर पुछताछ की गई।

ततपश्चात अभियुक्त अशोक उर्फ झून्नू मीणा उम्र 28 साल निवासी मुण्डावर जिला अलवर को ग्राम वीरनवास के पास से गिरफ्तार किया गया।

कोविड टीकाकरण में 204.84 करोड़ से अधिक टीके लगे

नयी दिल्ली। देश भर में राष्ट्रीय कोविड टीकाकरण अभियान के अंतर्गत 204.84 करोड़ से अधिक कोविड टीके लगाए गए हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने बुधवार को यहां बताया कि आज सुबह सात बजे तक दो अरब चार करोड़ 84 लाख 30 हजार 732 टीके दिये जा चुके हैं। मंत्रालय ने बताया कि पिछले 24 घंटों में कोविड संक्रमण के 17 हजार 135 नये मरीज सामने आयें हैं। इनके साथ ही देश में कोरोना रोगियों की संख्या एक लाख 37 हजार 57 हो गयी है।यह संक्रमित मामलों का 0.31 प्रतिशत है। जबकि दैनिक संक्रमण दर 3.69 प्रतिशत हो गयी है।

केंद्रीय मंत्रिमंडल विस्तार में जदयू को मिल सकती है जगह

एजेंसी

पटना। केंद्रीय मंत्रिमंडल के संभवत: इसी माह होने जा रहे विस्तार में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के घटक जनता दल यूनाइटेड (जदयू) से किसी चेहरे को जगह मिल सकती है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) संयुक्त मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी कि 30 और 31 जुलाई को पटना में हुई बैठक के बाद राजग के घटक दलों की ओर से राजनीतिक गलियारे में यह चर्चा तेज हो गई है कि 21 अगस्त के बाद केंद्रीय मंत्रिमंडल का विस्तार किया जा सकता है। फिलहाल स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम और अमृत महोत्सव को देखते हुए मंत्रिमंडल विस्तार संभव नहीं है लेकिन इसमें अधिक विलंब भी नहीं होगा।

केंद्रीय मंत्रिमंडल में एक बार फिर से जदयू से किसी चेहरे को जगह मिल सकती है।

जदयू के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष आरसीपी सिंह ने पिछले दिनों केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया था। केंद्रीय मंत्रिमंडल से श्री सिंह के इस्तीफे के बाद फिलहाल केंद्र सरकार में जदयू कोटे का कोई प्रतिनिधित्व नहीं रह गया है। ऐसे में जदयू से किसी चेहरे के मंत्रिमंडल में शामिल किए जाने की पूरी संभावना है।

शार्ट न्यूज

एनएचपीसी ने कोविड-19 बूस्टर डोज और वैक्सीन के लिए विशेष टीकाकरण शिविर आयोजित किया

फरीदाबाद। एनएचपीसी द्वारा 03 अगस्त 2022 को एनएचपीसी निगम मुख्यालय, फरीदाबाद में 15 साल और उससे अधिक के लिए (पहली और दूसरी खुराक) और वयस्कों के लिए बूस्टर खुराक हेतु नि:शुल्क कोविड टीकाकरण शिविर (कोवैक्सिन और कोविशील्ड) का आयोजन किया। टीकाकरण शिविर के दौरान एनएचपीसी के कुल 420 कार्मिकों/पूर्व कार्मिकों/संविदा कर्मियों और उनके परिवार के सदस्यों ने वैक्सीन की दूसरी/बूस्टर खुराक प्राप्त की जिसमें कोवैक्सिन की 40 और कोविशील्ड की 380 टीके शामिल थी। शिविर का आयोजन ईएसआई डिस्पेंसरी नं 01, सैक्टर 27 बी फरीदाबाद के सहयोग से किया गया।

कैब चालक ने युवती से अश्लील हरकत की

नोएडा। कैब चालक ने सेक्टर-45 के पास से महिला मीडियाकर्मी से अश्लील हरकत की। आरोपी ने पीड़िता को जबरन कार में बैठाने का प्रयास किया। विरोध करने पर उसने गाली-गलौज कर जान से मारने की धमकी दी। युवती ने आरोपी के खिलाफ सेक्टर-39 थाने में केस दर्ज कराया है। पुलिस को दी शिकायत में युवती ने बताया कि वह सदरपुर कॉलोनी में रहती है। वह एक मीडिया संस्थान में काम करती है। वह सोमवार शाम को सेक्टर-45 के पास खड़ी थी। इसी बीच एक कैब चालक उनके पास आया। आरोप है कि चालक ने उसको कार में बैठाने का प्रयास किया। इस दौरान आरोपी ने उनके साथ अश्लील हरकत भी की। जब उन्होंने आरोपी की करतूत का विरोध किया तो उसने जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद आरोपी मौके से भाग गया। इसके बाद युवती ने उसके खिलाफ पुलिस को शिकायत दी गई। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

होटल में युवती से दुष्कर्म करने वाला गिरफ्तार

नोएडा। पुलिस ने नौकरी लगवाने का झांसा देकर युवती को होटल में बुलाकर दुष्कर्म करने वाले आरोपी को सोमवार रात को सेक्टर-18 अट्टा पीर से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने मंगलवार को आरोपी को अदालत में पेश कर जेल भेज दिया। युवती ने पुलिस को शिकायत दी थी कि एक युवक ने 30 जुलाई को उसे नौकरी दिलाने के लिए संपर्क किया था। युवक ने अपना नाम शहबाज बताया। उसने उसे 28 जुलाई को सेक्टर-27 स्थित होटल में बुलाया और उसके साथ दुष्कर्म किया। विरोध करने पर आरोपी ने उसके साथ गाली गलौच कर मारपीट की। उसने घटना की जानकारी अपनी बहन को दी। बहन ने आरोपी से बात की तो उसने उनके साथ भी बदसलूकी की। पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपी को सेक्टर-18 अट्टा पीर से गिरफ्तार कर लिया। उसकी पहचान दिल्ली के कृष्णा नगर निवासी शहबाज के रूप में हुई। पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया।

कारोबारी विवाद में कैंटर लूट की झूठी सूचना दी

नोएडा। कासना औद्योगिक क्षेत्र में स्क्रैप से भरे कैंटर लूट के मामले में पैसे के लेनदेन का विवाद सामने आया है। पुलिस का दावा है कि स्क्रैप कारोबारी ने लूट की झूठी सूचना दी थी। पुलिस ने स्क्रैप कारोबारी से पूछताछ की तो उसने सारा सच उगल दिया। इसके बाद दोनों पक्षों के बीच आपस में समझौता हो गया। दादरी के रहने वाले स्क्रैप कारोबारी आरिफ ने सोमवार की शाम कासना कोतवाली पुलिस को सूचना दी थी कि उसका स्क्रैप से भरा कैंटर लूट लिया गया है। पुलिस ने स्क्रैप कारोबारी से पूछताछ की तो घटना के कुछ देर बाद सारा सच सामने आ गया। पुलिस पूछताछ में स्क्रैप कारोबारी ने बताया कि स्क्रैप का सामान खरीदने वाले अमन से उसका पैसे के लेनदेन का विवाद चल रहा था। अमन ने पैसे देने का दबाव बनाया था। इसके चलते आरिफ ने पैसा देने से बचने और अमन को फंसाने के लिए लूट की झूठी सूचना पुलिस को दी थी। पुलिस की पूछताछ में सच सामने आने के बाद आरिफ ने अमन के खिलाफ कार्रवाई करने से इनकार कर दिया। कोतवाली प्रभारी संतोष कुमार शुक्ला का कहना है कि दोनों पक्षों को थाने पर बुलाकर पूछताछ की गई जिसके बाद घटना का सच सामने आया और दोनों पक्षों ने समझौता कर लिया।

निमार्णाधीन भवन से गिरकर मजदूर की मौत

नोएडा। सेक्टर-80 स्थित कंपनी के निमार्णाधीन भवन से सोमवार रात मजदूर नीचे गिर गया। हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गया। परिजनों ने उसे अस्पताल में भर्ती कराया। डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। सेक्टर-80 में एक कंपनी के भवन का निर्माण कार्य चल रहा है। यहां पर 36 वर्षीय श्रीकांत शर्मा काम करता था। वह रात करीब आठ बजे भवन से नीचे गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे गंभीर हालत में सेक्टर-50 के अस्पताल में भर्ती कराया गया। यहां पर डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। श्रीकांत मूलरूप से आजमगढ़ का रहने वाला था। पुलिस ने उसके शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। साथ ही, उसके परिजनों को घटना के बारे में जानकारी दे दी है। पुलिस का कहना है कि परिजनों की शिकायत के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

राजकीय बाल सम्प्रेक्षण गृह गौतमबुद्धनगर में रह रहे किशोर आपचारियों को जागरुक करने हेतु विधिक साक्षरता शिविर का किया गया आयोजन

ग्रेटर नोएडा। उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ द्वारा प्राप्त निर्देशों के अनुपालन में तथा अवनीश सक्सेना अध्यक्ष/जनपद न्यायाधीश जिला विधिक सेवा प्राधिकरण गौतबुद्धनगर के दिशा-निर्देशन व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पैनल पर नाम मित्र पैनल अधिवक्ता की उपस्थिति में विधिक साक्षरता व जागरुकता शिविर का आयोजन बुधवार को प्रात 10 बजे से राजकीय बाल सम्प्रेक्षण गृह गौतमबुद्धनगर में आयोजित किया गया।कार्यक्रम की उपस्थित दीपा जैन पैनल अधिवक्ता 11कविता नागर पैनल अधिवक्ता राधा त्यागी पैनल अधिवक्ता तथा शारदा चतुर्वेदी समाज सेविका, धर्मेंद्र मौर्य क्राफ्ट टीचर के साथ बाल संप्रेक्षण गृह में रह रहे समस्त बच्चे उपस्थित हुए। उक्त कालक्रम मे संविधान में बालकों के बाबत दिये गये मूल अधिकार, बालको के हितार्थ बनायी गयी विधि जूवेनाइल जस्टिस एक्ट आदि के प्रावधानों पर विस्तार से चर्चा किया गया। इसके अतिरिक्त नि:शुल्क कानूनी सहायता, चिकित्सा पाने का मूल अधिकार आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया।

जेवर पुलिस ने अपनी पत्नी को तीन तलाक देने वाला वांछित अभियुक्त को किया गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा। थाना जेवर पुलिस ने अपनी पत्नी को तीन तलाक देने वाला वांछित अभियुक्त रमीस राजा पुत्र कासिम निवासी घोरवाला छोटी मस्जिद के पास बडकल फरीदाबाद हरियाणा को आर आर साईट नंगला सरीफ खाँ चौराहे के पास से बुधवार को गिरफ्तार कर लिया।गौरतलब है कि 5 जुलाई 2022 को वादी तैय्यूब पुत्र सलेम निवासी नगला शरीफ खां आरआर साईट थाना जेवर गौतमबुद्धनगर ने थाना जेवर पर लिखित तहरीर दी कि अभियुक्त रमीस राजा पुत्र कासिम(पति) व उसके परिजनों द्वारा वादी की पुत्री को दहेज के लिए प्रताड़ित कर मांग पूरी ना होने पर मारपीट करते हैं और गाली गलौच करते हैं। अभियुक्त रमीस राजा द्वारा गैर कानूनी रूप से तीन बार तलाक बोलकर तलाक दे देने के सम्बन्ध में थाना जेवर पर मुकदमा अपराध संख्या 247/2022 धारा 498ए,323,504 भादवि व 3/4 दहेज अधिनियम व 3/4 मुस्लिम महिलाओं का अधिकार संरक्षण अधिनियम के तहत पंजीकृत किया गया था।गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध पुलिस ने आवश्यक वैधानिक कार्यवाही कर न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया है।

शताब्दी वर्ष में डीयू शुरू करेगा सीईएस नामक अनूठी योजना

अन्य संस्थानों के विद्यार्थी भी कर सकेंगे डीयू के पाठ्यक्रमों में अध्ययन

प्रफुल्ल राय/गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय अपने शताब्दी वर्ष में कंपीटेंस इनहेंसमेंट स्कीम (सीईएस) नामक एक अनूठी योजना शुरू करने जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा शैक्षणिक वर्ष 2022-23 से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी) को लागू करने के साथ ही इसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कंपीटेंस इनहेंसमेंट स्कीम (सीईएस) का शुभारंभ भी किया जाएगा। विश्वविद्यालय की अकैडमैक कौंसिल की मीटिंग में इस योजना को मंजूरी मिल चुकी है। योजना का शुभारंभ शताब्दी समारोह के भाग के रूप में अगले वर्ष (2023) की शुरुआत में किया जाएगा।

गौरतलब है कि कंपीटेंस इनहेंसमेंट स्कीम एक ऐसी योजना है जो विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों को दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाए जा रहे किसी भी विषय में अपने ज्ञान और समझ को बढ़ाने के लिए डीयू में पढ़ने का अवसर देती है। यह योजना अन्य विश्वविद्यालयों/संस्थानों के विद्यार्थियों को भी डीयू के कुछ पाठ्यक्रमों में अध्ययन करने का अवसर प्रदान करेगी। यह योजना स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर चलाए जा रहे पाठ्यक्रमों के लिए खुली है।

योजना के लक्ष्य

डीयू कुलपति प्रो. योगेश सिंह के अनुसार इस योजना का उद्देश्य नई जानकारी के साथ दक्षता में वृद्धि करना है।

उनका कहना है कि इस योजना के तहत उद्यमी नए कौशल/प्रौद्योगिकी अर्जित करके अपने व्यवसाय में वृद्धि कर सकेंगे। इसके तहत प्रबंधन पाठ्यक्रमों के अध्ययन से निम्न/मध्य स्तर के प्रबंधन कर्मियों के प्रबंधकीय कौशल में सुधार होगा। जो लोग सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों या तत्कालीन समय के दौरान किसी कमी के कारण पहले अपेक्षित योग्यता प्राप्त नहीं कर सके, वह इस योजना से उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के सपनों को पूरा कर सकेंगे।

कुलपति के अनुसार इस योजना के तहत वरिष्ठ नागरिक अपनी योग्यता/ज्ञान/कौशल में वृद्धि करके महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाने में सक्षम होंगे।

पारंपरिक कारीगर, शिल्पकार अथवा श्रमिक इस योजना के तहत नवीनतम तकनीक/मशीन का उपयोग करना सीखकर अपने कौशल में सुधार करेंगे और पारंपरिक प्रणाली के बजाए आधुनिक उपकरणों का उपयोग करने में खुद को उन्नत करेंगे। युवा और ऊर्जावान विद्यार्थियों के साथ सीखने से उनमें आत्मविश्वास, उत्साह और प्रयोजन की भावना पैदा होगी। इस योजना से विश्वविद्यालय के संसाधनों का लोगों के लाभ के लिए व्यापक रूप से प्रभावी उपयोग होगा।

इस योजना का उद्देश्य अन्य विश्वविद्यालयों/संस्थानों में दाखिल विद्यार्थियों को डीयू के किसी पाठ्यक्रम में नामांकन किए बिना ही एक सेमेस्टर में एक से दो पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने का अवसर देकर विद्यार्थियों की गतिशीलता में वृद्धि करना भी है।

उन्होंने कहा कि व्यवसाय/कार्यस्थल की लगातार उभरती जरूरतों का सामना करने के लिए बड़े पैमाने पर समाज को सक्षम बनाना भी इस योजना के उद्देश्यों में शामिल है।

ये होंगे पात्रता के मापदंड

डीयू कुलपति प्रो. योगेश सिंह के अनुसार ऐसा कोई भी व्यक्ति जो किसी मौजूदा पाठ्यक्रम के लिए निर्दिष्ट न्यूनतम पात्रता मापदंड और अनिवार्य शर्तें, यदि कोई हो, को पूरा करता है, उस पाठ्यक्रम के लिए पंजीकरण कर सकता है। हालांकि प्रवेश सीटों की उपलब्धता के अनुरूप और मेरिट के आधार पर ही होगा। इस योजना के लिए उपलब्ध पाठ्यक्रम में सीटों की संख्या उस पाठ्यक्रम की कक्षा की कुल संख्या का अधिकतम 10 प्रतिशत तक होगी। पाठ्यक्रम में इन 10 प्रतिशत सीटों का प्रावधान

केजरीवाल अपनी नाकामी को छुपाने का नया-नया बहाना ढूंढते रहते हैं : आदेश गुप्ता

आनंद राय/गौरवशाली भारत

● डीटीसी बसों की खरीद और मरम्मत में किए भ्रष्टाचार को छुपाने के लिए केजरीवाल जनता के अंदर भ्रम पैदा कर रहे हैं : आदेश गुप्ता

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री आदेश गुप्ता ने कहा कि बसों में आई कमी को लेकर केजरीवाल सरकार के पास कोई जवाब नहीं है तो अब नया तरीका अपना रही है कि दिल्ली की जनता का सुझाव लेंगे कि दिल्ली में कितनी बसों की जरुरत है। आखिर कब तक केजरीवाल अपनी नाकामियों का ठीकरा दूसरों के सर फोड़ते रहेंगे। जब दिल्ली सरकार की आरटीआई ही बता रही है कि पिछले सात सालों में बसों की संख्या 6600 से घटकर 3670 हो गई है तो फिर सुझाव की जगह पहले बसों में कमियों को पूरा कीजिए। दिल्ली की जनता भी केजरीवाल सरकार द्वारा की गई नौटंकी को अब पूरी तरह से समझ चुकी है। आदेश गुप्ता ने कहा कि सत्ता में आने से पहले केजरीवाल जिन लोगों से सुझाव लेकर यह कहते रहे कि दिल्ली में 11000 बसों की जरुरत है, आखिर उस पर आज तक काम क्यों नहीं हुआ। क्या वे सिर्फ मुख्यमंत्री की कुर्सी पाने तक ही कोरी बयानबाजी थी। उन्होंने कहा कि दिल्ली में बसों की कमी के कारण प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने फेम 2 योजना के तहत दिल्ली के प्रदूषण को कम करने के लिए 150 इलेक्ट्रिक बसों का तोहफा दिया जबकि 150 और बसें देनी बाकी है। लेकिन केजरीवाल प्रतिदिन एक नई स्कीम लाते हैं लेकिन उस पर धरातल पर काम करने की जगह बड़े-बड़े होर्डिंग्स लगवा देते हैं। जब भी केजरीवाल पर किसी मुद्दे को लेकर सवाल उठाया जाता है तो वे सिर्फ मीटिंग करते हैं और सुझाव मांगने की नौटंकी करने लगते हैं।

आदेश गुप्ता ने कहा कि पिछले आठ सालों से दिल्ली की जनता ने सिर्फ यही देखा है कि हर बार केजरीवाल एक नया ड्रामा करते हैं और उस ड्रामें को पूरा करने की जगह सिर्फ उसपर प्रचार करते हैं। आज दिल्ली की डीटीसी बसों की खरीद और मरम्मत में जिस तरह से घोटाले और भ्रष्टाचार को अंजाम दिया गया है, वह दिल्ली की जनता समझ चुकी है। दिल्ली में ऐसी कोई बस नहीं जो अपनी मियाद पूरी न कर चुकी हो, फिर भी उन्हें दिल्ली की सड़कों पर चलाया जा रहा है क्योंकि उसकी मरम्मत के नाम पर करोड़ों रुपये का भ्रष्टाचार किया गया है। उन्होंने कहा कि दिल्ली की बसों में महिला सुरक्षा के लिए मार्शल की बातें करते थे लेकिन आज वह भी नदारद है, सीसीटीवी कैमरे बंद पड़े हैं, चलती बसें धू-धू कर जल उठती है, ये सभी बताती है कि केजरीवाल सरकार ने दिल्ली की परिवहन व्यवस्था को पूरी तरह से जर्जर बना डाला है।

टेलीग्राम एप से चीनी मांझा बेचने वाला गिरफ्तार, गोदाम से मिले 1400 बंडल

नई दिल्ली। मध्य जिला स्पेशल स्टाफ ने लाल कुआं इलाके में छापा मारकर प्रतिबंधित चीनी मांझा बेचने वाले शख्स को गिरफ्तार किया है। आरोपी मोहम्मद अफजाल के कब्जे से करीब 14 सौ बंडल मांझा बरामद किया गया है। आरोपी ने बताया कि वह टेलीग्राम एप बने चैनल के माध्यम से मांझा खरीदने वालों से संपर्क करता था। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि हाल में चीनी मांझों से हो रही दुर्घटनाओं को देखते हुए स्पेशल स्टाफ प्रभारी महेश भार्गव की टीम प्रतिबंधित मांझों की बिक्री को रोकने के लिए गठित की गई थी। टीम के सदस्य एएसआई योगेंद्र को सूचना मिली थी कि अफजाल लाल कुआं में चीनी मांझा बेचता था। इसके बाद टीम ने सोमवार को छापा मारकर पहले 20 बंडल बरामद किया और फिर निशानदेही पर और मांझा बरामद किया। आरोपी ने बताया कि वह मुर्तजा नाम के शख्स से मांझा खरीदता था, जिसकी पुलिस अब तलाश कर रही है।

बिधूड़ी ने की डीडीए उपाध्यक्ष से मुलाकात

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने डीडीए के उपाध्यक्ष से मुलाकात करके चार बड़े मुद्दों पर चर्चा की। डीडीए उपाध्यक्ष ने इन सभी मुद्दों पर गौर करने का आश्वासन दिया है। बिधूड़ी ने कहा कि अगर इन चार मुद्दों को सुलझा लिया जाता है तो दिल्ली का नियोजित विकास हो सकेगा और राजधानी के लगभग सभी वर्गों को इसका लाभ मिलेगा।

बिधूड़ी ने बताया कि डीडीए उपाध्यक्ष श्री मनीष गुप्ता से मुलाकात के दौरान उनसे अनुरोध किया गया कि दिल्ली में लैंड पूलिंग पॉलिसी और ग्रीन डेवेलपमेंट एरिया (जीडीए) पॉलिसी शीघ्र लागू की जाए। लैंड पूलिंग पॉलिसी से दिल्ली में मकानों की कमी दूर करने में मदद मिलेगी और साथ ही अवैध रूप से बनने वाली कॉलोनियों पर रोक लग सकेगी। ग्रीन डेवेलपमेंट एरिया पॉलिसी लागू होने से खासतौर पर दिल्ली के किसानों को और देहात के लोगों को बड़ा फायदा मिल सकेगा।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि दिल्ली की अनधिकृत कॉलोनियों का ले आउट प्लान नहीं बना है जिसकी वजह से इन कॉलोनियों के लोगों को नक्शा पास कराकर मकान बनाने की सुविधा नहीं मिल पा रही। इससे ये सभी कॉलोनियों की स्थिति नारकीय बनी हुई है। इससे सरकार को राजस्व के रूप में बड़ी आय भी हो सकती है। इसके अलावा उन दुकानों को डिसील करने की भी मांग की गई जो कमर्शियल प्लॉटों पर बनी हुई हैं। जब ये दुकानें कमर्शियल प्लॉट्स पर ही हैं तो फिर इनसे कनवर्जन चार्ज लेना न्यायसंगत नहीं है।

बिधूड़ी ने बताया कि डीडीए उपाध्यक्ष श्री मनीष गुप्ता ने सभी मांगों को न्यायोचित माना है और उन पर शीघ्र ही फैसला करने का आश्वासन दिया है।

पेयजल संकट के विरोध में दिल्ली जल बोर्ड के कार्यालय में दस्तक दी

नई दिल्ली। किराड़ी विधानसभा क्षेत्र के गांव मुबारकपुर डबास में पिछले तीन माह से पैदा पेयजल संकट के विरोध में ग्रामीणों ने दिल्ली जल बोर्ड के अधिकारियों का दरवाजा खटखटाया। इस समस्या को दूर कराने के लिए चौगामा विकास समिति के महासचिव विजेंद्र सिंह डबास के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल शुक्रवार को दिल्ली जल बोर्ड के एम-नौ के अधिशासी अभियंता से मिला। इस दौरान उनको पेयजल संकट के संबंध में ज्ञापन दिया। इस मौके पर विजेंद्र सिंह डबास व ग्रामीणों ने गांव में पैदा हुए पेयजल संकट के संबंध में उनके साथ विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि गांव में इस तरह कभी भी पेयजल संकट नहीं रहा था। ग्रामीणों को 96 घंटे के अंतराल पर केवल एक घंटा ही पानी नहीं मिलता। इस कारण गांव में पेयजल के लिए त्राहि-त्राहि मची हुई है, ग्रामीण बहुत परेशान है, दरअसल उनको कराला एवं अन्य दूरदराज स्थित जगहों से पीने का पानी लाना पड़ता है।

विजेंद्र सिंह डबास ने उनसे आग्रह करने के साथ-साथ चेतावनी दी कि ग्रामीणों को इस समस्या से जल्द से जल्द निजात दिलाई जाए, अन्यथा ग्रामवासी दिल्ली जल बोर्ड के खिलाफ आंदोलन शुरू करेंगे।

इस दौरान अधिशासी अभियंता ने आश्वासन दिया कि वह अपने स्तर के साथ-साथ उच्च अधिकारियों से मिलकर इस समस्या के समाधान कराने का प्रयास करेंगे। प्रतिनिधिमंडल में गांव के वरिष्ठ नागरिक मांगेराम डबास, आनंद प्रकाश डबास, जय भगवान डबास आदि शामिल थे।

सांसद रमेश बिधूड़ी ने निकाली लाल किले से विजय चौक तक तिरंगा यात्रा

विवेक राय/गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली सांसद श्री रमेश बिधूड़ी, आजादी के अमृत महोत्सव में संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आयोजित मोटरसाइकिल तिरंगा रैली में दक्षिणी दिल्ली लोक सभा क्षेत्र से 175 मोटरसाइकिलों के साथ सम्मिलित हुए। इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान में लाल किले से विजय चैक तक तिरंगा यात्रा को माननीय उपराष्ट्रपति श्री वैंकय्या नायडू जी द्वारा हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आव्हान पर भारत की आजादी की 75वीं वर्ष गाँठ पर 'हर घर तिरंगा' अभियान राष्ट्रप्रेम की भावना को समस्त नागरिकों में जगाने के उद्देश्य को लेकर चलाया जाएगा जिसके तहत 13 से 15 अगस्त के बीच हर घर तिरंगा फहराया जाएगा। इस कड़ी में सांसद रमेश बिधूड़ी ने बताया कि दक्षिणी दिल्ली संसदीय क्षेत्र में हर घर तिरंगा लगाने के 1,75000 झण्डों के संकल्प के साथ दक्षिणी दिल्ली भाजपा कार्यकर्ता अपने पूर्ण उत्साह के साथ तैयारियों में जुट गए हैं। देश के माननीय प्रधानमंत्री जी अपने दृढ़ निश्चय के साथ भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने की ओर अग्रसर हैं जिसमें देश के हर नागरिक की भागीदारी का होना अतिआवश्यक है।

डॉक्टर, नर्सों से ठगी करने वाले फर्जी कॉल सेंटर का भंडाफोड़

एजेंसी

तीन महिला समेत आठ गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली के शाहदरा जिले की साइबर थाना पुलिस ने नोएडा सेक्टर-10 में छापेमारी कर एक फर्जी कॉल सेंटर का भंडाफोड़ किया। पुलिस ने दो कॉल सेंटर मालिक समेत आठ को गिरफ्तार किया है, जिसमें तीन महिलाएं शामिल है। आरोपी डॉक्टर और नर्सों को नामी अस्पतालों में नौकरी दिलवाने का झांसा देकर ठगी की वारदात को अंजाम दे रहे थे।

पुलिस के अनुसार, पिछले कुछ दिनों में आरोपियों ने 100 से अधिक लोगों से करीब 30 लाख रुपये से अधिक की ठगी की है। शाहदरा के डीसीपी आर.सत्य सुंदरम ने बताया कि सूरजमल विहार में रहने वाली दंत चिकित्सक डॉक्टर आयुषी डागा ने शाहदरा जिले के साइबर थाने में ठगी की शिकायत दी थी। उन्होंने बताया कि पिछले दिन पहले उसके मोबाइल पर अनजान नंबर से फोन आया। उसने अपना नाम कुणाल त्रिपाठी बताया और खुद को नौकरी दिलाने वाली एक कंपनी का कर्मचारी बताया।

उसने एक नामी अस्पताल में दांतों के डॉक्टर का पद खाली होने की बात कही और उस अस्पताल में नौकरी दिलाने का झांसा दिया। उसने कहा कि आवेदन करने के लिए प्रक्रिया से गुजरना होगा। आयुषी उसके झांसे में आ गई और 3500 रुपये रजिस्ट्रेशन के लिए भेज दिए। इसके बाद उसने कई बार में 99 हजार रुपये जमा कर लिए। बाद में उन्हें पता चला कि उनके साथ ठगी हुई है। इसके बाद मामले की शिकायत दी। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू की।

डीसीपी ने बताया कि आरोपियों के बैंक खाते की जानकारी ली गई। इस दौरान पता चला कि तीन अलग-अलग खातों में रुपये ट्रांसफर किए गए हैं। तीनों खाते फर्जी कागजात के आधार पर खुले हुए थे। इन खातों से रुपये नोएडा सेक्टर-11 और सेक्टर-44 के अलग-अलग एटीएम से निकाले गए थे। पुलिस ने कॉल करने वाले नंबरों के सीडीआर की जांच की तो पता चला कि कॉल नोएडा सेक्टर-10 से की जा रही थी। पुलिस ने लोकल इंटेलिजेंस की मदद से छानबीन की तो पता चला कि सेक्टर-10 में जॉब दिलवाने का कॉल सेंटर चलाया जा रहा है। मंगलवार को पुलिस की टीम ने कॉल सेंटर पर छापेमारी कर आठों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

फर्जी तरीके से बैनामा तैयार करने वाले गिरोह का भांडाफोड करते हुए एक महिला सहित तीन अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा। थाना जेवर पुलिस ने फर्जी दस्तावेज तैयार कर जमीन का फर्जी तरीके से बैनामा तैयार करने वाले गिरोह का भांडाफोड करते हुए एक महिला सहित तीन अभियुक्तों प्रहलाद पुत्र तोता राम निवासी ग्राम नीमका थाना जेवर गौतमबुद्धनगर, अतर सिंह पुत्र दीवान सिंह निवासी ग्राम सिकोही थाना अहार जिला बुलन्दशहर, महिला अभियुक्ता पिंकी पत्नी राजबहादुर निवासी छपरौला थाना बादलपुर गौतमबुद्धनगर को थाना क्षेत्र के खुर्जा अण्डरपास से गिरफ्तार कर लिया।पकड़े गए अभियुक्तों के कब्जे से पुलिस ने फर्जी आधार कार्ड, पैन कार्ड और वादिया वीरवती के खेत की खतौनी की छायाप्रति बरामद की गई है।अभियुक्त अतर सिंह पूर्व में हत्या के अभियोग में जिला कारागार गाजियाबाद में निरूद्ध था। तभी उसकी मुलाकात अभियुक्त अमित उर्फ शोभा उर्फ जेपी पुत्र फतेहराम निवासी नीमका थाना जेवर गौतमबुद्धनगर से हुई थी। दोनों में दोस्ती हो गयी व जेल से बाहर आकर ये धोखाधड़ी जैसे कृत्यो में संलिप्त हो गये।

पुलिस ने मोबाइल चोर गैंग के तीन सदस्यों को किया गिरफ्तार

नोयडा। थाना सेक्टर-58 पुलिस ने मोबाइल चोर गैंग के तीन सदस्यों ब्रजेश मिश्रा पुत्र महेश्वर दयाल मिश्रा निवासी सरस्वती विहार खोड़ा कॉलोनी थाना खोड़ा जिला गाजियाबाद, रितिक पुत्र राजेश निवासी साहिल पब्लिक स्कूल के पास वंदना एन्कलेव खोड़ा कॉलोनी थाना खोड़ा जिला गाजियाबाद, विवेक पुत्र देवेन्द्र कुमार निवासी साहिल पब्लिक स्कूल के पास वंदना एन्कलेव खोड़ा कॉलोनी थाना खोड़ा जिला गाजियाबाद को थाना क्षेत्र के शिप्रा कट सेक्टर-62 नोएडा से गिरफ्तार कर लिया।पकड़े गए अभियुक्तों के कब्जे से पुलिस ने चोरी की एक मोटरसाइकिल हीरो होण्डा स्पलेण्डर नंबर डीएल13एसजी-2163 और चोरी के तीन मोबाइल फोन बरामद किए है। अभियुक्त शातिर किस्म के अपराधी हैं। इनके द्वारा चोरी की मोटरसाइकिल पर सवार होकर भीड़भाड़ वाले स्थानों/पार्कों से घुमने आये लोगो से मोबाइल चोरी किये जाते है।

डीयू छात्रा से मोबाइल लूटकर भाग रहा बदमाश पकड़ा

ट्रांस हिंडन। वसुंधरा में सोमवार रात डीयू छात्रा से मोबाइल लूटकर भाग रहे बदमाश को जनता ने पकड़ लिया। आरोपी मोबाइल लूटकर तेजी से भाग रहा था, लेकिन सामने स्पीड ब्रेकर होने से उसकी स्कूटी का संतुलन बिगड़ गया और वह गिर गया। इसके बाद जनता ने उसे दबोच लिया। आरोपी की धुनाई कर पुलिस को सौंप दिया गया। वसुंधरा सेक्टर-10 में रहने वाली वंदना महतो डीयू में स्नातक अंतिम वर्ष की छात्रा हैं। वंदना महतो ने बताया कि वह पास ही बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाती है।

ड्राइवर की लापरवाही ने 40 बच्चों की जान डाली जोखिम में, जल्दी निकलने के चक्कर में तोड़ा रेलवे बैरियर, ड्राइवर गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा। एक स्कूल बस ड्राइवर की लापरवाही ने 40 बच्चों की जान जोखिम में डाल दी। ट्रेन कुछ दूरी पर थी और कर्मचारी फाटक बंद कर रहा था, लेकिन जल्दी निकलने के चक्कर में चालक ने लापरवाही से बस दौड़ा दी गनीमत रही कि बच्चों की जान बच गई और रेलवे फाटका बैरियर टूटकर बस के पिछले हिस्से पर गिर गया। जीआरपी ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर कैलाशपुर निवासी चालक आयाराम को गिरफ्तार कर बस को कब्जे में ले लिया है।

सीसीटीवी फुटेज में साफ देखा जा सकता है पहले एक मोटरसाइकिल सवार गुजरता है उसके बाद सिगलनमैंन ट्रैन आने की सूचना पर वाहनो को रोकने वाला बैरियर गिराने लगता है. लेकिन जल्दी निकलने के चक्कर में चालक ने लापरवाही से बस दौड़ा दी जिससे गिरता हुआ बैरियर बस के पिछले हिस्से में फंस कर टूट कर गिर जाता है, बस ड्राइवर कुछ पल के किये रुकता है फिर तेजी से बस को लेकर आग जाता है रेलवे फाटका बैरियर टूटकर बस के पिछले हिस्से पर गिरने बच्चों की जान बच गई. घटना के समय हुई ट्रैन कुछ दूरी पर थी.

यह घटना दिल्ली-हावड़ा रेल मार्ग पर कैलाशपुर गांव के रेलवे गेट पर हुई. स्कूल बस एमसी गोपीचंद पब्लिक स्कूल की और करीब चालीस बच्चों बस मे सवार थे. गनीमत रही कि बस रेलवे लाइन पर नहीं अटकी, नहीं तो बच्चों की जान भी जा सकती थी।

संपादकीय

8 साल में 5 गुना बढ़े ईडी के एक्शन

ईडी का गठन 1 मई 1956 को हुआ था। लेकिन उस समय इसका नाम एनफोर्समेंट यूनिट था। यह विशेष जांच एजेंसी वित्त मंत्रालय की पहल पर बनाई गई थी। ईडी बनाने का फैसला देश में मनी लॉन्ड्रिंग, वित्तीय धोखाधड़ी समेत किसी भी तरह के वित्तीय घोटाले को रोकने के लिए लिया गया है।

2013 में आई नीरज पांडे की बेहतरीन फिल्म 'स्पेशल 26' में रेड मारने गए सीबीआई इंस्पेक्टर वसीम खान का रोल निभा रहे मनोज बाजपेयी कहते हैं, 'हम सीबीआई से हैंज असली वाले।'' असली वाले' बताने का कारण यह था कि अक्षय कुमार की अगुवाई वाला एक दूसरा ग्रुप सीबीआई से होने का दावा करके अमीर लोगों के यहां रेड कर रहा था और उनकी संपत्ति लेकर गायब हो जा रहा था। एक जमाना था जब लोग सीबीआई का नाम सुनते ही डर जाते थे। वक्त बदला और इन दिनों लोगों को दंबग फिल्म के चर्चित डॉयलाग थप्पड़ से डर नहीं लगता की माफिक प्यार से नहीं लेकिन ईडी से जरूर डर लगने लगा है। इन दिनों अखबारों-टीवी देखते वक्त आप अक्सर सुनते-पढ़ते होंगे ईडी का छापा, ईडी की कार्रवाई। नेता से लेकर अफसर तक और कारोबारियों से लेकर उद्योगपति तक अब सीबीआई से ज्यादा ईडी से डरने लगे हैं। मानों किसी से पूछों कि और क्या चल रहा है तो वो फॉग की बजाए कह दे कि ईडी का खौफ चल रहा है। ईडी से जुड़े ताजा मामलों की फेहरिस्त इन दिनों काफी लंबी है। चाहे ममता के पूर्व मंत्री पार्थ चटर्जी के घर से नोटों का पहाड़ मिलने की बात हो या सोनिया-राहुल से पूछताछ व नेशनल हेराल्ड के दफ्तरों पर छापेमारी। संजय राउत की गिरफ्तारी भी ईडी की कार्रवाईयों की सूची में एक और नाम है। ईडी के एक्शन से पहली बार एक साल के भीतर तीन राज्यों के चार प्रभावशाली मंत्रियों को जेल जाना पड़ा है। इनमें महाराष्ट्र के तत्कालीन कैबिनेट मंत्री अनिल देशमुख और नवाब मलिक शामिल हैं। दिल्ली सरकार में स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन को मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में ईडी ने 30 मई को गिरफ्तार किया था। ऐसे में आपको बताते हैं कि ये ईडी आखिर है क्या भला जो सभी इससे इतना थर्राए रहते हैं।

हाल ही में ममता सरकार से हटाए गए मंत्री पार्थ चटर्जी को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने भ्रष्टाचार के आरोप में गिरफ्तार किया है। पार्थ की करीबी अर्पित मुखर्जी के घर से करोड़ों रुपये और घर से सोना बरामद होने के बाद अर्पिता मुखर्जी को भी ईडी की हिरासत में ले लिया गया था। इसके अलावा नेशनल हेराल्ड मामले में ईडी लगातार कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और उनके बेटे राहुल गांधी से पूछताछ कर रही है। शिवसेना नेता संजय राउत को भी ईडी ने भूमि भ्रष्टाचार मामले में गिरफ्तार किया है।

प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी एक विशेष वित्तीय जांच एजेंसी है। ये वित्त मंत्रालय के राजस्व विभाग का हिस्सा है। आसान शब्दों में कहें तो जहां पैसों से संबंधित गड़बड़ होती है वहां प्रवर्तन निदेशालय दखल देता है। किसे ने अगर फर्जी तरीके से या जुगाड़ लगाकर पैसा इधर से उधर किया है। काले पैसों को सफेद बनाया है, विदेशी पैसों से जुड़ा कोई कांड किया है तो वो ईडी के रडार पर आ जाता है।

ईडी मुख्त: दो राजकोषिय कानूनों को लागू कराने का काम करती है। इनके दुरुपयोग पर नजर रखती है। इनमें पहला है- विदेशी मुद्रा प्रबंधन 1999 यानी एफईएमए (फेमा) और दूसरा है प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट 2002 (पीएमएलए)। धन शोधन निवारण अधिनियम को 2002 में अधिनियमित किया गया था और इसे 2005 में लागू किया गया। इस कानून का मुख्य उद्देश्य काले धन को सफेद में बदलने की प्रक्रिया (मनी लॉन्ड्रिंग) से लड़ना है। मनी लॉन्ड्रिंग को रोकना, अवैध गतिविधियों और आर्थिक अपराधों में काले धन के उपयोग को रोकना, मनी लॉन्ड्रिंग में शामिल या उससे प्राप्त संपत्ति को जब्त करना और मनी लॉन्ड्रिंग के जुड़े अन्य प्रकार के संबंधित अपराधों को रोकने का प्रयास करना।

पीएमएलए के तहत 2014-15 में 178 मामले दर्ज थे, जो साल 2021-22 में बड़ कर 1180 हो गए। इस तरह 2014 से अब तक ईडी के दर्ज मामलों में पांच गुना का उछाल आया है।

आतंकवाद के खिलाफ अमेरिकी लड़ाई से दुनिया को क्या सीखना चाहिए?

नीरज कुमार दुबे

अमेरिका से पूरी दुनिया को यह भी सीखना चाहिए कि मानवता के दुश्मनों और आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता और उनको बचाने के लिए आधी रात को कोर्ट नहीं खुलवाना चाहिए और ना ही उनको मृत्युदंड सुनाये जाने का विरोध करके अपनी सियासत चमकानी चाहिए।

अल-कायदा सरगना अयमान अल-ज़वाहिरी को मौत के घाट उतार कर अमेरिका ने 9/11 हमले के पीड़ितों को पूरा न्याय दिला दिया है। देखा जाये तो जवाहिरी की मौत समूचे विश्व के लिए राहत भरी खबर है क्योंकि वह जिस तरह अपने संगठन को मजबूत कर रहा था उससे कई देशों के लिए चुनौतियां बढ़ गयी थीं। जवाहिरी का मारा जाना भारत के लिए तो खासतौर पर महत्व रखता है क्योंकि उसने हाल के कुछ वर्षों में भारत को केंद्र में रखते हुए वीडियो संदेशों के माध्यम से जिहादी गतिविधियों के लिए युवकों को उकसा कर देश की मुश्किलें बढ़ाई थीं। 9/11 हमलों की साजिश मिलकर रचने वाले अल-ज़वाहिरी और ओसामा बिन-लादेन का खात्मा यह भी दर्शाता है कि अमेरिका अपने देश पर हमला करने वालों को कभी बख्शता नहीं है। लादेन को यूएस नेवी सील्स ने दो मई 2011 को पाकिस्तान में एक अभियान के दौरान मार गिराया था और अब उसके 11 साल बाद जवाहिरी भी मारा गया। 9/11 के हमलों में शामिल रहे लादेन और जवाहिरी के अन्य सहयोगियों को अमेरिका पहले ही ठिकाने लगा चुका है। जवाहिरी को मार गिराने वाले अमेरिका से यह बात पूरी दुनिया को सीखनी चाहिए कि वह अपने नागरिकों पर हमलों की बात को कभी भूलता नहीं है और उसका बदला लेकर रहता है। 9/11 हमले को भले दो दशक से ज्यादा का समय हो गया हो लेकिन अमेरिकी सरकार के लिए उसके जख्म हमेशा ताजा रहे और भले ओसामा और जवाहिरी को मार गिराने के वर्षों लंबे अभियान के दौरान उसके अरबों-खरबों डॉलर खर्च हो गये मगर उसने इस बात की परवाह किये बिना आतंक के आकाओं का खात्मा करके ही चैन लिया। अमेरिका से पूरी दुनिया को यह भी सीखना चाहिए कि मानवता के दुश्मनों और आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता और उनको बचाने के लिए आधी रात को कोर्ट नहीं खुलवाना चाहिए और ना ही उनको मृत्युदंड सुनाये जाने का विरोध करके अपनी सियासत चमकानी चाहिए। ऐसे लोगों के मानवाधिकार के पक्ष में दलीलें देना भी बंद होना चाहिए। दुनिया को समझना होगा कि यह जो आतंकवादी वीडियो संदेश जारी कर जिहाद के लिए उकसाते हैं, दरअसल यह खुद बड़े डरपोक होते हैं। ये दूसरों को मौत के बाद जन्नत के सपने दिखाते हैं लेकिन खुद मौत से इन्हें कितना डर लगता है इसका अंदाजा इसी से लग जाता है कि जवाहिरी तालिबान के शीर्ष सरगना सिराजुद्दीन हक्कानी के घर में छिपा बैठा था। तो दूसरी ओर दुनिया का नंबर एक आतंकवादी रहा अल कायदा सरगना ओसामा बिन लादेन कितना बहादुर था यह दुनिया ने तब देख ही लिया था जब वह डर के मारे एक गुफा से दूसरी गुफा में छिपता फिर रहा था। दूसरी ओर, आतंकवाद के खिलाफ अब तक की सबसे लंबी लड़ाई में मिली यह सबसे बड़ी सफलता घरेलू मोर्चे पर अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के लिए भी राहत लेकर आई है। अफगानिस्तान से अमेरिकी सैनिकों की वापसी पर बाइडेन को काफी आलोचना झेलनी पड़ी थी और कहा गया था कि 9/11 के पीड़ितों को पूरा न्याय दिलाये बिना दो दशकों से जारी लड़ाई को बीच में छोड़ दिया गया। लेकिन अफगानिस्तान छोड़ने के 11 महीने बाद अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने आतंकवाद रोधी अभियान में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। जिस तरह अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने यह अभियान चलाया और उसे सफलतापूर्वक अंजाम तक पहुँचाया, निश्चित ही इससे बाइडेन प्रशासन की दक्षता साबित हुई है।

मौत का पर्याय बनते जीवन रक्षक अस्पताल

निर्मल रानी

हमारे देश में इन दिनों स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ %अमृत महोत्सव % के रूप में मनाने की ज़ोरदार तैय्यारी चल रही है। हर घर तिरंगा - घर घर तिरंगा फहराने का राष्ट्रव्यापी अभियान पूरे देश में सरकारी स्तर पर भी चलाया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गत 31 जुलाई को अपने लोकप्रिय कार्यक्रम मन की बात के 91वें एपिसोड में देश के लोगों से तिरंगा फहराने के राष्ट्रव्यापी अभियान का हिस्सा बनने की न केवल अपील की बल्कि इसके अनेक उपाय भी सुझाये। प्रधानमंत्री ने देशवासियों को यह भी बताया कि वे किस तरह फ़ेसबुक, व्हाट्सअप, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे अपने एकाउंट्स हैंडल्स पर अपनी डीपी बदलकर तिरंगा झण्डा को डी पी के तौर पर लगाकर तिरंगा फहराने के राष्ट्रव्यापी अभियान का हिस्सा बनें।

उन्होंने यहाँ तक कहा कि देशवासी 13 अगस्त से 15 तक घर घर तिरंगा अभियान को एक जन आंदोलन का रूप दें। देश में फैली भयंकर मंहगाई, बेरोज़गारी, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, अनिश्चितता के वर्तमान दौर में जबकि अमेरिकी डॉलर के मुक़ाबले भारतीय रुपया रिकार्ड स्तर तक गिर चुका है। प्रतिभाशाली भारतीय युवा स्वतंत्र भारत के इतिहास में रिकॉर्ड स्तर पर देश से पलायन कर अपने सुरक्षित भविष्य की तलाश में विदेशों में जा रहे हों,तमाम विदेशी उद्योग धंधे भारत से अपना कारोबार समेट कर दूसरे देशों का रुख़ कर रहे हों, इन हालात में अनेक सत्ता विरोधी दल व इनके नेता तिरंगा फहराने के राष्ट्रव्यापी अभियान पर सवाल भी खड़ा कर रहे हैं।

इधर 31 जुलाई को प्रधानमंत्री की देशवासियों से तिरंगा झंडा फहराने की अपील मन की बात में प्रसारित होती है उधर इसके अगले ही दिन मध्य प्रदेश के जबलपुर में दमोह नाका शिवनगर स्थित न्यू लाइफ़ मल्टी स्पेशलिटी नामक एक निजी अस्पताल में भीषण आगज़नी की घटना दरपेश आती है। ख़बरों के अनुसार इस हादसे में अब तक 10 लोगों के आग से झुलसकर मरने तथा लगभग आधा दर्जन लोगों के गंभीर रूप से घायल होने की सूचना है। समाचार यह भी है कि अपनी जान गंवाने वाले लोगों में ज़्यादातर अस्पताल स्टाफ़ के वह लोग हैं जो मरीज़ों के लिये किसी भगवान से कम नहीं समझे जाते।

और यह वही वर्ग भी है जिसके सम्मान में कोरोना काल में प्रधानमंत्री ने पूरे अस्पतालों में बैण्ड बजवाकर इनके साहस,मेहनत व तपस्या को सराहा था। अस्पताल में ज़िंदा जलने वाला यह उसी स्टाफ़ का हिस्सा था जिनपर सेना के हैलीकॉप्टर्स ने पुष्प वर्षा की थी। जबलपुर के इस न्यू लाइफ़ मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल में हुए अग्निकांड के विषय में भी वही बताया गया जो प्राय: अधिकांश आग लगने की घटनाओं के लिये बताया जाता है।

यानी यह आग भी बिजली के शॉर्ट सर्किट की वजह से लगी थी जो कि ग्राउंड फ़्लोर से शुरू होकर तीसरी मंज़िल तक बहुत तेज़ी से फैल गई। इसके बाद राज्य के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आगज़नी की इस घटना पर दुख जताया और जान गंवाने वाले लोगों के परिवार को 5-5 लाख रुपये की मदद दिये जाने तथा गंभीर रूप से घायल लोगों को 50-50 हज़ार रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की। साथ ही घायलों के संपूर्ण इलाज का ख़र्च राज्य सरकार द्वारा किये जाने का भी वादा किया। पहले भी इस तरह की घटनाओं के बाद राज्य सरकारें इसी तरह की घोषणायें कर अग्निकांड प्रभावित परिवारों के आंसू पोछने का प्रयास करती रही हैं।

परन्तु स्वतंत्रता के इस अमृत महोत्सव काल में जब हर घर तिरंगा फहराने की अपील न केवल सरकारी बल्कि प्रधानमंत्री स्तर पर की जा रही हो क्या यह पूछा जाना प्रासंगिक नहीं है कि देश की जिस जनता को सब्ज़ बाग़ दिखाकर यह जताया जा रहा हो कि सब कुछ चंगा है ,हम विश्व की पांच बड़ी महाशक्तियों को पछाड़ते हुए एक बार फिर विश्वगुरु बनने जा रहे हैं, आख़िर उस देश में अस्पतालों में अपना इलाज कराने व वहां से स्वस्थ होकर वापस आने की आस रखने वाले लोगों की अगर ज़िंदा जलकर मौत होने लगे, तो देश के लिये इससे दुखद व भयानक और क्या हो सकता है? जिस अस्पताल स्टाफ़ पर फूल बरसाये जायें,जिनकी शान में थाली,ताली,चम्मच व कड़छी खड़काई जायें और उसी स्टाफ़ की जान अपने ही अस्पतालों में असुरक्षित हो इससे बड़ा दुर्भाग्य व त्रासदी और क्या हो सकती है ?

कभी गुजरात के भरूच में कोविड अस्पताल में आग लग जाने से आईसीयू में भर्ती क़रीब 20 कोरोना मरीज़ों की जलने से मौत हो जाती है और मुख्यमंत्री मुआवज़े का एलान कर अपना फ़र्ज़ पूरा कर बैठते हैं। 26 अप्रैल 2021 को गुजरात के सूरत मे आयुष अस्पताल की पांचवीं मंज़िल पर स्थित आइसीयू में शॉर्ट-सर्किट के चलते आग लगती है तो कभी महाराष्ट्र के डा. ज़ाकिर हुसैन अस्पताल में ऑक्सीजन टैंक लीक होता है । इसे रोकने के लिए मरीज़ों को ऑक्सीजन की आपूर्ति कुछ समय के लिए रोक दी गई। इसके कारण वेंटिलेटर के सहारे चल रहे 24 कोरोना मरीज़ों की जानें चली गयीं । इनमें 11 महिलाएं और इतने ही पुरुष शामिल थे। इसी तरह 10 जनवरी 2021 को महाराष्ट्र के भंडारा ज़िले के जनरल अस्पताल की स्पेशल न्यू बॉर्न केयर यूनिट में लगी आग में 10 नवजात शिशु की मौत हो गयी ।

यह आग भी शार्ट-सर्किट के कारण लगी बताई गयी थी। इसके अलावा 26 मार्च को मुंबई के भांडुप उपनगर स्थित ड्रीम्स माल में चौथी मंज़िल पर चल रहे कोविड विशेष अस्पताल में आग लगने से 10 रोगियों को जान गंवानी पड़ी। इसी तरह 17 अप्रैल 202 को छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में एक कोरोना सेंटर में अचानक लग गयी थी। इस घटना में चार लोगों की मौत हो गई। ऐसी अनेकानेक घटनायें हमारे देश में आये दिन होती ही रहती हैं। परन्तु अफ़सोस कि हम इस अमृत महोत्सव काल तक भी जनता को शत प्रतिशत सुरक्षित अस्पताल देने की स्थिति में नहीं पहुँच सके।

सरकार की प्राथमिकता तो यह होनी चाहिये कि जिन देशवासियों से वह घर घर झण्डा फहराने की अपील कर स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव में भागीदारी करने के लिये आह्वान कर रही है उन्हीं देशवासियों को शत प्रतिशत सुरक्षा प्रदान कर उन्हें यह विश्वास भी दिलाये कि स्वतंत्रता के इस अमृत महोत्सव काल में देशवासी तथा देश के सभी अस्पताल पूर्णत: सुरक्षित हैं।

सुरक्षा के जितने भी मानक हों उन्हें देश के प्रत्येक अस्पतालों में सुनिश्चित किया जाये अन्यथा अस्पतालों के लाइसेंस रद्द किये जायें। ज़ाहिर है यदि किसी भी अस्पताल में आगज़नी की घटना में किसी मरीज़ या अस्पताल स्टाफ़ की जलकर मौत होती है तो उसका ज़िम्मेदार मरीज़ या स्टाफ़ तो हरगिज़ नहीं ? फिर आख़िर व्यवस्था की लापरवाही या अनदेखी अथवा कामचोरी का ख़मियाज़ा यह लोग क्यों भुगतें ? अस्पतालों को तो जीवन रक्षक बनना चाहिये न कि मौत का पर्याय ?

मज़हबी पोंगापंथी से ऊपर उठकर फरमानी नाज़ के भजनों को सुनें और सराहें मौलाना

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

देवबंद के उलेमाओं के वाग्बाणों के बाद कोई आश्चर्य नहीं कि अब नाज़ के भजनों, गजलों और गीतों को सुनने वालों की संख्या करोड़ों तक पहुंच जाए। हमारे पोंगापंथी मौलानाओं की फरमानी नाज़ पर यह बड़ी कृपा बरसेगी। मैंने भी फरमानी नाज़ को सुनने की कोशिश की। उसके शिव भजन में तो मुझे कोई खास रस नहीं आया लेकिन उसकी गजलें सुनकर मैं दंग रह गया। अपने चूल्हे पर गोबर लीपती हुई नाज़ जो गजल गा रही है, बिना तबला और बांसुरी के, वह भी सीधे दिल में उतर रही थी। देवबंद के एक मौलाना और मुफ्ती ने फरमानी नाज़ के शिव भजन गाने पर घोर आपत्ति जताई है। उनका कहना है कि यदि आप मुसलमान हैं तो आपको किसी अन्य मजहब के देवी-देवताओं के भजन बिल्कुल नहीं गाने चाहिए। इस्लाम इसकी इज़ाजत कतई नहीं देता।

उनके इस एतराज़ का फरमानी और उसकी माँ, दोनों ने साफ़-साफ़ लफ्जों में जवाब दिया है। उनका कहना है कि फरमानी नाज़ पक्की मुसलमान है और वह नियमित नमाज़ भी अदा करती है। लेकिन उसकी शादी के दो साल बाद ही उसका तलाक हो गया। उसे मुंबई के 'इंडियन आइडोल' में गोल्डन टिकिट भी मिल गया था लेकिन उसे छोड़कर उसे फिर मुजफ्फरनगर आना पड़ा, क्योंकि उसके दो साल के बेटे के गले का गंभीर आपरेशन जरूरी था। उसके लिए वह पैसा कहां से लाती ? सो, उसने गाना शुरू कर दिया। उसके पास कोई कमी नहीं रही। उसकी माँ फातिमा बेगम ने कहा कि उसके गायन ने ही बच्चे के जान बचाई!

उन दोनों का कहना है कि संगीत का कोई मजहब नहीं होता। उनकी यह बात गलत होती तो मोहम्मद रफी, ए.आर. रहमान, जावेद अख्तर, लता मंगेशकर, शकील बदायूंनी जैसे दर्जनों बड़े नाम मैं गिना सकता हूं कि जिन्होंने एक-दूसरे के धार्मिक भजनों और गीतों को गाया और लिखा है। मुसलमान और ईसाई अभिनेताओं ने हिंदू देवी-देवताओं के रोल किए हैं और हिंदू अभिनेताओं ने मुस्लिम बादशाहों के रोल अदा किए हैं। क्या देवबंद के मौलानाओं को पता नहीं है कि रसखान ने कृष्णभक्ति में जो अद्भुत काव्य लिखा है, क्या वैसा किसी हिंदू कवि ने भी लिखा है? अगर फरमानी नाज़ के खिलाफ आप फतवा जारी करेंगे तो आपको रहीम, रसखान, कबीर, मलिक मुहम्मद जायसी जैसे भारतीय महाकवियों के खिलाफ भी फतवा जारी करना पड़ेगा। मुझे तो कई बार पाकिस्तान के कई प्रसिद्ध गायकों के घर पर हिंदू भजन सुनकर चकित हो जाना पड़ा है। अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत के अनेक शास्त्रीय संगीत महारथियों को मैंने काबुल, कराची, लाहौर और दिल्ली में पक्के शास्त्रीय गायन में हिंदू देवी-देवताओं का उल्लेख करते हुए सुना है। मीर, गालिब, इकबाल जैसे महान शायरों की कविताओं में मजहबी पोंगापंथियों की जो मज़ाक उड़ाई गई है, उसे मैं यहां दोहराना नहीं चाहता हूं। देवबंद के मुल्ला-मौलवियों से मेरा अनुरोध है कि वे थोड़ी उदारता अपनाएं ताकि भारतीय इस्लाम दुनिया भर के इस्लाम से बेहतर बनकर उभरे और जिनकी नकल आप करना चाह रहे हैं, वे आपकी नकल करने लगें।

तलाक पर इंसाफ अभी अधूरा है, क्या है तलाक ए हसन?

अभिनय आकाश

सुप्रीम कोर्ट में तलाक-ए-हसन का मसला पहुंचा है। सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करके तलाक-ए-हसन और किसी भी अन्य तरीके से तलाक की प्रक्रिया को खत्म करने की अपील की गई है। इस तरह के तलाक को गैरकानूनी और अवैध घोषित करने की मांग की गई है।

इस्लाम में तलाक देने के तीन तरीकों का जिक्र है-

मोदी सरकार ने सत्ता में दूसरी बार कदम रखते ही मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक से निजात दिलाने का कदम उठाया। मोदी सरकार ने तीन तलाक पर पाबंदी के लिए मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण विधेयक-2019 को पारित किया। तीन तलाक के मुद्दे के खिलाफ एक बड़ा अभियान चलाया गया और आखिरकार तीन तलाक को पूरी तरह से प्रतिबंधित भी कर दिया गया। जिसके बाद समझा गया कि मुस्लिम महिलाएं कम से कम इस अत्याचार से तो अब मुक्त हो जाएंगी। क्योंकि इस कानून में कोई व्यक्ति अगर तीन बार तलाक बोलकर अपनी पत्नी को तलाक दे देता है। तो फिर उसकी जगह जेल में है। नए कानून में तीन साल तक की सजा और जुर्माने का प्रावधान है। लेकिन इस कानून को अधूरा इंसाफ बताते हुए मुस्लिम महिलाएं अदालतों में पहुंच गई हैं। लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट में तलाक-ए-हसन का मसला पहुंचा है। सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करके तलाक-ए-हसन और किसी भी अन्य तरीके से तलाक की प्रक्रिया को खत्म करने की अपील की गई है। इस तरह के तलाक को गैरकानूनी और अवैध घोषित करने की मांग की गई है।

तलाक-ए-बिद्दत : इसमें शौहर, बीवी को एक ही बार में तीन बार बोलकर या लिखकर तलाक दे सकता है। तीन तलाक के बाद, शादी तुरंत टूट जाती है। इसी पर हाल ही में कानून बनाकर प्रतिबंध भी लगाया गया है, इसे ही ट्रिपल तलाक भी कहते हैं। इसमें पति किसी भी जगह, किसी भी समय फोन पर या लिख कर पत्नी को तलाक दे सकता है। इसके बाद शादी तुरंत खत्म हो जाती है। इसमें एक बार तीन दफा तलाक कहने के बाद वापस नहीं लिया जा सकता है। इस प्रक्रिया में भी तलाकशुदा पति-पत्नी दोबारा शादी कर सकते हैं। हालांकि उसके लिए हलाला की प्रक्रिया को अपनाया जाता है।

तलाक-ए-एहसन : इसमें शौहर बीवी को तब तलाक दे सकता है, जब उसका मासिक धर्म न चल रहा हो. इसे तीन महीने में वापस भी लिया जा सकता है, जिसे इद्दत कहा जाता है। इसमें तीन बार तलाक बोला जाना जरूरी नहीं है। इसमें एक बार तलाक कहने के बाद पति-पत्नी एक ही छत के नीचे 3 महीने तक रहते हैं। तीन महीने में अगर दोनों में सहमति बन जाती है तो तलाक नहीं होता है। इसे अन्य रूप में कहे तो पति चाहे तो तीन महीने के भीतर तलाक वापस ले सकता है। सहमति नहीं होने की स्थिति में महिला का तलाक हो जाता है। हालांकि पति-पत्नी चाहे तो दोबारा निकाह कर सकते हैं। लेकिन यहां भी पत्नी को हलाला जैसी प्रक्रिया से होकर गुजरना पड़ता है।

तलाक-ए-हसन मुस्लिम समुदाय से जुड़ी तलाक की एक प्रक्रिया है, जिसमें पति अपनी पत्नी को तीन महीने में तीन बार एक-एक कर तलाक बोलता है और उसके बाद तलाक मान लिया जाता है। तीसरी बार तलाक कहने से पहले तक शादी पूरी तरह से लागू रहती है। लेकिन तीसरी बार तलाक कहते ही शादी तुरंत खत्म हो जाती है। इस तलाक के बाद भी पति-पत्नी दोबारा निकाह कर सकते हैं। हालांकि पत्नी को हलाला से गुजरना पड़ता है। हलाला से आशय महिला को दूसरे शख्स से शादी के बाद उससे तलाक लेना पड़ता है।

तलाक-ए-हसन की क्या है प्रक्रिया

जानकारी के मुताबिक तलाक-ए-हसन तब प्रयोग की जानी चाहिए जब बीवी को मासिक धर्म नहीं हो रहा हो। वहीं तीनों तलाक के ऐलान में प्रत्येक के बीच एक महीने का अंतराल होना चाहिए। इस तरह से दोनों के बीच परहेज की अवधि इन तीन लगातार तलाक के बीच की समय सीमा में होनी चाहिए। संयम, या 'इद्दत' 90 दिनों यानी तीन मासिक चक्र या तीन चंद्र महीनों के लिए निर्धारित होता है। इस संयम की अवधि के दौरान, अगर शौहर या बीवी संबंध बनाते हैं या साथ रहना शुरू कर देते हैं, तो तलाक को रद्द कर दिया जाता है। इस प्रकार के तलाक को स्थापित करने का मजहबी मकसद तात्कालिक तलाक की बुराई को रोकना था। हालांकि लगातार इसके साइड इफेक्ट भी सामने आ रहे हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने तलाक-ए-हसन पर लिया था संज्ञान

इससे पहले, जस्टिस ए एस बोपन्ना और विक्रम नाथ की सुप्रीम कोर्ट की अवकाश पीठ ने तलाक-ए-हसन मामले पर याचिकाकर्ता बेनज़ीर हीना द्वारा प्रस्तावित प्रस्तावों पर ध्यान दिया था, जिसमें महिलाओं के मौलिक और संवैधानिक अधिकारों के खिलाफ असंवैधानिक और प्रतिगामी के रूप में प्रथा को खत्म करने की मांग की गई थी। जिसके बाद अब सुप्रीम कोर्ट में तलाक-ए-हसन के खिलाफ एक और याचिका दायर की गई है। मुंबई की रहने वाली नाजरीन निशा ने कोर्ट में याचिका दाखिल की है।

खत्म हो तलाक ए हसन की प्रथा

तलाक-ए-हसन को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट में अनुच्छेद 32 के तहत एक जनहित याचिका के रूप में एक नई रिट याचिका दायर की गई है, जिसमें तलाक-ए-हसन सहित एकतरफा अतिरिक्त न्यायिक तलाक के सभी रूपों को शून्य और असंवैधानिक घोषित करने की मांग की गई है। मुंबई की रहने वाली नजरीन निशा ने एडवोकेट आशुतोष दुबे के जरिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है।

उन्होंने केंद्र को तलाक के लिए लिंग-तटस्थ, धर्म-तटस्थ समान आधार और सभी के लिए तलाक की एक समान प्रक्रिया के लिए दिशानिर्देश तैयार करने के लिए भी प्रार्थना की है। याचिकाकर्ता ने कहा है कि उसकी शादी मुस्लिम रीति-रिवाज से हुई थी और उसके माता-पिता को दहेज देने के लिए मजबूर किया जा रहा था और इसके लिए उसे प्रताड़ित किया जा रहा था।

शान तिरंगा

शान तिरंगे में लिखता हूं अपने मन के कुछ उदगार। आजादी के इस अमृत महोत्सव प्रकट कर रहा अपने विचार।।

ये झंडा प्रगति का द्योतक फहर फहर करता गुणगान। इस झंडे के नीचे मिलकर गढ़ते जाएं नव निर्माण ।।

वीरों के कर्मो का सूचक शोर मचाता उनका बलिदान। सरहद पर हुए शहिद को लिपटाकर देता सम्मान।।

तीन पट्टी से मिलकर झंडा बन जाता तिरंगा रूप। अलग अलग पट्टी बतलाता मिलकर हीं गढ़ना है रूप।।

मान हमारा इस झंडे से इसके पीछे अर्पित ये जान। मातृ भूमि के रक्षा के खातिर स्मार्पित रहेगा अपना प्राण।।

कलम सिपाही हैं भारत के लिखते रहना तिरंगे का शान। प्रगति पथ पर बढ़े भारत ये बढ़ता जाए तिरंगे का मान।।

शर्त लगाकर भारत के मिट्टी पर पल रहे कुछ गद्दार। उल्टे सीधे हरकत करके ये छलते रहते बारंबार।।

शार्ट न्यूज

बसपा ने उपराष्ट्रपति चुनाव में भी राजग उम्मीदवार का समर्थन किया

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती ने घोषणा की है कि उनकी पार्टी छह अगस्त को होने वाले उपराष्ट्रपति पद के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन उम्मीदवार जगदीप धनखड़ का समर्थन करेगी। मायावती ने बुधवार को ट्वीट कर कहा कि राष्ट्रपति पद के लिए राजग उम्मीदवार का समर्थन करने के बाद अब वह राजग के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के लिए पार्टी के समर्थन की घोषणा कर रही हैं। उन्होंने कहा, यह सर्वविदित है कि देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद के चुनाव में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच आम सहमति का अभाव था। अब छह अगस्त को होने जा रहे उपराष्ट्रपति पद के चुनाव में भी ऐसी ही स्थिति उत्पन्न हो रही है। बसपा अध्यक्ष ने कहा,ऐसे में पार्टी ने व्यापक जनहित और उपराष्ट्रपति पद के चुनाव में अपने आंदोलन को ध्यान में रखते हुए राजग उम्मीदवार जगदीप धनखड़ को अपना समर्थन देने का फैसला किया है, जिसकी मैं आज औपचारिक रूप से घोषणा भी कर रही हूं।

कानपुर लौटे मंकीपॉक्स प्रभावित देश से 314 लोग लापता

कानपुर। देशभर के विभिन्न राज्यों में मंकीपॉक्स को लेकर सतर्कता बरती जा रही है। ऐसे में मंकीपॉक्स प्रभावित देशों से कानपुर लौटें करीब 432 लोगों में से सिर्फ 118 लोगों से ही स्वास्थ्य विभाग संपर्क कर पाया है। इसके अलावा बाकी के 314 लोगों से अभी तक न तो रैपिड रिस्पॉन्स टीम संपर्क कर पाई है और न ही कोविड कंट्रोल सेंटर। केंद्र सरकार की तरफ से सरकार को जो सूची आई थी। उसमें लिखे पते और फोन नंबर या तो गलत है या स्विच ऑफ है। देश में अब तक मंकीपॉक्स के आठ मामले सामने आ चुके है और इनमें से एक मरीज की मौत हो चुकी है। सीएमओ डॉ आलोक रंजन ने बताया, हमारी टीमें सभी पतों और नंबर से संपर्क करने की कोशिश करने में जुटी हुई है लेकिन अभी तक कोई कामयाबी नहीं मिली है। नंबर या तो ऑफ है या फिर विदेश में है। जिन लोगों से हमारी टीम की बात भी हुई है वो लोग कानपुर में आकर या तो दिल्ली निकल गए है या मुंबई। आधे से ज्यादा लोगों के बारे में अभी तक कोई पता नहीं चल पाया है। सूची में कई लोगों के पते भी गलत लिखे है। मंकीपॉक्स से केरल के त्रिशूर शहर में एक संदिग्ध युवक की मौत हो चुकी है। उसकी मौत होने के बाद जो तथ्य सामने आए है वो डराने वाले है। जांच में उस युवक की मौत के बाद भी मंकीपॉक्स के वायरस की पुष्टि हुई है। युवक की मौत शनिवार को हुई थी और वो अभी हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात से देश लौटा था। युवक में मंकीपॉक्स के जैसे लक्षण पाए गए थे।

कन्नौज में पोषण माह अभियान की हुई शुरूआत

कन्नौज। कन्नौज के जिला अस्पताल में पोषण माह कार्यक्रम के दौरान सीएमओ डॉ विनोद कुमार ने अपने हाथों से बच्चों को विटामिन-ए की दवाई पिलाकर अभियान की शुरूआत कर दी। कार्यक्रम के दौरान सीएमओ ने जानकारी देते हुए बताया कि रतौंधी समेत कई अन्य बीमारियों से बचाने के लिए कन्नौज जिले में अब बच्चों को विटामिन-ए की खुराक पिलाने के लिए अभियान शुरू किया गया है। इस दवाई को पीने से बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी। कन्नौज जिले भर में करीब एक महीने तक यह अभियान चला कर 01 लाख 86 हजार बच्चों के टारगेट को पूरा किया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ विनोद कुमार ने बताया कि विटामिन-ए वसा में घुलनशील है। जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इसलिए नौ महीने से लेकर पांच वर्ष तक के बच्चों का यह दवाई पिलाई जानी जरूरी है। कन्नौज जिले में करीब 1,86,995 बच्चों को विटामिन-ए की खुराक पिलाने का लक्ष्य है। अलग-अलग उम्र के हिसाब से बच्चों को दवाई पिलाई जाएगी। इसमें 9 से 12 महीने के 10,995 बच्चे हैं। एक से दो वर्ष के 41,242 और दो से पांच वर्ष तक के करीब 1,34,806 बच्चों को विटामिन-ए की खुराक पिलाई जानी है।

हाईवोल्टेज तार ले जाने का भाजपा नेता ने किया विरोध

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर की डुमरियागंज नगर पंचायत के बैदौलागढ़ में मंदिर के ऊपर से हाई वोल्टेज तार ले जाने की शिकायत भाजपा नेता ने एसडीएम से की है। शिकायतकर्ता ने अवर और अधिशासी अभियंता पर विभागीय नियमों की अनदेखी का आरोप लगाते हुए अंकुश लगाने की मांग की है। भाजपा नेता मधुसूदन अग्रहरि ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपा। जिसमें उन्होंने कहा कि गाटा संख्या 545 व 539 पर राधाकृष्ण पूर्णिमा मंदिर स्थित है। जिसके वह पुजारी और व्यवस्थापक हैं। मंदिर के ऊपर से मनमाने ढंग से अवर अभियंता और अधिशासी अभियंता 132 केवीए का तार ले जाना चाहते हैं। जबकि विभाग का नियम है कि आबादी से निर्धारित दूरी पर 132 केवीए का तार दौड़ाए जा सकते हैं। ऐसा न करके नियमों का उल्लंघन किया जा रहा है। अधिशासी अभियंता विद्युत विवेक श्रीवास्तव ने कहा कि मंदिर के ऊपर से तार ले जाने का आरोप निराधार है।नियमानुसार लाइव कंडक्टर से वर्टिकल 15 फीट और हौरिजोंटल 9 फीट दूरी तक कोई निर्माण नहीं होना चाहिए। इससे मंदिर दूर है। उक्त लाइन निर्माण में बाधा आने से डुमरियागंज और इटवा तहसील में बिजली की आपूर्ति प्रभावित हो सकती है।

शराब माफिया की 67 लाख की संपत्ति कुर्क

आजमगढ़। आजमगढ़ में प्रशासन ने शराब माफिया रंगेश यादव की 67 लाख की संपत्ति कुर्क की है। रंगेश यादव जहरीली शराब कांड का आरोपी है। डीएम विशाल भारद्वाज ने 29 जुलाई को उसकी संपत्ति कुर्क करने के निर्देश दिए थे। जिसके बाद से बुधवार को उसके खिलाफ कार्रवाई की गई। एसपी अनुराग आर्य ने बताया कि जहरीली शराब कांड के मामले में 13 आरोपियों पर गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई की है। वहीं छह आरोपियों के खिलाफ रासुका की कार्रवाई की गई है। इसके साथ ही छह आरोपियों को शराब माफिया भी घोषित किया गया है। जिले के एसपी अनुराग आर्य ने बताया कि उक्त भूखंड की कीमत वर्तमान में ढ़ाई करोड़ से अधिक है। मामले की विवेचना में पुलिस को सपा विधायक रमाकांत यादव की भी संलिप्तता मिली है। इस मामले में पुलिस पहले ही खान बंधुओं की 75 लाख से अधिक की संपत्ति को कुर्क कर चुकी है। इन शराब माफियाओं में रंगेश यादव, मोहम्मद नदीम, मोहम्मद फहीम, कलीम, मोहम्मद नईम और सलीम शामिल हैं।

महिला आयोग की सदस्य ने सुनी समस्याएं

अंबेडकरनगर। मिशन शक्ति कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य महिला आयोग की सदस्य संगीता तिवारी ने बसखारी रोड स्थित सर्किट हाउस में आज महिलाओं की समस्याओं को सुनी और उनके समाधान के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। इस दौरान आयोग की सदस्य ने कहाकि अधिकारी महिलाओं को समस्याओं को प्राथमिकता से निपटाएं। इसमें लापरवाही मिलने पर संबंधित अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई के लिए पत्र लिखा जाएगा। राज्य महिला आयोग की सदस्य संगीता तिवारी ने बुधवार को सर्किट हाउस पंहुचकर कर सुनवाई शुरू की। इस दौरान 25 से ज्यादा महिलाओं ने अपनी समस्या बताई, जिनकी समस्याओ को राज्य महिला आयोग की सदस्य संगीता तिवारी ने सुनी और सम्बंधित अधिकारियो को समस्याओ को समाधान करने का निर्देश दिया। उन्होंने बताया कि महिलाओं की समस्याओं को समाप्त करने के लिए प्रदेश सरकार तत्पर है और उनको न्याय मिल रहा है। उन्होंने बताया कि सुनवाई के दौरान 25 से ज्यादा शिकायत आई थी, जिसकी सुनवाई की गई और उनके समाधान के लिए सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। इस अवसर पर भाजपा महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष रिंकल सिंह, जिला प्रोबेशन अधिकारी राकेश कुमार, शालिनी, ओझा आदि मौजूद रही।

यूपी में सड़क किनारे कहीं भी गाड़ी पार्क करने वालों की अब खैर नहीं

गलत पार्किंग पर योगी सरकार का नया फरमान

लखनऊ। मैरिज लॉन, बैंक्वेट हॉल, होटल, कोचिंग, प्राइवेट अस्पताल या फिर कहीं भी सड़क किनारे गाड़ी पार्क करने वालों के खिलाफ योगी सरकार सख्त एक्शन लेने जा रही है। जानकारी के मुताबिक सीएम योगी आदित्यनाथ ने ट्रैफिक पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को सख्त हिदायत दी है कि वो ये सुनिश्चित करें कि राजधानी लखनऊ समेत राज्य के बाकी जिलों में गलत पार्किंग ना हो। दरअसल पिछले दिनों सीएम योगी आदित्यनाथ लखनऊ में एक लंबे जाम में फंस गए थे। इसके बाद ही उन्होंने लखऊ में यातायात व्यवस्था को सही करने के आदेश दिए थे।

नए आदेश के मुताबिक लखनऊ में सभी मैरिज लॉन, होटल, कोचिंग सेंटर और प्राइवेट अस्पतालों में पार्किंग के लिए प्राइवेट गार्ड रखना होगा। इस गार्ड की ड्यूटी होगी ये सुनिश्चित करना कि कोई सड़क किनारे गलत गाड़ी पार्क ना करे। गार्ड ये सुनिश्चित करेगा कि संस्थान की पार्किंग में ही गाड़ी खड़ी हो या जहां पार्किंग एरिया हो वहां गाड़ी पार्क हो।

दरअसल लखनऊ के कई इलाकों में अक्सर जाम की समस्या देखने को मिलती है। इन इलाकों में भीड़ भाड़ की वजह से अक्सर जाम लग जाता है और फिर अगर किसी ने गलत गाड़ी पार्क कर दी तो फिर तो और मुसीबत। लखनऊ की सड़कें दिल्ली और मुंबई के मुकाबले कम चौड़ी हैं। ऐसे में एक गलत पार्किंग बड़े जाम का कारण बन सकती है।

हर साल देश में पांच लाख से ज्यादा सड़क हादसे होते हैं जिनमें 1.5 लाख से ज्यादा लोगों की मौत होती है जबकि तीन लाख से ज्यादा लोग गंभीर रूप से घायल होते हैं।

सुल्तानपुर में स्मैक तस्कर की जमीन पर चला बुलडोजर प्रशासन

सुल्तानपुर। सुल्तानपुर प्रशासन ने बुधवार को बड़ी कार्रवाई की है। यहां बल्दीराय में गिरोहबंद अपराधी विश्वनाथ सिंह उर्फ बाबा की ढाई करोड़ की संपत्ति कुर्क की है। आरोपी ने सरकारी जमीन पर अवैध रुप से कब्जा कर रखा था। जिस पर प्रशासन का बुल्डोजर भी चला है। बल्दीराय के बिही निदुरा गांव निवासी विश्वनाथ सिंह उर्फ बाबा स्मैक की तस्करी करता है। कई बार पुलिस ने उसे जेल भी भेजा है। DM सुल्तानपुर रवीश गुप्ता ने 30 जुलाई को उसके खिलाफ गिरोहबंद अपराध के तहत कार्रवाई किया है। इस क्रम में SDM बल्दीराय वंदना पांडे ने बताया कि आज उनके निर्देश पर कई थानो की फोर्स मौके पर पहुंची थी। जिसके बाद करीब दो करोड़ 79 लाख की संपत्ति कुर्क की गई है। आरोपी ने सरकारी जमीन पर भी कब्जा कर रखा था जिसको बुलडोजर से धराशाई किया गया है।

बरेली के पंडित को परिवार सहित जान से मारने की मिली धमकी

एजेंसी

बरेली। यूपी में एक हिंदू परिवार को जाने से मारने की धमकी मिली है। ये घटना बरेली के सिरौली थाना क्षेत्र के केशवपुर गांव की है। जहां कुछ बदमाशों ने एक हिंदू परिवार के घर के बाहर धमकी भरा लेटर गेट पर चिपका दिया है।

इस घटना के बाद से गांव के हिंदूओं के बीच दहशत का माहौल है। हालांकि सूचना मिलते ही सिरौली थाना की पुलिस मौके पर आ पहुंची गई। एसएसपी देहात और क्षेत्राधिकारी चमन सिंह चावड़ा ने दिनेश पंडित के परिवार को सुरक्षा देने की बात कही। उन्होंने कहा कि जल्द ही आरोपी पुलिस के गिरफ्त में होगा और उसके खिलाफ जाने से मारने के आरोप में कर्रवाई की जाएगी।

केशवपुर गांव के दिनेश पंडित के घर के बाहर किसी ने लेटर चस्पा कर दिया जिस पर उनके परिवार को 8 दिन में खत्म करने की बात लिखी थी। गेट पर चिपके लेटर पर लिखा था, दिनेश पंडित तुम ऐसे नहीं मानोगे चुप-चाप बैठ जाओं वरना 8 दिन के अंदर-अंदर परिवार सहित मारे जाओगे। बाद में कोई सामने नहीं आएगा जैसे रात कोई नहीं आया और हिंदूओं का सरकार बनना छोड़ दे तेरे साथ एक भी हिन्दू नही आएगा। ये ध्यान में रखना की गांव में आज की तारीख में तेरा कोई नहीं है। आज की तारीख में अगर चुप रहेगा तो ठीक रहेगा और अगर सबका हितेशी बनने की कोशिश की तो 100 प्रतिशत मारा जाएगा। ये पर्चा किसी को दिखाना मत बाकी तू खुद समझदार है।

इस मामले को लेकर दिनेश पंडित ने कहा कि कुछ दिन पहले कुछ अज्ञात लोग घर में घुस आए थे जब तक हमें भनक लगती तब तक वे भाग गए। दिनेश पंडित के मुताबिक अगर ऐसा ही चलता रहेगा तो वे गांव छोड़कर चले जाएगे।

स्वतंत्रता दिवस पर घर घर पहुंचेगी 'योगी की पाती'

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आगामी 15 अगस्त को देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सभी प्रदेशवासियों को पत्र लिख कर बधाई देने की पहल की है।

मुख्यमंत्री कार्यालय के सूत्रों ने बताया कि देशव्यापी स्तर पर मनाये जा रहे आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर शुरु किये गये 'हर घर तिरंगा अभियान' के तहत उत्तर प्रदेश के घर घर में 'सीएम योगी की पाती' पहुंचेगी। मुख्यमंत्री की तस्वीर वाले पत्र में मुख्यमंत्री प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाओं के साथ अपना विशेष संदेश देंगे।

एक अधिकारी ने बताया कि स्वतंत्रता दिवस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का घर घर पत्र पहुंचेगा। पत्र के लिफाफे के ऊपर 'योगी की पाती' लिखा है। वहीं पत्र का शीर्षक है, 'आजादी का अमृत महोत्सव : प्रदेश वासियों के नाम पाती।'

यूपी में कई कंस्ट्रक्शन कंपनी के ठिकानों पर छापेमारी, सपा नेता हैं मालिक

झांसी। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के नेताओं के खिलाफ जांच एजेंसियों का एक्शन लगातार जारी है। बुधवार सुबह आयकर विभाग ने लखनऊ और झांसी में यूपी की बड़ी कंस्ट्रक्शन कंपनी घनश्याम कंस्ट्रक्सन के कई ठिकानों पर छापेमारी की। आयकर विभाग की टीम बुधवार सुबह लखनऊ और झांसी में एक साथ कंपनी के कई ठिकानों पर एक साथ पहुंची।

जानकारी के मुताबिक घनश्याम कंस्ट्रक्शन समाजवादी पार्टी के नेता श्याम सुंदर यादव और उनके भाई बिसन सिंह यादव की है। घनश्याम कंस्ट्रक्शन की कॉरपोरेट दफ्तर झांसी में हैं। आयकर विभाग ने घनश्याम कंस्ट्रक्शन के झांसी वाले दफ्तर और घर पर छापेमारी की है। इससे पहले सपा के पूर्व विधायक दीप नारायण यादव के घर पर विजिलेंस का छापा पड़ा था और अब श्याम सुंदर के घर पर आयकर विभाग की छापेमारी हुई है। कहा जा रहा है कि ये छापेमारी अगले कुछ दिनों तक लगातार जारी रह सकती है। आयकर विभाग ने झांसी में जिन कारोबारियों के घर और दफ्तर पर छापेमारी की है उनमें समाजवादी पार्टी नेता नेता श्याम सुंदर सिंह पारीछा, बिल्डर वीरेंद्र राय, राकेश बघेल और विजय सरावगी का नाम शामिल है। गौरतलब है कि हाल ही में समाजवादी पार्टी के महासचिव राम गोपाल यादव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात कर शिकायत की थी की समाजवादी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं को एक एक कर टार्गेट किया जा रहा है। राम गोपाल यादव ने सीएम योगी आदित्यनाथ से मिलकर उन्हें एक ज्ञापन सौंपा था जिसमें उन्होंने कहा था कि राज्य में अल्पसंख्यकों और सपा कार्यकर्ताओं को निशाना बनाया जा रहा है।

पुलिस ने सुलझाई फाजिल हसन हत्याकांड की गुत्थी, 6 आरोपी गिरफ्तार, यूं रची थी साजिश

गौरतलब है कि आयकर विभाग ने कानपुर में कंस्ट्रक्शन कंपनी घनश्याम इंफ्रा के मालिक राजेश यादव के घर में भी छापेमारी की है। आयकर विभाग की तीन टीमें राजेश यादव के घर के अंदर दस्तावेज खंगालने में लगी हुई हैं। राजेश यादव के घर के बाहर भारी पुलिस बल तैनात है। इस बात की पुष्टि नहीं हो सकी है कि छापेमारी के दौरान रियल एस्टेट कारोबारी राजेश अंदर मौजूद था या नहीं।

सीएम योगी की हिन्दू युवा वाहिनी में बड़ा फेरबदल

प्रदेश कार्यकारिणी समेत सभी जिलों की इकाइयां भंग

लखनऊ। सीएम योगी आदित्यनाथ के दो दिवसीय गोरखपुर दौरे के बीच उनके संगठन हिन्दू युवा वाहिनी में बड़े फेरबदल की खबर सामने आई है। वाहिनी की प्रदेश कार्यकारिणी समेत संभाग, विभाग और सभी जिलों की इकाइयों को तत्काल प्रभाव से भंग कर दिया गया है।

प्रदेश प्रभारी राघवेंद्र प्रताप सिंह ने यह जानकारी देते हुए बताया कि जल्द ही इकाइयों का पुनर्गठन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि लम्बे समय से संगठन में इकाइयों का पुनर्गठन नहीं हुआ था। इसी उद्देश्य से इन्हें भंग किया गया है।

वैसे वाहिनी में इस फेरबदल के पीछे संगठन को नई उर्जा से लबरेज करने की योजना बताई जा रही है। कहा जा रहा है कि मिशन-2024 से पहले पूर्वी से लेकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक हिन्दू युवा वाहिनी नए कार्यकर्ताओं की नई टीम बनाने की तैयारी में है।

हिन्दू युवा वाहिनी के संस्थापक सीएम योगी आदित्यनाथ हैं। इसका गठन 2002 में योगी आदित्यनाथ ने सांसद रहते किया था। 2022 के चुनाव में वाहिनी ने पूरी ताकत से भाजपा उम्मीदवारों के पक्ष में प्रचार अभियान चलाया था। बता दें कि वाहिनी ने योगी आदित्यनाथ के 2004, 2009 और 2014 के चुनाव प्रचार अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश के शहरी और ग्रामीण इलाकों में जगह-जगह समाज के सभी वर्गों के साथ सहभोज के आयोजन कर वाहिनी ने सामाजिक समरसता और हिन्दुत्व का संदेश पहुंचाया था।

मार्च 2017 में उनके मुख्यमंत्री बनने के बाद पिछले पांच वर्षों में राजनीतिक गतिविधियों से हटकर वाहिनी ने सामाजिक कार्यों जैसे राशन कार्ड वितरण, कोविड-19 की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान, इंसेफेलाइटिस उन्मूलन पर फोकस किया। इसके साथ स्थानीय प्रशासन से तालमेल स्थापित कर विकास और कल्याणकारी योजनाओं के प्रसार में भूमिका निभाई।

पिछले चुनाव में भी वाहिनी काफी सक्रिय नज़र आई। गोरखपुर के अलावा अन्य के विधानसभा क्षेत्रों में भी भाजपा उम्मीदवारों की जीत सुनिश्चित करने के लिए हिन्दू युवा वाहिनी ने बड़े पैमाने पर प्रचार अभियान चलाया।

अब 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले वाहिनी की इकाइयों को भंग करने के पीछे नए सिरे से संगठन को तैयार करने की योजना बताई जा रही है।

आकांक्षात्मक विकास खंडों के विकास का रोडमैप तैयार

लखनऊ। विकास की दौड़ में पिछड़े 100 आकांक्षात्मक विकास खंडों के चयन के बाद अब उनकी बेहतरी के लिए सेक्टरवार रोडमैप भी तैयार कर लिया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्राथमिकता के अनुरूप चिकित्सा एवं पोषण और शिक्षा, कृषि, वित्तीय समावेशन, कौशल विकास और आधारभूत संरचना विकास से जुड़े कुल 14 विभागों के 75 इंडिकेटर तय किए गए हैं, जिनमें बेहतरी के लिए कोशिश होगी। खास बात यह कि सभी 100 विकासखंडों पर शासन की सीधी नजर होगी। यहां की प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा भी मुख्यमंत्री भी करेंगे। तय कार्ययोजना के मुताबिक इन विकास खंडों की प्रगति का सबसे बड़ा मानक यहां के चिकित्सा व पोषण तथा शिक्षा सेक्टर की बेहतरी होगी। सीएम योगी का इस सेक्टर पर खास फोकस है। विकास खंड के रिपोर्ट कार्ड में 60 प्रतिशत अंक इसी आधार पर मिलेंगे। इसी तरह, कृषि एवं जल संसाधन सेक्टर में कृषि, पशुधन, उद्यान, और ग्राम्य विकास विभागों को रखा गया है। इनके प्रयासों के लिए 20 फीसदी अंक होंगे जबकि, वित्तीय समावेशन सेक्टर में संस्थागत वित्त, आईटी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स व पंचायती राज विभाग की कोशिशों से यहां आधारभूत संरचना विकास की कोशिश होगी, जिसके लिए 10 प्रतिशत अंक रखे गए हैं।

झांसी के कारोबारियों के खिलाफ आईटी की छापेमारी

झांसी। उत्तर प्रदेश के झांसी महानगर के कुछ व्यापारियों के लिए बुधवार की सुबह बेहद परेशान करने वाली रही जब आयकर विभाग (आईटी)की टीम ने अचानक उनके घर पर दस्तक दी। सूत्रों ने बताया कि महानगर के आठ से अधिक कारोबारियों के घर अचानक हुई आईटी की छापेमारी से हड़कंप मच गया । व्यापारी सुबह सुबह उनके घरों पर आ धमकी आईटी टीम के बारे में कुछ जान और समझ पाते इससे पहले ही टीम ने घर को बाहर पुलिस की तैनाती कर दी गयी और अधिकारियों ने दस्तावेजों की जांच शुरू कर दी।

सूत्रों के अनुसार जिन कारोबारियों के घर आईटी टीम ने छापा मारा उनमें बसेरा बिल्डर्स के मालिक वीरेंद्र राय और घनराम इंफ्रास्ट्रक्चर के बिशनसिंह यादव शामिल हैं।

भाजपा की 'खेवनहार' बन गयी है बसपा : कांग्रेस

अमेठी। उपराष्ट्रपति पद के लिये होने वाले चुनाव में राजग के उम्मीदवार जजगदीप धनकड को बहुजन समाज पार्टी (बसपा) का समर्थन दिये जाने की घोषणा के बाद कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि बसपा अध्यक्ष मायावती भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की 'खेनवहार' बन गयी हैं।

उप्र कांग्रेस के सचिव एवं पूर्व विधान परिषद सदस्य दीपक सिंह ने बुधवार को मायावती पर निशाना साधते हुए कहा कि अब बसपा राजनीतिक पार्टी नहीं रह गयी है, बल्कि अब वह भाजपा की समर्थक पार्टी बन गई है। उन्होंने कहा कि भाजपा और बसपा एक दूसरे की पूरक हैं।

गौरतलब है कि मायावती ने छह अगस्त को होने वाले उपराष्ट्रपति चुनाव में राजग उम्मीदवार को अपना समर्थन देने का आज ऐलान कर दिया है। इससे पहले राष्ट्रपति चुनाव में भी बसपा ने राजग उम्मीदवार द्रौपदी मूर्मु का समर्थन किया था।

सिंह ने कहा कि मायावती द्वारा लिया गया कोई फैसला जो भाजपा के साथ खड़े होने वाला हो, वह अब चौंकाता नहीं है। कांग्रेस पार्टी पहले से ही इस बात को जानती थी। बसपा और भाजपा एक दूसरे की पूरक है। उन्होंने आगे कहा कि जब जब भाजपा संकट में आती है, बसपा भाजपा की मददगार बन कर खड़ी हो जाती है। पहले कांग्रेस जो पार्टी कहती थी, अब एक के बाद एक, प्रमाणित होता जा रहा है।

कांग्रेस पार्टी का यह कथन प्रमाणिक रूप से सत्य हुआ है कि बसपा अब पार्टी के रूप में नहीं रही, बल्कि भाजपा के समर्थक दल के रूप में पहचानी जायेगी।

बस्ती में मोहर्रम पर परम्परागत जुलूस निकालने की होगी अनुमति

सोशल मीडिया पर प्रसारित संदेश पर सजगता का परिचय दे लोग

लोगों से अपील किया कि इस दौरान सोशल मीडिया पर प्रसारित संदेश पर सजगता का परिचय दे। थानाध्यक्ष, सीओ उच्चाधिकारी से सम्पर्क कर मामले की पुष्टि कर लें। अफवाहों पर ध्यान न दें। किसी प्रकार की दिक्कत होने पर तत्काल 112 नम्बर पर डायल करें।

बस्ती। बस्ती के कलेक्ट्रेट सभागार में डीएम प्रियंका निरंजन की अध्यक्षता में जिला शान्ति समिति की बैठक हुई। इस दौरान एसपी आशीष श्रीवास्तव समेत अन्य अधिकारी मौजूद रहे। बैठक में डीएम ने कहा कि मोहर्रम पर्व पर परम्परागत जुलूस निकालने की अनुमति दी जाएगी। जुलूस निकालने के लिए संयोजक का नाम, पता, मोबाइल नम्बर, रूट का विवरण, जुलूस का समय अंजुमन को संबंधित थाना में उपलब्ध कराना होगा।

डीएम ने कहा कि अंजुमन द्वारा दी गई सूचना के आधार पर सुरक्षा, साफ-सफाई, पेयजल, ट्रैफिक आदि व्यवस्था में सहूलियत होगी। यदि किसी जुलूस में महिलाएं भी जाती है तो इसकी भी सूचना उपलब्ध करवाएं ताकि महिला पुलिस की व्यवस्था की जा सके।

सभी एसडीएम को निर्देश दिया कि मोहर्रम के जुलूस के रास्ते पर राजस्व कर्मी, पुलिस कर्मी की स्थान-स्थान पर तैनात कर दें। विद्युत विभाग एसडीओ, जेई की तैनाती करें जो निर्धारित मार्ग पर बिजली के तार, पोल की स्थिति का निरीक्षण कर सही कराएं। नगर निकाय, ग्राम पंचायत साफ-सफाई की व्यवस्था करें। प्रतिबंधित पशुओं के विचरण पर रोक रहेंगी।

एसपी ने जुलूस के मार्ग का लिया जायजा

बैठक के बाद एसपी आशीष श्रीवास्तव ने अंजुमन कमेटी के सदस्यों के साथ रोडवेज, पुरानी बस्ती, पंचायती मंदिर, कर्बला पहुंचकर स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने आने-जाने के मार्ग को देखा और मोहर्रम पर सुरक्षा व्यवस्था का इंतजाम कराने के लिए अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए।

जिलापंचायत सभागार में सपा कार्यसमिति बैठक आयोजित

इटावा। इटावा में समाजवादी पार्टी की कार्यसमिति की बैठक आयोजित की गई। जिले के पदाधिकारी, कार्यकर्ता बैठक मर पहुंचे पार्टी कार्यकर्ताओं को किस दिशा में कार्य करना चाहिए इस पर विचार विमर्श किया गया। आगामी पालिका चुनावों के लिए, सदस्यता अभियान और हर झंडा तिरंगा अभियान पर जोर दिया गया। विधानसभा चुनाव में मिली हार के बाद सपा अब अपनी रणनीति तैयार कर रही है। जिसके चलते आज बुधवार को जिला पंचायत सभागार में समाजवादी पार्टी ने कार्यसमिति की बैठक जिलाध्यक्ष गोपाल यादव के नेतृत्व में आयोजित की गयी है। पार्टी के कार्यकर्ताओं ने अपने अपने विचार रखे और सपा द्वारा चलाया जा रहा सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है उसमें तेजी लाने के लिए जिलाध्यक्ष सभी कार्यकर्ताओं से आह्वान किया है। साथ ही सोशल मीडिया पर सोच समझकर अपनी बात रखे या कोई पोस्ट जारी करें।

अनुसूचित जाति के मेधावी छात्रों की पढ़ाई का खर्च उठाएगी योगी सरकार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने अनुसूचित जाति के बच्चों की पढ़ाई का पूरा खर्च उठाने की पहल की है जिससे धन के अभाव में उनकी पढ़ाई न रुके।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर समाज कल्याण विभाग इस प्रस्ताव को अमलीजामा पहनाने में लगा है। इस प्रस्ताव पर मंत्रिपरिषद की मंजूरी मिलने के बाद जल्द ही योगी 'मुख्यमंत्री मेधावी छात्रवृत्ति योजना' का शुभारंभ करेंगे। सरकार के आधिकारिक सूत्रों ने मंगलवार को यह जानकारी दी।

इसके साथ ही योगी सरकार विधानसभा चुनाव के पहले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की ओर से जारी किए गए लोक कल्याण संकल्प पत्र के एक और वादे को जल्द पूरा कर देगी। इसकी रूपरेखा समाज कल्याण विभाग ने तैयार कर ली है।

इसके तहत वादे के अनुरूप योगी सरकार अनुसूचित जाति के मेधावी छात्रों की शिक्षा के लिए सौ फीसदी वित्तीय सहायता देगी। 'मुख्यमंत्री मेधावी छात्रवृत्ति योजना' के तहत देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में अध्ययनरत, राष्ट्रीय या राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षा में अव्वल आने वाले दो-दो छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाएगी। इसके लिए समाज कल्याण विभाग की ओर से नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रिप्यूट की 250 संस्थाएं और उत्तर प्रदेश की प्रतिष्ठित संस्थाएं चिह्नित कर ली गई हैं।

सरकार की ओर से अनुसूचित जाति के 500 मेधावी छात्रों को संपूर्ण शिक्षण शुल्क, मेस और छात्रावास व्यय के लिए 15 करोड़ रुपए की बजट में व्यवस्था भी की गई है।

सरकार का दावा है कि सपा सरकार में 2012-17 तक केवल 76 लाख युवाओं को छात्रवृत्ति दी जा रही थी। अनुसूचित जाति के छात्रों की छात्रवृत्ति रोक दी गई थी। योगी सरकार 1.14 करोड़ से अधिक युवाओं को छात्रवृत्ति देकर उनकी पढ़ाई-लिखाई आसान कर रही है।

गन्ने एफआरपी 3.5 रुपये क्विंटल निर्धारित

एजेंसी

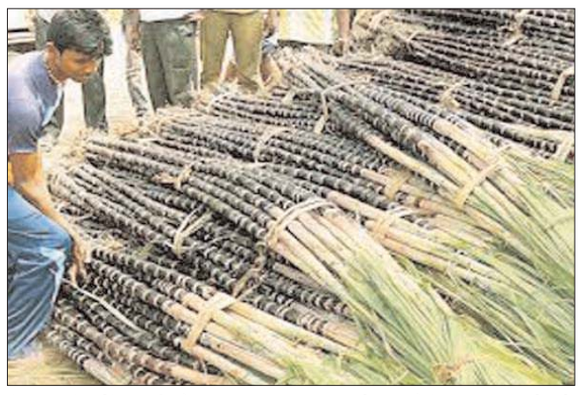

नयी दिल्ली। केन्द्र सरकार ने आगामी पेराई सत्र के लिए गन्ने का उचित और लाभकारी मूल्य (एफआरपी) प्रति क्विंटल 305 रुपये तय किया है।

चालू सत्र के लिए न्यूनतम 10 प्रतिशत चीनी पड़ता के साथ गन्ने का एफआरपी 290 रुपये प्रति क्विंटल है।

मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति की बुधवार को हुई बैठक के इस निर्णय की जानकारी देते हुए एक बयान में कहा गया है कि पेराई सत्र 22-23 के लिए न्यूनतम 10.25 प्रतिशत चीनी पड़ता के साथ गन्ने का एफआरपी 305 रुपये प्रति क्विंटल रखा गया है। इसके ऊपर प्रति 0.1 प्रतिशत चीनी का पड़ता बढ़ने पर एफआरपी में 3.05 रुपये प्रति क्विंटल दिये जायेंगे। बयान में यह भी कहा गया है कि चीनी का पड़ता 9.5 प्रतिशत से कम होने पर किसानों को 282.125 रुपये प्रति क्विंटल की दर से एफआरपी मिलेगी। विज्ञप्ति के अनुसार कृषि एवं लागत मूल्य आयोग ने 2022-23 के लिए गन्ने की ए2 और परिवार की मजदूरी जोड़कर उत्पादन लागत 162 रुपये क्विंटल निर्धारित की है। इस तरह आगामी सत्र के लिए गन्ने का एफआरपी उसकी लागत के 50 प्रतिशत से अधिक है।

पिछले आठ वर्ष में गन्ने का एफआरपी कुल मिलाकर 34 प्रतिशत बढ़ाया गया है ताकि किसानों की आय में वृद्धि हो सके।

बयान के अनुसार इस निर्णय से गन्ने की खेती करने वाले पांच करोड़ गन्ना किसानों और उनके आश्रितों तथा चीनी मिल और सहायक उद्योगों में कार्यरत पांच लाख कर्मचारियों को फायदा होगा।

सरकार ने कहा है कि 2013-14 में गन्ने का एफआरपी 210 रुपये क्विंटल था और 23.97 करोड़ टन गन्ने की खरीद की गयी थी। उस समय किसानों को मिलों से गन्ने के लिए 51 हजार करोड़ रुपये मिल रहे थे, पिछले आठ वर्षों में एफआरपी में 34 प्रतिशत की वृद्धि की गयी। मौजूदा पेराई सत्र 2021-22 में मिलों ने 115196 करोड़ रुपये मूल्य का 35.03 करोड़ टन गन्ना खरीदा, यह अब तक की गन्ने की अब तक सबसे बड़ी खरीद है।

सरकार का अनुमान है कि अक्टूबर से शुरू हो रहे पेराई सत्र 2022-23 में चीनी मिलों द्वारा 36 करोड़ टन गन्ने की खरीद की जायेगी और किसानों को उसके लिए 120000 करोड़ रुपये मिलेंगे।

केन्द्र ने बयान में यह सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया है कि गन्ना किसानों को उनका देय समय से मिले, इसके लिए वह हरसंभव किसान हितैषी कदम उठायेगी।

भारत ने ब्राजील को पीछे छोड़कर चीनी उत्पादन में इस समय पहला स्थान बना लिया है।पिछले आठ वर्ष से चीनी के उत्पादन में निरंतर वृद्धि हो रही है, इससे देश अपनी जरूरत की चीनी पैदा करने के साथ-साथ चीनी का निर्यात भी लगातार कर रहा है और इससे सरकार को राजकोषीय घाटा कम करने में मदद मिल रही है। वर्ष 2017-18, 2018-19, 2019-20 और 2020-21 में भारत से क्रमशः छह लाख टन , 38 लाख टन, 59.60 लाख टन और 70 लाख टन चीनी का निर्यात किया गया। चालू विपणन सत्र 2021-22 में पहली अगस्त में चीनी का निर्यात एक करोड़ टन तक पहुंच गया है और सत्र के अंत तक इसके 1.12 करोड़ टन पहुंचने की संभावना है।

सुप्रसिद्ध चरखा लोगो और खादी मार्क पर केवीआईसी का अधिकार : दिल्ली उच्च न्यायालय

नयी दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने एक आदेश में कहा कि खादी ट्रेडमार्क और चरखा लोगो सुप्रसिद्ध हैं और इसपर खादी विकास और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) का अधिकार है। केवीआईसी बीते माह दिल्ली उच्च न्यायालय गयी थी जिसमें खादी बाय हेरिटेज नामक एक निजी संस्था के खिलाफ स्थायी निषेधाज्ञा, लागत और नुकसान भरपाई की मांग थी, जो खादी बाय हेरिटेज के नाम से पीपीई किट, हैंड सैनिटाइज़र और फायरबॉल बेच रही थी। उक्त संस्था अपने उत्पादों पर केवीआईसी के चरखा लोगो का भी उपयोग कर रही थी। संसद के एक अधिनियम द्वारा स्थापित केवीआईसी एक सांविधिक निकाय है और उसने प्रसिद्ध ट्रेडमार्क खादी के साथ-साथ चरखा लोगो पर अपने स्वामित्व का दावा किया था, जो इसके पक्ष में ट्रेडमार्क अधिनियम के कई वर्गों के तहत पंजीकृत हैं। न्यायालय ने अपने आदेश में कहा कि खादी बाय हेरिटेज ने केवल अपनी वेबसाइटों और अन्य ऑनलाइन लिस्टिंग के माध्यम से अपने उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए %खादी% चिह्न का दुरुपयोग किया है और केवीआईसी चिह्न के ऐसे दुरुपयोग को क्षमा नहीं किया जा सकता है क्योंकि संस्था द्वारा चिह्न, नाम और लोगो का समान रूप से उपयोग किया गया है। न्यायालय ने केवीआईसी के पक्ष में 10 लाख रुपये का हर्जाना और दो लाख रुपये की लागत संबंधी भुगतान निर्णय भी दिया ।केवीआईसी के अध्यक्ष मनोज कुमार ने कहा हम दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा खादी ट्रेडमार्क का दुरुपयोग करने वालों को दिए गए कड़े संदेश से प्रसन्न हैं। यह एक मूल्यवान ब्रांड हैऔर हम चुपचाप नहीं बैठेंगे तथा बेईमान तृतीय पक्षों को इसका मुद्रीकरण नहीं करने देंगे। खादी ट्रेडमार्क को सुप्रसिद्ध ट्रेडमार्क घोषित करना हमारे लिए बहुत गर्व की बात है।

शार्ट न्यूज

रुपया 62 पैसे लुढ़का

मुंबई। दुनिया की प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर में तेजी के बावजूद आयातकों और बैंकरों की लिवाली से आज अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया 62 पैसे लुढ़ककर 79.15 रुपये प्रति डॉलर रह गया। पिछले कारोबारी दिवस रुपया 53 पैसे की तेजी लेकर पांच सप्ताह के उच्चतम स्तर 79 रुपये प्रति डॉलर के नीचे 78.53 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गया था। कारोबार की शुरुआत में रुपया 17 पैसे गिरकर 78.70 रुपये प्रति डॉलर पर खुला और यही इसका दिवस का उच्चतम स्तर भी रहा। लिवाली के दबाव में यह 79.21 रुपये प्रति डॉलर के निचले स्तर तक टूट गया। अंत में पिछले सत्र के 78.53 रुपये प्रति डॉलर की तुलना में 62 पैसे लुढ़ककर 79.15 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गया।

वोडाफोन-आइडिया को पहली तिमाही में हुआ 7,312 करोड़ रुपये का घाटा

नयी दिल्ली। दूरसंचार कंपनी वोडाफोन-आइडिया (वीआई) को चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में 7,295 करोड़ रुपये समेकित घाटा हुआ। पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में कंपनी को 7,312 करोड़ रुपये का घाटा हुआ था। कंपनी ने बुधवार को एक बयान में कहा कि आलोच्य तिमाही में उसका राजस्व वार्षिक आधार पर 13.7 प्रतिशत बढ़कर 10,410 करोड़ रुपये रहा। वीआई का प्रति उपभोक्ता औसत राजस्व (एआरपीयू) 23.4 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 128 रुपये हो गया। तिमाही के दौरान कंपनी का परिचालन लाभ सुधरकर 21.1 अरब रुपये रहा जो अप्रैल-जून 2021 तिमाही में 19.7 अरब रुपये था। दूरसंचार कंपनी ने कहा कि उसका 30 जून 2022 को समाप्त हुयी तिमाही के अंत में कुल सकल ऋण 1,990.8 अरब रुपये था, जिसमें 1,166.0 अरब रुपये के आस्थगित स्पेक्ट्रम भुगतान दायित्वों और सरकार को चुकायी जाने वाली 672.7 अरब रुपये की एजीआर देनदारी शामिल है। बैंकों और वित्तीय संस्थानों का 152 अरब रुपये का कर्ज है।

वीवो ने किया 2217 करोड़ के सीमा शुल्क की चोरी : डीआरआई

नयी दिल्ली। मोबाइल फोन बनाने वाली कंपनी वीवो मोबाइल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड पर 2217 करोड़ रुपये के सीमा शुल्क की चोरी का आरोप लगा है। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) द्वारा की गयी जांच में यह पता चला है कि कंपनी ने 2217 करोड़ रुपये के सीमा शुल्क की चोरी की है। वीवो इंडिया चीन की कंपनी वीवो कम्युनिकेशन टेक्नालॉजी कंपनी की सहायक इकाई है। यह कंपनी विनिर्माण के साथ ही असेंबलिंग, थोक में बिक्री के साथ ही वितरण का काम भी करती है। निदेशालय के अधिकारियों ने कंपनी के संयंत्र परिसरों की जांच की जिसमें वीवो इंडिया ने जानबूझकर आयात की श्रेणी में दिखाया पाया गया है जबकि उनका उपयोग विनिर्माण में होता है। इस तरह से कंपनी ने 2217 करोड़ रुपये के सीमा शुल्क की चोरी की है। कंपनी ने अपनी शुल्क की देनदारियों के लिए 60 करोड़ रुपये का भुगतान भी कर दिया है।

उबर ने दिल्ली एनसीआर में शुरू की व्हाट्सऐप टू राइड सेवा

नयी दिल्ली। उबर ने दिल्ली एनसीआर में अपने उपभोक्ताओं के लिए व्हाट्सऐप टू राइड (डब्लूए2आर) को शुरू कर दिया है जिससे व्हाट्सऐप के आधिकारिक चैटबॉट के जरिए यात्रा बुक की जा सकती है। उबर ने बुधवार को एक बयान में कहा कि गत वर्ष दिसंबर में लखनऊ में किए गए सफल पायलट के बाद दिल्ली एनसीआर में इस फीचर को उपभोक्ता के लिए पेश किया गया है। यह हिंदी और इंग्लिश दोनों भाषाओं में होगी। डब्लूए2आर में उपभोक्ता आसानी से ऊबर बॉट के साथ चैट करते हुए यात्रा बुक कर सकते हैं। इसमें उन्हें अपने अनुकुल भाषा चुनते हुए अपनी यात्रा प्रारंभ करने वाले स्थान और गंतव्य की जानकारी प्रदान करनी होगी और पुष्टि के लिए ओटीपी बताना होगा। उबर के मोबिलिटी एवं प्लेटफॉर्म्स के वरिष्ठ निदेशक मणिकंदन तंगरत्नम ने कहा, हमारे लखनऊ पायलट से मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया से प्रेरित होकर हम दिल्ली एनसीआर में व्हाट्सऐप टू राइड अनुभव प्रस्तुत करने के लिए उत्साहित हैं। भविष्य में डब्लूए2आर का और ज्यादा विकास किया जाएगा तथा ऊबर ऐप के मौजूदा यूज़र्स को भी व्हाट्सऐप द्वारा यात्रा बुक करने की सुविधा दी जाएगी। व्हाट्सऐप पार्टनरशिप्स इंडिया के निदेशक रवि गर्ग ने कहा, व्हाट्सऐप में सरलता से यात्रा बुक करने के अनुभव ने उबर को नए उपभोक्ता हासिल करने में मदद की और इस विकास के सफर में हम उनका सहयोग करने के लिए उत्साहित हैं। हम भविष्य में भी व्यवसायों के साथ साझेदारियां करते रहेंगे ताकि वह उन नए ग्राहकों को हासिल करने में समर्थ बनें, जो हर रोज मुख्यत: व्हाट्सऐप का इस्तेमाल करते हैं।

राजस्व घाटा अनुदान की पांचवीं किस्त में 14 राज्यों को मिले 7,183.42 करोड़ रुपये

नयी दिल्ली। केंद्र ने वित्त आयोग की सिफारिशों के अनुसार 14 राज्यों को राजस्व घाटे से निपटने के लिए 7,183.42 करोड़ रुपये का अनुदान जारी किया है। केंद्रीय वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार इन राज्यों को चालू वित्त वर्ष में 5वीं मासिक किस्त जारी की गयी है। पंद्रहवें वित्त आयोग ने इन 14 राज्यों-आंध्र प्रदेश, असम, हिमाचल प्रदेश, केरल, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, त्रिपुरा, उत्तराखंड और पश्चिम बंगाल को केंद्रीय कर राजस्व में उनके हिस्से के कुल हस्तांतरण के बार चालू वित्त वर्ष 2022-23 के लिए 86,201 करोड़ रुपये का राजस्व घाटा अनुदान दिए जाने की सिफारिश की है। इसे 12 समान मासिक किश्तों में दिया जाता है। विज्ञप्ति के अनुसार अगस्त तक पांच किस्तों में इन राज्यों को 35,917.08 करोड़ रुपये दिया जा चुका है। संविधान के अनुच्छेद 275 के तहत राज्यों को वित्तीय संसाधनों के हस्तांतरण के बाद आयोगों की सिफारिशों के अनुसार राजस्व घाटा अनुदान प्रदान किया जाता है। पांचवीं किस्त के तहत आंध्र प्रदेश को अगस्त में,879.08 करोड़ रुपये, असम को 407.50 करोड़ रुपये, हिमाचल प्रदेश को 781.42 करोड़ रुपये, केरल को 1097.83 करोड़ रुपये, मणिपुर को 192.50 करोड़ रुपये, मेघालय 86.08 करोड़ रुपये, मिजोरम को 134.58 करोड़ रुपये, नागालैंड को 377.50 करोड़ रुपये, पंजाब को 689.50 करोड़ रुपये, राजस्थान को 405.17 करोड़ रुपये, सिक्किम को 36.67 करोड़ रुपये, त्रिपुरा को 368.58 करोड़ रुपये, उत्तराखंड को 594.75 करोड़ रुपये तथा पश्चिम बंगाल को अगस्त में 1132.25 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है।

भारती एयरटेल ने 5जी परियोजना के लिए नोकिया के साथ समझौता किया

नयी दिल्ली। दूरसंचार क्षेत्र की अग्रणी कंपनी भारती एयरटेल ने 5जी रेडियो एक्सेस नेटवर्क (आरएएन) परियोजन के लिए नोकिया के साथ समझौता किया है। नोकिया ने बुधवार को एक बयान में कहा कि यह बहु-वर्षीय सौदा हाल ही में संपन्न 5जी स्पेक्ट्रम नीलामी और भारती एयरटेल को अखिल भारतीय स्पेक्ट्रम के आवंटन को देखते हुए किया गया है, जो देश को 5जी युग में ले जाने की कंपनी की महत्वकांक्षा को परलक्षित करता है। इस समझौते के तहत नोकिया अपने अग्रणी एयरस्केल पोर्टफोलियो में से उपकरणों के साथ मॉड्यूलर और स्केलेबल आधारित बैंड के साथ उच्च क्षमता वाली 5जी विराट एमआईएमओ रेडियो उपलब्ध कराएगी। भारती एयरटेल के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी गोपाल विठ्ठल ने कहा,हम नोकिया के साथ अपनी साझेदारी को जारी रखने और भारत को 5जी युग में प्रवेश कराने के लिए उत्साहित हैं। एयरटेल का हमेशा से मानना रहा है कि 5जी तकनीक का वास्तविक लाभ डिवाइस, नेटवर्क, एप्लिकेशन और सेवाओं में एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की क्षमता से आएगा। एयरटेल सही क्षेत्रों में निवेश कर रहा है और हमारे ग्राहकों को और भी बेहतर सेवा देने के लिए सही भागीदारों के साथ काम कर रहा है। नोकिया के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी पेक्का लुंडमार्क ने कहा, यह ऐतिहासिक सौदा भारती एयरटेल के साथ हमारी दीर्घकालिक साझेदारी को मजबूत करता है। हमें खुशी है कि उन्होंने दुनिया के सबसे बड़े नेटवर्क में से एक में बेहतर 5जी प्रदर्शन देने के लिए नोकिया के सर्वश्रेष्ठ-इन-क्लास एयरस्केल बेसबैंड और रेडियो पोर्टफोलियो को चुना है।

दिल्ली-एनसीआर में हास्पिटल नेटवर्क के यहां से 3.5 करोड़ नकद बरामद

एजेंसी

नयी दिल्ली। हरियाणा और दिल्ली एनसीआर में अस्पताल संचालित कर स्वास्थ्य सेवायें प्रदान करने वाले कई समूहों के यहां की गयी आयकर छापेमारी में 3.5 करोड़ रुपये नकद और 10 करोड़ रुपये मूल्य के आभूषण जब्त किये गये हैं।

आयकर विभाग ने आज यहां बताया कि गत 27 जुलाई को इन समूहों के दिल्ली-एनसीआर में स्थित कुल 44 परिसरों में छापामारी की कार्रवाई की गई। इस अभियान के दौरान बड़ी संख्या में दोषी ठहराने योग्य भौतिक और डिजिटल साक्ष्य जब्त किए गए हैं जिससे पता चला कि समूहों में से एक ने खाता-बही का एक समानांतर सेट बनाए रखा था, जो रोगियों से प्राप्त नकद धनराशि की व्यवस्थित रूप से कम रिपोर्टिंग को दिखाता है। इस समूह द्वारा अपनाई गई कार्यप्रणाली में अस्पताल से रोगियों की छुट्टी के समय चालान को हटाना या चालान की धनराशि को 'छूट/रियायतें' आदि के रूप में चिह्नित करके धनराशि को कम करना शामिल था। इस कार्यप्रणाली को अपनाकर आय की चोरी की जाती है और इसे कई वर्षों से समूह के सभी अस्पतालों में अपनाई जा रही है।

इस अभियान में शामिल अन्य स्वास्थ्य समूह दवाओं और/या स्टेंट जैसे चिकित्सा उपकरणों के लिए फर्जी या अधिक धनराशि के चालान प्राप्त करने में शामिल हैं, जिससे न केवल वास्तविक लाभ को छिपाया जाता है, बल्कि रोगियों से अधिक शुल्क भी लिया जाता है।

इन जांचों के दौरान पाई गई धनराशि के साक्ष्य ने इस तथ्य की और अधिक पुष्टि की है कि समूहों को इन फर्जी/धनराशि में बढ़ोतरी किए गए चालानों के लिए बैंकिंग चैनलों के माध्यम से किए गए भुगतान के बदले नकद वापस प्राप्त हो रहा है। इन समूहों के एक अस्पताल को निर्दिष्ट व्यवसाय के रूप में पात्र होने के लिए आवश्यक शर्तों को पूरा किए बिना वर्षों से गलत कटौती का दावा करते हुए पाया गया।

समावेशी और स्वस्थ आर्थिक वृद्धि के लिए आयकर दरों में की जाए कमी: संजीव बजाज

एजेंसी

बेंगलुरू। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के अध्यक्ष संजीव बजाज ने कहा है कि सरकार को आर्थिक सुधारों को आगे बढ़ाने के क्रम में व्यक्तिगत आयकर की दरों में कमी पर विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा है कि इस कदम से लोगों की थैली में खर्च करने योग्य आय बढ़ेगी और मांग चक्र को पुनः तेज करने में मदद मिलेगी।

भारत को वर्ष 2047 तक 40 हजार अरब डालर की अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य तक ले जाने में उद्योग और सीआईआई की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि सीआईआई का मानना था कि उद्योग और सीआईआई मिल कर इस दिशा में खुद भी बहुत कुछ कर सकते हैं।

भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) की बुधवार को जारी एक विज्ञप्ति में श्री बजाज के हवाले से कहा गया है कि सरकार को इस दिशा में काम करना चाहिए कि भारत की शेयर बाजार में बड़ी हैसियत रखने वाली कुछ कंपनियों को मोर्गन स्टैनले कैपिटल इंटरनेशनल (एमएससीआई) और फाइनेंशियल टाइम्स स्टॉक एक्सचेंज (एफटीएसई) जैसे सूचकांकों में स्थान मिल सके।

इसके साथ-साथ भारत को जेपी मॉर्गन के ग्लोबल इमर्जिंग-मार्केट बॉन्ड सूचकांक और बार्कलेज ग्लोबल बॉन्ड सूचकांक में भारत के प्रवेश के उपाय करने में तेजी लाना चाहिए।

उन्होंने सरकार को इंडिया मिलेनियल जैसे विशेष बॉन्ड्स के निर्गम भी लाने चाहिए जैसा कि वर्ष 2008 में किया गया था।

बजाज ने उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (पीएलआई) के विस्तार करने और इसके दायरे में और अधिक क्षेत्रों को लाने के महत्व पर बल देते हुए कहा कि विशेष रूप से वे श्रम गहन उद्योगों के क्षेत्र में भारत में विश्व प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से मजबूत घरेलू उद्योग के विकास की संभावना है।

उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रोलाइजर्स के लिए पीएलआई लाने से 2030 तक 50 लाख टन ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन के भारत के लक्ष्य को हासिल करने में मदद मिलेगी और भारत हरित हाइड्रोजन का निर्यातक भी बन सकता है।

श्री बजाज ने विनियामकीय अनुमोदनों में गति और पारदर्शिता लाने और नए और मौजूदा उद्यमों की नियामकीय और अनुपालन लागत को कम करने के लिए केंद्र और राज्य दोनों स्तर की मंजूरी और अनुपालन की सुविधा को नए प्रस्तुत की गयी राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली (न्यूज) पोर्टल पर लाया जाना चाहिए।

उन्होंने ढांचा परियोजनाओं के बेहतर नियोजन एवं निष्पादन के लिए सभी राज्यों को गतिशक्ति पहल के तहत जोड़ा जाना चाहिए।

बजाज ने ईंधन और बिजली पर लगने वाले सभी शुल्कों को जीएसटी के तहत इनपुट टैक्स क्रेडिट व्यवस्था में लाए जाने पर भी बल दिया है।

बजाज ने जोर दिया कि परिस्थितिकी दृष्टि से स्वस्थ वृद्धि की अवधारणा को व्यवसाय और व्यापार की दृष्टि से एकीकृत किया जाना चाहिए और विनिर्माण क्षेत्र तथा बुनियादी ढांचा हरित होना चाहिए।

इंडिगो का पहली तिमाही में शुद्ध घाटा घटकर 1,064.3 करोड़ रुपये

एजेंसी

नयी दिल्ली। डॉलर के मुकाबले रुपये में गिरावट और विमानन ईंधन के ऊंचे दाम के कारण सस्ते किराए वाली विमानन कंपनी इंडिगो का चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में शुद्ध घाटा 1,064.3 करोड़ रुपये रहा।

इंडिगो ने बुधवार को एक बयान में कहा कि विदेशी विनिमय दर में उतार-चढ़ाव के कारण 1,424.6 करोड़ रुपये के नुकसान कर दें तो कंपनी का तिमाही में शुद्ध लाभ 360.3 करोड़ रुपये रहा। एयरलाइन को वित्त वर्ष 2021-22 की अप्रैल-जून तिमाही में 3,174.2 करोड़ रुपये का घाटा हुआ था। इंडिगो की 30 जून 2022 को समाप्त हुयी तिमाही में कुल आय वार्षिक आधार पर 310.7 प्रतिशत बढ़कर 13,018.8 करोड़ रुपये रही।

एयरलाइन का आलोच्य तिमाही के दौरान यात्री टिकट राजस्व 400 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 11,466.9 करोड़ रुपये और सहायक राजस्व 92.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 1,286.3 करोड़ रुपये था। इस दौरान इंडिगो का कुल खर्च 122 प्रतिशत की बढ़त के साथ 14,083.1 करोड़ रुपये रहा। इंडिगो के मुख्य कार्यकारी अधिकारी रोनोजॉय दत्ता ने कहा कि समीक्षाधीन तिमाही में कंपनी का प्रदर्शन प्रभावशाली रहा। उन्होंने कहा, हमने कंपनी का अब तक का सबसे अधिक राजस्व प्राप्त किया और इसी तरह परिचालन स्तर पर मुनाफा अर्जित किया। हालांकि, ईंधन और विदेशी मुद्रा के कारण लागत पर दबाव ने हमें मजबूत राजस्व प्रदर्शन को शुद्ध लाभ में बदलने से रोका। श्री दत्ता ने कहा कि अगली तिमाही में कमजोर मौसम के कारण एयरलाइन की वित्तीय प्रदर्शन के सामने चुनौतियां होंगी, लेकिन लंबी-अवधि के राजस्व का रुझान मजबूत रहेगा।

इंडिगो के पास 30 जून 2022 तक कुल 19,069.4 करोड़ रुपये की नगद थी जिसमें 8,303.7 करोड़ रुपये मुक्त नगद और 10765.7 करोड़ रुपये की प्रतिबंधित नगद है।

डीएपी उर्वरकों में आत्मनिर्भर के लिए सेनेगल के साथ सहयोग

नयी दिल्ली। रासायनिक उर्वरकों के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने की पहल के अंतर्गत घरेलू उर्वरक कंपनी कोरोमंडल इंटरनेशनल लिमिटेड ने बुधवार को सेनेगल की रॉक फॉस्फेट खनन कंपनी बाओबाब माइनिंग एंड केमिकल्स कॉर्पोरेशन (बीएमसीसी) में 45 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदने की औपचारिकता पूरी की।

केंद्रीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री डॉ मनसुख मंडाविया की अध्यक्षता में यहां एक कार्यक्रम में बीएमसीसी के अधिकारियों ने सेनेगल सरकार की ओर से इस शेयर अधिग्रहण के लिए भारतीय कंपनी कोरोमंडल को स्वीकृति पत्र सौंपा।

मंत्रालय के एक बयान में कहा गया है कि उर्वरक कंपनियों की कच्चे माल की आपूर्ति व्यवस्था मजबूत करने के लिए सलाह और समर्थन दे रही है। मंत्रालय ने यह भी कहा है कि रॉक फॉस्फेट और फॉस्फोरिक एसिड जैसे कच्चे माल पर देश की उच्च निर्भरता को देखते हुए, भारत निवेश और बहु-वर्षीय आयात सौदों के माध्यम से खनिज समृद्ध देशों में अपने पदचिह्न का विस्तार करके कीमतों में वृद्धि के खिलाफ अपनी आपूर्ति और बचाव को सुरक्षित करने की योजना बना रहा है। इस अवसर पर श्री मंडाविया ने कहा, भारत खनिज समृद्ध देशों में निवेश करके अपनी कच्चे माल की आपूर्ति सुरक्षा को मजबूत कर रहा है। हम अपने किसानों के लिए उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और घरेलू उत्पादन बढ़ाने और अन्य देशों के साथ साझेदारी स्थापित करने की दिशा में काम करना जारी रखेंगे।

डॉ. मंडाविया ने आगे कहा, सेनेगल के साथ भारत सौहार्दपूर्ण द्विपक्षीय संबंध रखता है। सेनेगल भारत को फॉस्फोरिक एसिड के प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं में से एक है। मुझे उम्मीद है कि सेनेगल में रॉक माइंस में निवेश दोनों देशों के लिए पारस्परिक रूप से फायदेमंद होगा और हमारी दोस्ती को और मजबूत करेगा। खनन सेनेगल में किया जाएगा और डीएपी का उत्पादन भारत में किया जाएगा। 10 लाख टन डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) और नाइट्रोजन-फॉस्फोरस-पोटेशियम (एनपीके) का विनिर्माण किया जाएगा।

कोरोमंडल के कार्यकारी उपाध्यक्ष अरुण अलगप्पन ने कहा कि बीएमसीसी में निवेश कंपनी की रॉक फॉस्फेट आवश्यकता के एक तिहाई तक सुरक्षित करेगा और कच्चे माल के स्रोत में विविधता लाएगा तथा हमारे संचालन में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देगा।

विदेशी निवेशकों की छह माह बाद हुई लिवाली से शेयर बाजार गुलजार

एजेंसी

दिग्गज कंपनियों के विपरीत बीएसई की छोटी और मझौली कंपनियों में हुई बिकवाली ने शेयर बाजार की तेजी की रफ्तार को धीमा कर दिया

मुंबई 03 अगस्त (वार्ता) उभरते एशियाई बाजारों में छह माह बाद जुलाई में विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की हुई लिवाली की बदौलत आज घरेलू शेयर बाजार का लगातार छठे दिन भी चढ़ना जारी रहा।

भारत, दक्षिण कोरिया, वियतनाम, ताइवान, फिलिपींस, इंडोनेशिया और थाइलैंड के शेयर बाजारों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, विदेशी निवेशकों ने जुलाई में 1.23 अरब डॉलर की लिवाली की है। यह दिसंबर 2021 के बाद किसी एक महीने में की गई लिवाली है। इससे पूर्व पिछले छह माह में विदेशी निवेशक ने इन बाजारों से लगातार बिकवाली की है।

इससे बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 214.17 अंक की तेजी लेकर 58350.53 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 42.70 अंक बढ़कर 17388.15 अंक पर रहा। हालांकि दिग्गज कंपनियों के विपरीत बीएसई की छोटी और मझौली कंपनियों में हुई बिकवाली ने शेयर बाजार की तेजी की रफ्तार को धीमा कर दिया। इस दौरान मिडकैप 0.60 प्रतिशत गिरकर 24,388.12 अंक और स्मॉलकैप 0.28 प्रतिशत फिसलकर 27,471.79 अंक पर रहा।

इस दौरान बीएसई में कुल 3484 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 1371 में लिवाली जबकि 1976 में बिकवाली हुई वहीं 137 के भाव अपरिवर्तित रहे। इसी तरह एनएसई में 25 कंपनियों में तेजी जबकि अन्य 25 में गिरावट का रुख रहा। बीएसई में वित्त, टेक और आईटी समूह की 1.28 प्रतिशत तकी की तेजी को छोड़कर शेष 16 समूहों में बिकवाली हावी रही। इस दौरान हेल्थकेयर 0.65, इंडस्ट्रियल्स 0.61, दूरसंचार 1.26, ऑटो 0.78, कैपिटल गुड्स 0.82, धातु 0.54 और रियल्टी समूह के शेयर 0.73 प्रतिशत गिर गए।

वैश्विक बाजार में तेजी का रुख रहा। इस दौरान ब्रिटेन का एफटीएसई 0.06, जर्मनी का डैक्स 0.27, जापान का निक्केई 0.53 और हांगकांग का हैंगसेंग 0.40 प्रतिशत चढ़ गया जबकि चीन के शंघाई कंपोजिट में 0.71 प्रतिशत की गिरावट रही।

नीता अंबानी,निर्मला सीतारमण बनी भारत की मोस्ट पॉवरफुल वुमैन इन बिजनेस-2022

एजेंसी

नयी दिल्ली। केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्माला सीतारमण और रिलायंस इंडस्ट्रीज की निदेशक नीता अंबानी को फॉर्च्यून इंडियाज मोस्ट पॉवरफुल वुमैन इन बिजनेस-2022 की रैंकिंग में संयुक्त रूप से पहले पायदान पर जगह मिली है। चैनल की मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) लीना नायर तीसरे स्थान पर हैं।

रैंकिंग में फैशन ब्रांड नायका की सीईओ फाल्गुनी नायर, आईएमएफ की डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर गीता गोपीनाथ, सेबी की चेयरपर्सन माधबी पुरी बुच और इंडिया टुडे ग्रुप की वाइस चेयरपर्सन कली पुरी ने भी जगह बनायी है। इसमें शामिल होने वाली ईशा अंबानी सबसे युवा महिला हैं।

फॉर्च्यून ने नीता अंबानी को मल्टी टास्कर (एक वक्त में अधिक कार्य करने वाली) बताया है। फॉर्च्यून ने कहा कि नीता अंबानी देश की सबसे बड़ी कंपनी रिलायंस की निदेशक और

रिलायंस फाउंडेशन की चेयरपर्सन होने के साथ रिलायंस के फ्लैगशिप बिजनेस एंपायर और परिवार के बीच कड़ी का काम करती हैं।

पत्रिका ने कहा कि व्यक्तिगत व्यस्तताओं के बावजूद पिछले वर्ष उन्होंने जियो वर्ल्ड सेंटर और जियो इंस्टीट्यूट को खड़ा करने में अहम भूमिका निभाई।

रिलायंस फाउंडेशन के शिक्षा और स्वास्थ्य कार्यक्रमों का नेतृत्व किया। दक्षिण अफ्रीका और यूएई में क्रिकेट टी-20 टीम के अधिग्रहण को मुकाम तक पहुंचाया।

फॉर्च्यून ने श्रीमती सीतारमण के लिए कहा कि अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों से उपजी विकट आर्थिक परिस्थितियों का उन्होंने जमकर सामना किया। देश में महंगाई काबू में रखने, राजस्व बढ़ाने और अवसंरचना के लिए धन का इंतजाम करने के लिए उन्हें पहला स्थान मिला है।

पत्रिका ने कहा है कि आर्थिक मोर्चे पर केन्द्रीय वित्त मंत्री ने कई कड़े फैसले लिए। आत्मनिर्भर भारत के लिए 20 लाख करोड़ रुपये के पैकेज का जिक्र भी उनकी उपलब्धियों में शामिल है।

शार्ट न्यूज

भारोत्तोलक लवप्रीत ने राष्ट्रीय रिकॉर्ड के साथ जीता कांस्य

बर्मिंघम। भारोत्तोलक लवप्रीत सिंह ने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में भारत के पदकों की संख्या 14 करते हुए बुधवार को 109 किग्रा वर्ग में कास्य पदक प्राप्त किया। लवप्रीत ने स्नैच में 163 किग्रा और क्लीन एंड जर्क में 192 किग्रा के प्रयास के साथ 355 किग्रा की कुल लिफ्ट दर्ज की। उन्होंने क्लीन एंड जर्क का नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी स्थापित किया। इस बीच, कैमरून के पेरिक्लेक्स न्यैयबेयू जूनियर ने 361 किग्रा (स्नैच 160, क्लीन एंड जर्क 201) के साथ स्वर्ण जीता। समोआ के जैक ओपेलोगी ने 358 किग्रा (स्नैच 164, क्लीन एंड जर्क 194) की लिफ्ट के साथ रजत हासिल किया।

सैयद रफत बने कोबुडो मार्शल आर्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष

लखनऊ। पूर्व अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी एवं लखनऊ ओलंपिक संघ के महासचिव डा.सैयद रफत जुबैर रिजवी को कोबुडो मार्शल आर्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। अपनी फाइटिंग स्किल व तकनीक के चलते देश में लोकप्रिय हो रही जापानी मार्शल आर्ट कोबुडो उदीयमान मार्शल आर्ट की श्रेणी में आती है। इसको देखते हुए कोबुडो मार्शल आर्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया का पुर्नगठन लखनऊ में हुई आमसभा की बैठक के दौरान किया गया। बैठक में डा रिजवी को एसोसिएशन का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। एसोसिएशन के चेयरमैन आनंद किशोर पांडेय ने डा. सैयद रफत के नाम का प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से आम सभा ने मंजूरी प्रदान की। इस अवसर पर डा.रफत ने कहा,इस जापानी मार्शल आर्ट विधा को देश में में प्रचार-प्रसार के लिए मैं हमेशा कटिबद्ध रहूंगा क्योंकि मैं स्वयं मार्शल आर्ट का खिलाड़ी रहा हूं। इस बैठक में सुनील श्रीवास्तव को एसोसिएशन का कार्यवाहक अध्यक्ष मनोनीत किया गया।

बल्लेबाज़ों की टी20 रैंकिंग में सूर्यकुमार यादव दूसरे स्थान पर

दुबई। टी20 अंतर्राष्ट्रीय करियर की पहली 20 पारियों में धूम मचाते हुए बल्लेबाज़ सूर्यकुमार यादव अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की टी20 रैंकिंग में दूसरे नंबर पर जा पहुंचे हैं। मंगलवार को वेस्टइंडीज़ के विरुद्ध तीसरे टी20 मैच में 76 रन बनाते हुए अब वह सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज़ों की सूची में पाकिस्तान के बाबर आज़म (818) से केवल दो अंक पीछे हैं।कप्तान रोहित शर्मा के साथ पारी की शुरुआत करते हुए सीरीज़ के पहले दो मैच सूर्यकुमार के लिए इतने अच्छे नहीं रहे थे। हालांकि तीसरे मैच में निर्णायक भूमिका निभाते हुए उन्होंने भारत को 165 के कठिन लक्ष्य के काफ़ी पास पहुंचा दिया। इस पारी के चलते वह दो स्थान आगे बढ़ते हुए चौथे से दूसरे नंबर पर चले गए हैं। इससे मोहम्मद रिज़वान और एडन मारक्रम को एक-एक स्थान का नुक़सान हुआ है। वेस्टइंडीज़ के विरुद्ध भारत को इस सीरीज़ में दो और मैच खेलने है और सूर्यकुमार के पास बाबर को पछाड़ने का बढ़िया मौक़ा है। पिछले साल टी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने वाले सूर्यकुमार ने 38.11 की औसत और 175.60 के स्ट्राइक रेट से अब तक 648 रन बनाए हैं। पिछले महीने इंग्लैंड के विरुद्ध ट्रेंट ब्रिज पर 117 रनों की पारी खेलकर उन्होंने रैंकिंग में 44 स्थानों की बड़ी छलांग लगाई।

करो या मरो मैच जीतकर भारत सेमीफाइनल में

बर्मिंघम। भारतीय महिला हॉकी टीम ने राष्ट्रमंडल खेल 2022 के करो या मरो मैच में बुधवार को कनाडा को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनायी। भारत ने ग्रुप-ए के अपने आखिरी मुकाबले में कनाडा को 3-2 से शिकस्त दी। भारत के लिये सलीमा टेटे, नवनीत कौर और लालरेमसियामी ने एक-एक गोल किया, जबकि कनाडा के लिये ब्रिएन स्टेयर्स और हैना हॉ ने गोल किये। भारत ने करो या मरो मैच की शुरुआत मजबूती से करते हुए मैच के तीसरे मिनट में ही पेनल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील किया। गुरजीत कौर से गेंद को नेट तक पहुंचाने में चूक हुई, लेकिन सलीमा ने भारत को 1-0 की बढ़त दिलायी। नवनीत कौर ने दूसरे क्वार्टर में लालरेमसियामी के पास को गोल में तब्दील कर भारत को 2-0 की बढ़त दिलायी, लेकिन इसके बाद कनाडा ने मैच में वापसी की। स्टेयर्स ने जहां क्वार्टर-2 की समाप्ति से ठीक पहले एक पेनल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील किया, वहीं हैना हॉ ने तीसरे क्वार्टर के नौंवे मिनट में गोल कर मैच को 2-2 की बराबरी पर ला खड़ा किया। ग्रुप-ए में गोल के मामलों में भारत से आगे चल रही कनाडा को मैच में सिर्फ ड्रॉ की दरकार थी, जबकि भारत के लिये जीतना जरूरी था।

रिटायर्ड हर्ट हुए रोहित मेडिकल टीम की निगरानी में

बैसेतैरे। सेंट किट्स में वेस्टइंडीज़ के विरुद्ध तीसरे टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैच के दौरान भारतीय कप्तान रोहित शर्मा पीठ की जकड़न के चलते 11 के स्कोर पर रिटायर्ड हर्ट होकर पवेलियन लौट गए थे। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने बताया कि वह मेडिकल टीम की निगरानी में हैं। 165 के लक्ष्य का पीछा करते हुए दूसरे ओवर में अल्ज़ारी जोसेफ़ के विरुद्ध क़दमों का इस्तेमाल करते हुए चौका लगाने के बाद रोहित को दर्द महसूस हुआ। मैदान पर फ़िज़ियो कमलेश जैन के साथ चर्चा के बाद वह अपनी पीठ को पकड़ते हुए मैदान से बाहर चले गए। रोहित ने उम्मीद जताई कि वह शनिवार को फ्लोरिडा में खेले जाने वाले चौथे टी20 मैच के लिए तैयार हो जाएंगे। पांचवां और अंतिम टी20 मैच में इसी मैदान पर रविवार को खेला जाएगा।सीरीज़ में 2-1 की बढ़त लेने के बाद रोहित ने कहा, (मेरा शरीर) इस समय ठीक लग रहा है। अगले मैच से पहले हमारे पास कुछ दिनों का समय है तो मैं संभवत: ठीक हो जाऊंगा।

पीसीबी पाकिस्तानी खिलाड़ियों को बीबीएल के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र नहीं देगा

कराची। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने अपने खिलाड़ियों को ऑस्ट्रेलिया में होने वाले बीबीएल सीज़न में खेलने की अनुमति रूपी अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) देने से मना कर दिया है, फिर चाहे वह अनुबंधित खिलाड़ी हों या नहीं। बोर्ड ने अगले साल यूएई में होने वाली नई प्रतियोगिता आईएलटी20 पर भी खिलाड़ियों की उपलब्धता पर कोई स्पष्टीकरण नहीं किया है। इस फ़ैसले का मुख्य कारण आने वाले समय में घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यस्त कार्यक्रम समझा जा रहा है। हालांकि ऐसे में यह बात साफ़ नहीं है कि बिना अनुबंध वाले खिलाड़ियों पर रोक क्यों लगाई जा रही है। बीबीएल के ड्राफ़्ट में पिक होने के लिए शुरुआती 98 विदेशी खिलाड़ियों की सूची में कोई पाकिस्तानी नाम नहीं था लेकिन ऐसा समझा जा रहा थीं कि डेडलाइन से पहले उन्हें शामिल कर लिया जाता। आईएलटी20 में अब तक औपचारिक रूप में किसी भी खिलाड़ी का नाम नहीं लिया गया है लेकिन कई शीर्ष के पाकिस्तानी खिलाड़ियों का नाम इस लीग के होने वाले करारों से जोड़ा गया है।

इंग्लैंड ने भारत को 3-1 से शिकस्त दी

बर्मिंघम। भारतीय महिला हॉकी टीम को राष्ट्रमंडल खेल 2022 के अपने तीसरे मैच में मंगलवार को इंग्लैंड के हाथों हार मिली। इंग्लैंड ने अपने विजय रथ को जारी रखते हुए भारत को 3-1 से हराया। इंग्लैंड की ओर से गिसेल एंस्ले, टेस हावर्ड और हैना मार्टिन ने गोल किये जबकि भारत का इकलौता गोल चौथे क्वार्टर के अंतिम क्षणों में वंदना कटारिया की हॉकी स्टिक से आया। अपनी धुर प्रतिद्वंद्वी इंग्लैंड के आगे भारतीय महिलाएं इस बार फीकी नजर आयीं। उन्होंने हालांकि इंग्लैंड को दूसरे क्वार्टर तक बांधे रखा और सिर्फ एक गोल करने दिया, लेकिन गेंद को नेट तक पहुंचाने की असमर्थता भारत के लिये भारी साबित हुई। गोल्ड कोस्ट 2018 की कांस्य पदक विजेता इंग्लैंड ने तीसरे क्वार्टर में दूसरा और चौथे क्वार्टर में अपना चौथा गोल कर पिछले राष्ट्रमंडल खेल की जीत को दोहराया।

फ्रंटलाइन तेज़ गेंदबाज़ की भूमिका निभा सकता हूं : हार्दिक

एजेंसी

बैसेटेरे। अंतर्राष्ट्रीय करियर की शुरुआत एक बैकअप गेंदबाज़ी विकल्प के तौर पर करने वाले हार्दिक पांड्या को अब लगता है कि वह एक प्रमुख तेज़ गेंदबाज़ की भूमिका निभा सकते हैं। वेस्टइंडीज़ के ख़िलाफ़ खेले गए पहले तीन टी20 में अर्शदीप सिंह के बाद केवल हार्दिक ही ऐसे गेंदबाज़ रहे जिन्होंने पूरे चार ओवर किए हैं। मंगलवार को इस्तेमाल हुई पिच पर हार्दिक ने वेस्टइंडीज़ के बल्लेबाज़ों को तेज़ गेंद और धीमी गेंद के संयोजन से परेशान किया।

भारत के 2-1 से सीरीज़ में बढ़त बनाने के बाद हार्दिक ने कहा, जब भी मैं गेंदबाज़ी कर रहा हूं, मुझे मज़ा आ रहा है। मुझे लगा कि मुझे अपनी गेंदबाज़ी को सुनिश्चित करने के लिए कुछ समय निकालना चाहिए क्योंकि मुझे एहसास हुआ है कि जब मैं गेंदबाज़ी करता हूं, तो यह टीम को बहुत संतुलन देता है। इससे कप्तान को भी आत्मविश्वास मिलता है।

हां मैं पहले भी गेंदबाज़ी करता था, मैं तब उस समय गेंदबाज़ी पर आता था जब कोई अच्छी गेंदबाज़ी नहीं करता था। मुझे लगता है कि मैं अब कह सकता हूं कि मैं तीसरे या चौथे तेज़ गेंदबाज़ के तौर पर पूरे चार ओवर कर सकता है और बल्ले के अलावा गेंद के साथ भी उतना ही योगदान दे सकता हूं।तीसरे टी20 में जब हार्दिक गेंदबाज़ी पर आए तो उस समय वेस्टइंडीज़ क स्कोर चार ओवर में बिना किसी नुक़सान के 32 रन था। काइल मेयर्स लगातार प्रहार कर रहे थे। जब हार्दिक ने देखा कि मेयर्स हवा के साथ तेज़ गति की शार्ट लेंथ गेंद को मिडविकेट के ऊपर मार रहे हैं तो उन्होंने अपनी लाइन को ऑफ़ स्टंप से दूर रखना शुरू कर दिया और गेंद में गति भी बढ़ाई। इससे हवा के ख़िलाफ़ मारने में बल्लेबाज़ों को चुनौती हुई।

हार्दिक ने ब्रैंडन किंग को धीमी गति की ऑफ़ कटर पर आउट किया और इसके बाद 10वें ओवर में इसी तरह की गेंद पर मेयर्स को लगातार तीन बार बीट किया। ओवर द विकेट से आते हुए वह एक अच्छे कोण से बल्लेबाज़ से दूर जाती कटर गेंद डाल रहे थे।

हार्दिक ने एक विकेट लेकर 19 रन दिए। भारत की सात विकेट से जीत के बाद मेयर्स ने यह भी स्वीकार किया कि हार्दिक और भारत ने वेस्टइंडीज़ की तुलना में परिस्थितियों का बेहतर इस्तेमाल किया।

हार्दिक ने कहा, मेरे लिए यह वह दृष्टिकोण है जिसका मैं अनुसरण कर रहा हूं। मैं मानता हूं कि ज़िंदगी में अगर आप हर पल के मज़े ले रहे हैं और एक सकारात्मक सोच के साथ हैं तो परिणाम आपकी ओर जाएंगे। तो मेरे लिए यह परिणाम की बात नहीं है। यह इसके बारे में है कि मैं गेम को कैसे ले जाता हूं, कितनी स्मार्ट सोच रख रहा हूं और कैसे मैं परिस्थिति और माहौल का इस्तेमाल कर सकूं जो मुझे बल्ले या गेंद से मदद दे।

डीसी जसप्रीत सिंह ने किया जालंधर डिस्ट्रिक्ट बैडमिंटन चैंपियनशिप का शुभारम्भ

जालंधर। जालंधर डिस्ट्रिक्ट बैडमिंटन एसोसिएशन, जालंधर की तरफ से थिंक-गैस और एडिडास के सहयोग से रायजादा हंसराज स्टेडियम में बैडमिंटन चैंपियनशिप का शुभारम्भ बुधवार को डीसी जसप्रीत सिंह (आईएएस) ने किया। इस दौरान उन्होंने खिलाडियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि खेल जहां हमें फिट रखते हैं वहीं हमें यह अवसर प्रदान करते हैं कि हम अपने माता-पिता, शहर, राज्य और देश का नाम रोशन कर सकें।उन्होंने चैंपियनशिप के प्रबंधों के लिए डीबीए की तारीफ की।

चैंपियनशिप के बारे में डीबीए के सचिव एवं पूर्व राष्ट्रीय खिलाड़ी रितिन खन्ना ने बताया कि 35 इवेंट्स के लिए इस बार हमें 600 से ज्यादा एंट्रियां मिली हैं ?और डीबीए के इतिहास में पहली बार हो रहा है कि विजेताओं को 3 लाख से अधिक के नकद और अन्य आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे। उन्होंने बताया कि चैंपियनशिप के दौरान अंडर-11,13,15,17,19 में लडके-लड़कियों और पुरुष एवं महिला वर्ग के सिंगल्स, डबल्स एवं मिक्सड डबल्स मुकाबले करवाए जा रहे हैं। जबकि वैटरन कैटेगरी में 35 प्लस से लेकर 60 प्लस आयु वर्ग के इवेंट हो रहे हैं। पांच दिन की इस चैंपियनशिप में करीब 450 मैच करवाए जाएंगे। चैंपियनशिप के दौरान फ्री रिफ्रेशमेंट की व्यवस्था की गई है और मैचों की लाइव स्ट्रीमिंग हो रही है। इस आयोजन में थिंक गैस, एडिडास, एमके वायर्स, मेट्रो मिल्क, जगतजीत इंडस्ट्रीज, सावी इंटरनेशनल एवं एलपीयू मुख्य स्पांसर है।

चैंपियनशिप का समापन समारोह सात अगस्त को होगा जहां विजेताओं को पंजाब फूड और सिविल सप्लाई विभाग के निदेशक घनश्याम थोरी (आईएएस) पुरस्कृत करेंगे। चैंपियनशिप के दौरान जालंधर से पहले राष्ट्रीय चैंपियन (1951) श्री नरिंदर स्याल को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया जाएगा।?

समारोह में डीसी द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर जीत हासिल करने वाले दिव्यम सचदेवा, लिज़ा टांक,मान्या रल्हन, समर्थ भारद्वाज,राम लखन और जयदीप कोहली को 11-11 हजार रुपए दिए गए।

विकास ठाकुर के गांव में मना जश्न

हमीरपुर। भारोत्तोलक विकास ठाकुर के राष्ट्रमंडल खेल 2022 में रजत पदक जीतने के बाद उनका गांव पटनौं हर्षोल्लास से जगमगा उठा। हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले में स्थित छोटे से गांव पटनौं से आने वाले विकास ने मंगलवार को 96 किग्रा भार वर्ग में भारत के लिये लगातार तीसरी बार राष्ट्रमंडल पदक जीता। वह इससे पहले ग्लासगो 2014 में रजत और गोल्ड कोस्ट 2018 में कांस्य पदक जीत चुके हैं। जब विकास बर्मिंघम में भारत को पदक दिलाने का प्रयास कर रहे थे, तब उनके माता-पिता भारत में टीवी पर नज़रें गड़ाए बैठे थे। जब 28 वर्षीय विकास ने रजत जीतकर ग्लासगो का अपना कारनामा दोहराया तो उनके घर और गांव में खुशी की लहर दौड़ गयी। उनके माता-पिता ने अपनी खुशी में शामिल होने वाले हर पटनौंवासी का मुंह मीठा करवाया। विकास के बहनोई संगीत अत्री ने यूनीवार्ता से कहा कि देश के लिये तीसरी बार पदक जीतना बहुत बड़ी उपलब्धि थी। संगीत ने बताया कि उन्होंने विकास को फोन करके बधाई भी दी।

सूर्य के तीखे तेवरों से भारत को मिली 2-1 की बढ़त

एजेंसी

बैसेतैरे। सूर्यकुमार यादव की तीखे तेवरों से सजी 76 रन की विस्फोटक पारी की बदौलत भारत ने वेस्ट इंडीज को मंगलवार को तीसरे टी20 में छह गेंद शेष रहते सात विकेट से हराकर पांच मैचों की सीरीज में 2-1 की बढ़त बना ली।

वेस्ट इंडीज ने काइल मेयर्स की 73 रन की विस्फोटक अर्धशतकीय पारी की बदौलत पांच विकेट पर 164 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर बनाया जबकि भारत ने जवाबी प्रहार करते हुए 19 ओवर में तीन विकेट पर 165 रन बनाकर जीत अपने नाम की। सूर्य ने 44 गेंदों पर 76 रन की आतिशी पारी में आठ चौके और चार छक्के लगाए जिसके लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार मिला।

कप्तान रोहित शर्मा के 11 रन बनाकर रिटायर्ड हर्ट होने के बाद सूर्य ने स्कोरिंग की जिम्मेदारी संभाली और

जब वह दूसरे बल्लेबाज के रूप में आउट हुए तो भारत का स्कोर 135 पहुंच चुका था। श्रेयस अय्यर ने 24 रन बनाये जबकि ऋषभ पंत ने नाबाद 33 रन बनाकर भारत को जीत की मंजिल पर पहुंचाया। दीपक हुड्डा 10 रन पर नाबाद रहे।

प्लेयर ऑफ़ द मैच बने सूर्यकुमार यादव ने मैच के बाद कहा,%यह टी20 मैचों में मेरा सबसे तेज़ अर्धशतक है और मैं बहुत खुश हूं। जब रोहित चोटिल होकर बाहर चले गए तो किसी एक खिलाड़ी को पारी को एंकर करना था। पिच थोड़ी सी धीमी थी। मुझे ओपनर की भूमिका पसंद आ रही है। आईपीएल में भी मैं ओपन कर चुका हूं। इससे पहले भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। विंडीज को 57 रन की शानदार ओपनिंग साझेदारी मिली। ब्रेंडन किंग ने 20 गेंदों पर तीन चौकों की मदद से 20 रन बनाये। मेयर्स ने 50 गेंदों पर 73 रन की विस्फोटक पारी में आठ चौकेऔर चार छक्के लगाए। कप्तान निकोलस पूरन ने 23 गेंदों पर दो चौकों और एक छक्के के सहारे 22 रन बनाये। रोवमन पॉवेल ने 14 गेंदों में 23 और शिमरॉन हेत्माएर ने 12 गेंदों में 20 रन बनाये।

वेस्टइंडीज़ की शुरूआत अच्छी रही थी जब उनके सलामी बल्लेबाज़ों ने तेज़ अर्धशतकीय साझेदारी की। लेकिन एक विकेट गिरने के बाद वे धीमे हो गए। तीसरे नंबर पर आए कप्तान पूरन ने 23 गेंदों पर धीमी 22 रन की पारी खेली। वहीं दूसरे छोर से काइल मेयर्स लगातार चौके-छक्के लगा रहे थे।

अल-ज़वाहिरी का खात्मा पर परिवार को नहीं आई खरोच

अमेरिका ने किया खास तकनीक का इस्तेमाल

एजेंसी

काबुल। काबुल में छिपे अल-क़ायदा के मुखिया अयमन अल-ज़वाहिरी के खात्मे को लेकर कई तरह की बातें कही जा रही हैं। यह भी कहा जा रहा है कि पाकिस्तान ने मोटी रकम के बदले इस ऑपरेशन में अमेरिका की मदद की। अमेरिका ने इस ऑपरेशन की तैयारी काफी समय पहले ही कर ली थी। अमेरिकी सेना ने आतंकी को ढेर करने के लिए ऐसी तकनीक का इस्तेमाल किया कि उसके घर में मौजूद अन्य सदस्यों को खरोच तक नहीं आई। घर के आसपास भी किसी तरह का नुकसान नहीं हुआ। एक धमाके ने केवल अल-जंवाहिरी को मौत की नींद सुला दिया।

अमेरिकी सेना की खास तकनीक, जिससे मारा गया आतंकी

सोचने वाली बात है कि आखिर अमेरिकी सेना ने कौन सी तकनीक का इस्तेमाल किया कि उसका निशाना इतना सटीक था। पहले कई बार ऐसा हो चुका है कि अमेरिकी सेना का

निशाना चूका और फिर मासूम लोगों की जान चली गई। लेकिन इस बार ड्रोन से निकली मिसाइल ने सीधा लक्ष्य को भेदा। अमेरिका ने अल-ज़वाहिरी को मारने के लिए ड्रोन से हेलफायर मिसाइल दागे थे।

क्या है हेलफायर मिसाइल

अल-ज़वाहिरी को मारने केलिए ऐसी मिसाइल का इस्तेमाल किया गया था जो कि लेजर तनकीक से निशाना लगाती है। इस मिसाइल को मानवरहित ड्रोन से दागा गया। बताया जाता है कि बगदाद में ईरानी सेना के जनरल कासिम सुलेमानी को इसी तकनीक से मारा गया था। इस मिसाइल को विमान, हेलिकॉप्टर, किसी वाहन से भी दागा जा सकता है। इस बार मानवरहित ड्रोन का इस्तेमाल किया गया। दूर बैठा ऑपरेटर ड्रोन को संचालित कर रहा था और कैमरे के जरिए अल-जवाहिरी पर नजर रख रहा था। अल-जवाहिरी जैसा ही बालकनी में आया, लक्ष्य साध दिया गया। लेजर किरण आतंकी पर पड़ी और मिसाइल सीधा लक्ष्य पर गिर गई।

जानलेवा साबित हुई अल-ज़वाहिरी की एक आदत

एक अमेरिकी अधिकारी के मुताबिक अल-ज़वाहिरी की जीवनचर्या पर लंबे समय से नज़र रखी जा रही थी। खुफिया विभाग ने उसका पूरा खाका बना लिया था। अल-ज़वाहिरी एक निश्चित समय पर अपनी बालकनी में बैठता था। हवाई हमले का प्लान कुछ इस तरह से तैयारी किया गया कि केवल आतंकी को ही निशाना बनाया जाए। बाकी इमारत को कोई नकुसान न पहुंचे। रिपोर्ट्स में यह भी कहा गया है कि ड्रोन और एयरक्राफ्ट उस जगह पर नजर बनाए हुए थे। जब वह बालकनी में आया तभी ड्रोन से लक्ष्य को लॉक कर दिया गया। लेजर किरण अलजवाहिरी पर पड़ी और फिर मिसाइल ने उसे उड़ा दिया। इस हमले में केवल बालकनी में ही तोड़-फोड़ हुई।

अमेरिका के 9/11 के हमले में अल-जवाहिरी ओसामा बिन लादेन के साथ था। लादेन की मौत के बाद अल-कायदा की कमान उसके हाथ में थी। बिन लादेन के मारे जाने तक भी आतंकी संगठन में उसकी नंबर दो की हैसियत थी। इस तरह चार राष्ट्रपतियों के कार्यकाल में आतंकी को मारने की कोशिश की गई लेकिन सफलता अब जाकर मिली।

बताया जा रहा है कि अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे के बाद हक्कानी नेटवर्क की मदद से अल-जवाहिरी काबुल पहुंचा था और यहीं रहने का ठिकाना बना लिया था।

द. कोरिया में कोरोना के 1,19,922 नए मामले दर्ज

सोल। दक्षिण कोरिया में कोरोना वायरस (कोविड-19) संक्रमण के 1,19,922 नए मामले सामने आने से संक्रमितों की संख्या बढ़कर 2,00,52,305 हो गयी है। स्वास्थ्य अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। कोरिया रोग नियंत्रण और रोकथाम एजेंसी के अनुसार, देश में कोरोना के मामले पिछले दिन की तुलना में 1,11,789 से अधिक है और एक सप्ताह पहले 1,00,245 से अधिक है। पिछले एक हफ्ते में कोरोना मामलों की दैनिक औसत संख्या 86,520 थी। एजेंसी के अनुसार, नए मामलों में से छह सौ मामले विदेशों से आए संक्रमित यात्री हैं और अन्य स्थानीय संपर्कों से पाए गए, जो कुल मिलाकर 45,900 हो गया।

अब ताइवान स्ट्रेट के पास युद्धाभ्यास बेहद जरूरी, नैन्सी पेलोसी की रवानगी से पहले चीन की नई धमकी

नई दिल्ली। नैन्सी पेलोसी के बहाने अमेरिका ने चीन को ताइवान के मुद्दे पर ललकार दिया है। चीन अभी अमेरिकी सीनेटर पेलोसी के ताइवान दौरे को खुद के लिए चुनौती के रूप में देख रहा है। नैन्सी पेलोसी ताइवान से दक्षिण कोरिया के लिए निकल चुकी हैं। इस बीच चीन ने अमेरिका को नई धमकी दी है। चीन ने कहा है कि ताइवान स्ट्रेट के पास युद्धाभ्यास बेहद जरूरी है। उधर, ताइवान ने भी चीन को कड़ा जवाब दिया है। एक वीडियो जारी करते हुए सैन्य शक्ति प्रदर्शन का वीडियो जारी किया है।

अमेरिकी सीनेटर नैन्सी पेलोसी का ताइवान दौरा करना चीन के गले के नीचे नहीं उतर रहा है। चीन ताइवान को अपना अभिन्न हिस्सा बता चुका है। चीन ने अमेरिका को नैन्सी के ताइवान

जाने से पहले धमकी दी थी कि वो अपना वादा और विश्वास न तोड़े लेकिन, ताइवान का समर्थन करते हुए अमेरिकी सीनेटर पेलोसी ने ताइवान का दौरा किया। उन्होंने ताइवान की राष्ट्रपति त्साई इंग-वेन से मुलाकात की और दावा किया कि अमेरिका ताइवान के साथ हर मोड़ पर साथ खड़ा है। अब अमेरिका की ताइवान में दिलचस्पी दिखाना चीन को भड़का रहा है। चीन मंगलवार रात (नैन्सी पेलोसी के ताइवान पहुंचने के बाद) से ताइवान के आस-पास लगातार युद्धाभ्यास कर रहा है। चीन ने अमेरिका को नई धमकी भी दी। कहा कि ताइवान स्ट्रेट के पास उसका युद्धाभ्यास बेहद जरूरी है और यह जारी रहेगा। चीन की यह नई धमकी ठीक उस वक्त आई है जब नैन्सी पेलोसी ताइवान से दक्षिण कोरिया के लिए रवाना होने वाली हैं।

ताइवान ने भी दिखाए तेवर

उधर, चीन की लगातार धमकी के बीच ताइवान ने अभी अपने तेवर सख्त कर दिए हैं। चीन की धमकी के बाद ताइवान की ओर से एक वीडियो जारी किया गया है। ताइवान ने वीडियो में अपनी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन किया और चीन को संदेश दिया कि अगर उसे छेड़ा गया तो वो भी चुप नहीं बैठेगा।

रानिल विक्रमसिंघे ने आर्थिक संकट से उबरने के उपाय सुझाए

कोलंबो। श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे ने बुधवार को राजनीतिक दलों से आग्रह किया कि वे एक सर्वदलीय सरकार के गठन में उनके साथ शामिल हों जिससे देश आर्थिक संकट से बाहर निकल सके। श्री विक्रमसिंघे ने नौंवी संसद के तीसरे सत्र की शुरूआत के बाद सरकार का नीतिगत बयान देते कहा कि वह पहले से ही इस मामले पर राजनीतिक दलों से चर्चा शुरु कर चुके है। उन्होंने कहा कि श्रीलंका को आधुनिक अर्थव्यवस्था की जरुरत है और इसे बनाये रखने के लिए लम्बे समय तक विदेशी रिणों पर निर्भर रहने की जरुरत नहीं है। उन्होंने कहा कि वर्तमान आर्थिक संकट अर्थव्यवस्था में आवश्यक उपाय नहीं करने का नतीजा है। उन्होंने कहा कि श्रीलंका को भविष्य के लिए योजना बनानी होगी।

न्यूजीलैंड ने जारी की पहली जलवायु अनुकूलन योजना

वेंलिगटन। न्यूजीलैंड ने अपनी पहली राष्ट्रीय अनुकूलन योजना बुधवार को शुरू की जो यह सुनिश्चित करेगी कि समुदायों के पास बढ़ते समुद्र , गर्मी और मौसम के अनुकुल स्वयं को तैयार करने के लिए जरुरी जानकारी हो। जलवायु परिवर्तन मंत्री जेम्स शॉ ने बयान में कहा कि यह योजना लोगों को समुदाय आधारित पहलों और राष्ट्रीय स्तर की नीतियों और कानूनों के संयोजन के माध्यम से तैयार करने के लिए औजार उपलब्ध करायेगी ताकि जलवायु परिवर्तन होने पर भी उनका जीवन चल सकें। उन्होंने कहा कि जलवायु जोखिमों के जवाब में सरकार अगले छह वर्षों में जो कदम उठाएगी तो यह 120 से अधिक कार्यों को एक साथ लाएगा और समुदायों के लिए एक ब्ल्यू प्रिंट उपलब्ध करायेगा। उन्होंने कहा, जितनी जल्दी हम कार्य करेंगे यह कार्रवाई उतनी ही प्रभावी होगी। उन्होंने कहा कि यह योजना घर खरीदने वालों के लिए बेहतर जानकारी प्रदान करेगी।

गर्भपात समर्थक समूहों के लिए बड़ी जीत

वाशिंगटन। अमेरिका के रूढ़िवादी राज्य कंसास ने गर्भपात के अधिकारों की रक्षा के लिए एक जनमत संग्रह में एक आश्चर्यजनक कदम उठाया है जो कि गर्भपात समर्थक समूहों के लिए एक बड़ी जीत है। बीबीसी ने बुधवार को यह जानकारी दी। मतदाताओं ने भारी उत्साह के साथ मतदान किया कि वे राज्य के संविधान में संशोधन नहीं करना चाहते हैं ताकि यह दावा किया जा सके कि गर्भपात का कोई अधिकार नहीं है। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट की ओर से राज्यों को ग्रभपात कराने की प्रक्रिया पर प्रतिबंध लगाने की अनुमति दिये जाने के बाद जनमत संग्रह कराये जाने का यह पहला मामला है। इस चुनाव में परिणाम अगर उल्टा होता तो कानूनविद राज्य में गर्भपात को प्रतिबंधित करने के लिए आगे बढ़ सकते थे। मिशिगन, एरिज़ोना, मिसौरी और उत्तर-पश्चिमी राज्य वाशिंगटन में भी मंगलवार को चुनाव हुए।

पाकिस्तान सरकार चाहती है इमरान पर प्रतिबंध लगाया जाए

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में सत्तारूढ गठबंधन के सदस्यों का मानना है कि पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के निषिद्ध फंडिंग मामले में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान के खिलाफ प्रतिबंध लगाया जाए और पाकिस्तान चुनाव आयोग (ईसीपी) के फैसले को पार्टी के खिलाफ 'आरोपपत्र' करार दिया जाए। सत्तारूढ़ गठबंधन के कुछ सदस्यों ने कहा है कि ईसीपी का फैसला यह साबित करता है कि पीटीआई की स्थापना के पीछे 'पाकिस्तान विरोधी ताकतों' का हाथ था और पार्टी प्रमुख इमरान खान को झूठे, भ्रष्ट, विदेशी एजेंट से लेकर मनी लांड्रिंग करने वाला तक करार दिया गया है। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा कि ईसीपी के फैसले ने श्री इमरान खान को झूठे हलफनामे प्रस्तुत करने के लिए झूठा घोषित कर दिया है। जबकि पीपीपी के अध्यक्ष और वेदिश मंत्री बिलावल भुट्टो-जरदारी के प्रवक्ता ने कहा कि ईसीपी के फैसले ने साबित कर दिया कि पूर्व प्रधानमंत्री एक भ्रष्ट इंसान हैं और वह शौकत खानम कैंसर अस्पताल के नाम से अपनी राजनीतिक पार्टी चला रहे थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

पुष्कर में सैलानी उठाते हैं मरुस्थल का लुत्फ, लज़ीज व्यंज़न और लोक नृत्यों का है संगम

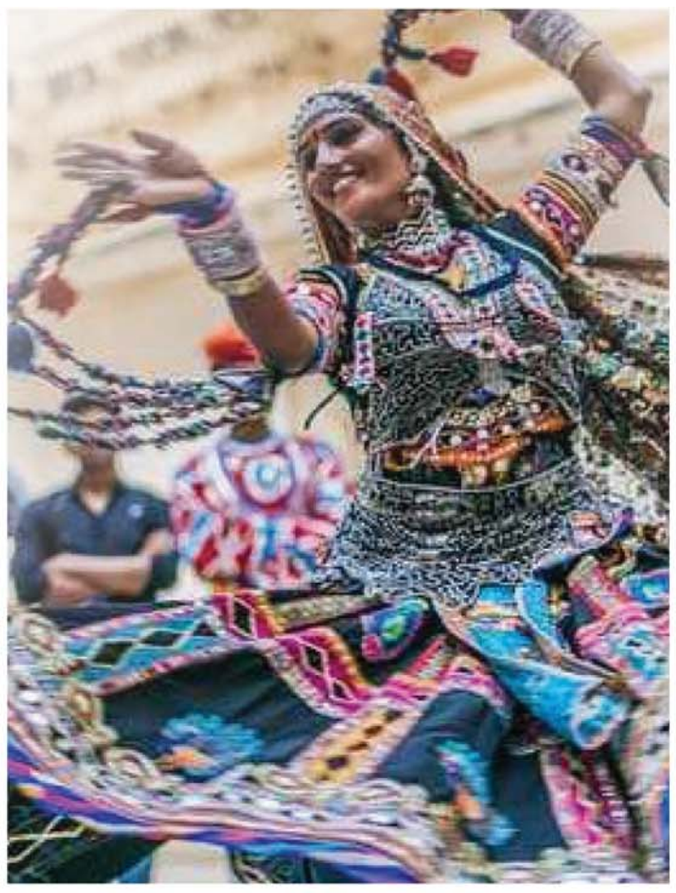

अजमेर जिला रेगिस्तानी जिलों में शामिल नहीं है परन्तु अजमेर का पुष्कर चारों और से रेगिस्तान की रेत से घिरा है। यहां जेसलमेर में सम जैसे आकर्षक रेतीले धोरें नहीं हैं परंतु सैलानियों को राजस्थान की ग्रामीण संस्कृति से बखूबी परिचित कराते हैं।

आकर्षण

पुस्कर में पर्यटकों के लिए कार्तिक पूर्णिमा पर ऊँट उत्सव, अंतर्राष्ट्रीय हॉट एयर बैलून फेस्टिवल, सावित्री मन्दिर पर केबल राइड, वराह घाट पर पुष्कर आरती, रॉक क्लाइम्बिंग, रैपलिंग, क्वैड बाइकिंग, साइकिलिंग, सनसेट के साथ केमल सफारी, पूरी रात केमल सफारी, केमल सफारी के साथ लक्ज़री नाईट कैंपिंग, केमल कार्ट सफारी, जीप सफारी, हॉर्स राइडिंग, ज़िप्लिनिंग मनोरंजन के प्रमुख आकर्षण हैं। पर्यटक रेगिस्तान के अनदेखे क्षेत्र के इन आकर्षणों का यहाँ लुत्फ उठा सकते हैं। जयपुर के पास रेगिस्तान देखने की इच्छा रखने वाले पर्यटकों के लिए जयपुर से मात्र 150 किमी. एवं अजमेर से 11 किमी.दूरी पर पुष्कर सर्वश्रेस्ठ विकल्प है। पूरे वर्ष ही भारत एवं अन्य देशों के पर्यटक पुष्कर का डेजर्ट क्षेत्र देखने आते हैं और ग्रामीण केमल सफारी, नाईट कैंपिंग,लजीज व्यंजन और लोक नृत्यों का लुत्फ उठाते हैं।

प्रतिवर्ष यहां पर कार्तिक पूर्णिमा को पुष्कर मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक भी आते हैं। हजारों हिन्दु लोग इस मेले में आते हैं और अपने को पवित्र करने के लिए पुष्कर झील में स्नान करते हैं। भारत में किसी पौराणिक स्थल पर आम तौर पर जिस संख्या में पर्यटक आते हैं, पुष्कर में आने वाले पर्यटकों की संख्या उससे कहीं ज्यादा है। इनमें बडी संख्या विदेशी सैलानियों की है, जिन्हें पुष्कर खास तौर पर पसंद है। हर साल कार्तिक महीने में लगने वाले पुष्कर ऊंट मेले ने तो इस जगह को दुनिया भर में अलग ही पहचान दे दी है। मेले के समय पुष्कर में कई संस्कृतियों का मिलन देखने को मिलता है। एक तरफ तो मेला देखने के लिए विदेशी सैलानी बडी संख्या में पहुंचते हैं, तो दूसरी तरफ राजस्थान व आसपास के तमाम इलाकों से आदिवासी और ग्रामीण लोग अपने-अपने पशुओं के साथ मेले में शामिल होने आते हैं। मेला रेत के विशाल मैदान में लगाया जाता है। ढेर सारी कतार की कतार दुकानें, खाने-पीने के स्टाल, सर्कस, झूले और न जाने क्या-क्या। ऊंट मेला और रेगिस्तान की नजदीकी है इसलिए ऊंट तो हर तरफ देखने को मिलते ही हैं। वर्तमान में इसका स्वरूप विशाल पशु मेले का हो गया है।

मनोरंजन

दिलचस्प ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता , सजे-धजे ऊंट का नृत्य, मटकीफोड़, लम्बी मूंछें और दुल्हन की प्रतियोगिताएं पर्यटकों का खूब मनोरंजन करती हैं। रात्रि में लोक कलाकारों के सुर-ताल की जुगलबंदी और रंगबिरंगे नृत्यों से पर्यटक आनन्दित होते हैं। अनेक प्रदर्शनियां भी सजाई जाती हैं। परेड और दौड़ को हजारों देशी और विदेशी पर्यटक रुचिपूर्वक देखते हैं। स्मृतियों को संजोने के लिए पर्यटक हर तरफ फ़ोटो खीचते नज़र आते हैं। पर्यटकों के लिए पुष्कर में सरोवर एवं कई मन्दिर भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय हॉट एयर बैलून भी प्रबल आकर्षण बन गया है।

ब्रह्मा मन्दिर

पुष्कर सुरण्य नागा पहाड़ की गोद में रेतीले धरातल पर बसा है। पुष्कर का महात्म्य वेद, पुराण, महाकाव्य, साहित्य, शिलालेख एवं लोक कथाओं में वर्णित है। पुष्कर को मंदिरों के शहर के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ लगभग 500 मंदिर बताए जाते हैं। ब्रह्माजी का मंदिर देश भर में अकेला प्रसिद्ध मन्दिर है। धरातल से करीब 50 फीट की ऊंचाई पर स्थित मन्दिर के प्रवेश द्वार के भीतरी भाग पर ब्रह्मा का वाहन राजहंस है। प्रमुख मंदिर के गर्भगृह में ब्रह्मा जी की बैठी हुई मुद्रा में प्रतिमा स्थापित है। चतुर्मुखी इस प्रतिमा के तीन मुख सामने से दिखाई देते हैं। प्रतिमा को करीब 800 वर्ष पुराना बताया जाता है। सैंकड़ों वर्षों से प्रतिमा का प्रतिदिन जलस्नान व पंचामृत अभिषेक किया जाता है। मंदिर के आंगन में ब्रिटिशकालीन एक-एक रूपये के सिक्के जड़े हैं। संगमरमर के कलात्मक स्तंभ मोह लेते हैं। मंदिर परिक्रमा मार्ग में सावित्री माता का मंदिर स्थापित किया गया है। परिसर में अन्य मन्दिर भी दर्शनीय हैं।

पुष्कर सरोवर

अर्धचन्द्राकार पवित्र पुष्कर सरोवर प्रमुख धार्मिक पर्यटक स्थल है। यहां 52 घाट बने हैं, जिन पर 700 से 800 वर्ष प्राचीन विभिन्न देवी-देवताओं के मंदिर बनाए गए हैं। देश के चार प्रमुख सरोवरों में माना जाने वाला पुष्कर सरोवर की धार्मिक आस्था का पता इसी बात से चलता है कि यहां स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। प्रातःकाल की वेला में जब सूर्योदय होता है तथा गोधूलि की वेला में जब सूर्यास्त होता है पुष्कर का दृष्य अत्यंत ही मनोरम होता है। इस दृष्य को देखने के लिए घाटों पर सैलानियों और श्रद्धालुओं का जमावड़ा देखा जा सकता है।

वराह मन्दिर

प्राचीनता की दृष्टि से करीब 900 वर्ष पुराना वराह मंदिर का निर्माण अजमेर के चैहान शासक अर्णीराज ने कराया था। पुष्कर सरोवर के वराह घाट के पास स्थित वराह चौंक से एक रास्ता बस्ती के भीतर इमली मोहल्ले तक जाता है, जहां यह विशाल मंदिर स्थापित है। करीब 30 फुट ऊंचा मंदिर, चौड़ी सीढ़ियां तथा किले जैसा प्रवेश द्वार आकर्षण का केन्द्र है। बताया जाता है कि कभी मंदिर का शिखर 125 फीट ऊंचा था, जिस पर सोन चराग (स्वर्ण दीप) जलता था, जो दिल्ली तक दिखाई देता था। मुख्य मंदिर में विष्णु के अवतार वराह भगवान की मूर्ति स्थापित है। मूर्ति के नीचे सप्त धातु से निर्मित करीब सवा मन वजन की लक्ष्मी-नारायण की प्रतिमा है। यहीं पर बून्दी के राजा द्वारा भेंट किया गया लोहे का सवा मनी भाला रखा गया है। जलझूलनी ग्यारस पर लक्ष्मी-नारायण की सवारी धूमधाम से निकाली जाती है। चैत्र माह में वराह नवमी के दिन भगवान का जन्मदिन मनाया जाता है। जन्माष्टमी व अन्नकूट के अवसर पर उत्सव आयोजित किए जाते हैं। मंदिर में विशेष कर चावल का प्रसाद चढ़ता है। वराह घाट पर संध्या आरती का दृश्य देखे ही बनता है।

श्री रमा वैकुण्ठ मंदिर

ब्रह्मा जी के मंदिर के बाद इस मंदिर का विशेष महत्व है, जिसे रंगा जी का मंदिर भी कहा जाता है। मंदिर करीब 20 बीघा भूमि पर बना है। मंदिर का प्रवेश द्वार आकर्षक एवं विशाल है। भीतर जाने पर सामने ही रमा वैकुण्ठ का मंदिर नजर आता है। मंदिर के ऊतंग गोपुरम पर 350 से अधिक देवताओं के चिन्ह बने हैं। यह गोपुरम दक्षिण भारतीय स्थापत्य कला शैली का अनुपम उदाहरण है। मंदिर के सामने प्रांगण में ही एक बड़ा स्वर्णिम गरूड़ ध्वज नजर आता है। मंदिर के पास अभिमुख गरूड़ मंदिर स्थापित है। मुख्य मंदिर के चारों तरफ पक्के दालान के बीच में तीन-चार फीट ऊंचे चैकोर बड़े संगमरमरी चबूतरे पर मंदिर स्थित है। मुख्य प्रतिमा व्यंकटेश भगवान विष्णु की काले पत्थरों की आभूषणों एवं वस्त्रों से सुसज्जित है। इसी को वैकुण्ठ नाथ की प्रतिमा कहा जाता है। मंदिर में ही श्रीदेवी, तिरूपति नाथ, भूदेवी, लक्ष्मी व नरसिंह की मूर्तियां भी हैं। परिक्रमा मार्ग में दोनों तरफ दीवारों पर आकर्षक रंगीन चित्र एवं संगमरमर के कलात्मक स्तंभ बने हैं। सम्पूर्ण परिक्रमा मार्ग अत्यंत लुभावना लगता है।

रंगनाथ वेणुगोपाल मंदिर

दक्षिण भारत स्थापत्य शैली पर आधारित भगवान रंगनाथ वेणुगोपाल का विशाल मंदिर वराह चौंक के पास स्थित है। मंदिर का निर्माण दक्षिण भारत के एक सेठ पूरनमल गनेरीवाल द्वारा 1844 ईस्वी में करवाया गया था। मंदिर का गोपुरम और कलश दूर से ही नजर आता है। विशाल द्वार से अंदर प्रवेश करने पर पक्का दालान और कमरे बने हैं। यहीं पर उतंग स्वर्णिम गरूड़ ध्वज है, जिसके पास गरूड़ का छोटा सा मंदिर है, जो भगवान वेणुगोपाल की तरफ मुख किए हुए है। दांयी ओर मुख्य मंदिर की सीढ़ियां जाती हैं। गर्भगृह में बंशी बजाते हुए भगवान वेणुगोपाल की श्याम वर्ण की लुभावनी प्रतिमा है। मंदिर मकराना के श्वेत पत्थर से निर्मित है, जिसके दोनों ओर जय-विजय द्वारपाल हैं। इसी मंदिर में रूकमणी, श्रीकृष्ण, भूदेवी, सत्यभामा की पंचधातु की प्रतिमाएं हैं। चैत्र माह में भगवान रंगनाथ का विवाह उत्सव मनाया जाता है।

अरावली पर्वत की घाटियों में बसा रणकपुर जैन मंदिर

राजस्थान में अरावली पर्वत की घाटियों के मध्य चारों ओर जंगलों से घिरे रणकपुर में भगवान ऋषभदेव का चतुर्मुखी जैन मंदिर है। जंगलों से घिरे होने के कारण इस मंदिर की भव्यता देखते ही बनती है। भारत के जैन मंदिरों में संभवतः इसकी इमारत सबसे भव्य एवं विशाल है। रणकपुर मंदिर उदयपुर से 96 किलोमीटर की दूरी पर है।

इस मंदिर की इमारत लगभग 40,000 वर्गफीट में फैली है। आज से करीब 600 वर्ष पूर्व 1446 विक्रम संवत में इस मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ था, जो 50 वर्षों से अधिक समय तक चला। कहा जाता है कि उस समय में इसके निर्माण में करीब 99 लाख रुपए का खर्च आया था। इस मंदिर में 4 कलात्मक प्रवेश द्वार हैं। मंदिर के मुख्य गृह में तीर्थंकर आदिनाथ की संगमरमर से बनी 4 विशाल मूर्तियां हैं। करीब 72 इंच ऊंची ये मूर्तियां 4 अलग दिशाओं की ओर उन्मुख हैं। इसी कारण इसे चतुर्मुख मंदिर कहा जाता है। इसके अलावा मंदिर में 76 छोटे गुम्बदनुमा पवित्र स्थान, 4 बड़े प्रार्थना कक्ष तथा 4 बड़े पूजन स्थल हैं। ये मनुष्य को जीवन-मृत्यु की 84 योनियों से मुक्ति प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस मंदिर की प्रमुख विशेषता इसके सैकड़ों खंभे हैं जिनकी संख्या करीब 1,444 है। यहां आप जिस तरफ भी नजर घुमाएंगे आपको छोटे-बड़े आकारों के खंभे दिखाई देते हैं, परंतु ये खंभे इस प्रकार बनाए गए हैं कि कहीं से भी देखने पर मुख्य पवित्र स्थल के दर्शन में बाधा नहीं पहुंचती है। इन खंभों पर अतिसुंदर नक्काशी की गई है। इन खंभों की खास विशेषता यह है कि ये सभी अनोखे और अलग-अलग कलाकृतियों से निर्मित हैं। मंदिर की छत पर की गई नक्काशी इसकी उत्कृष्टता का प्रतीक है।

मंदिर के निर्माताओं ने जहां कलात्मक दोमंजिला भवन का निर्माण किया है, वहीं भविष्य में किसी संकट का अनुमान लगाते हुए कई तहखाने भी बनाए गए हैं। इन तहखानों में पवित्र मूर्तियों को सुरक्षित रखा जा सकता है। ये तहखाने मंदिर के निर्माताओं की निर्माण संबंधी दूरदर्शिता का परिचय देते हैं।

विक्रम संवत 1953 में इस मंदिर के रखरखाव की जिम्मेदारी एक ट्रस्ट को दे दी गई थी। उसने मंदिर के पुनरुद्धार कार्य को कुशलतापूर्वक कर इसे एक नया रूप दिया। पत्थरों पर की गई नक्काशी इतनी भव्य है कि कई विख्यात शिल्पकार इसे विश्व के आश्चर्यों में से एक बताते हैं। हर वर्ष हजारों कलाप्रेमी इस मंदिर को देखने आते हैं। इसके अलावा यहां संगमरमर के टुकड़े पर भगवान ऋषभदेव के पदचिह्न भी हैं। ये भगवान ऋषभदेव तथा शत्रुंजय की शिक्षाओं की याद दिलाते हैं।

रणकपुर का निर्माण कैसे हुआ- इस मंदिर का निर्माण 4 श्रद्धालुओं- आचार्य श्यामसुंदरजी, धरन शाह, कुंभा राणा तथा देपा ने कराया था। आचार्य सोमसुंदर एक धार्मिक नेता थे जबकि कुंभा राणा मलगढ़ के राजा तथा धरन शाह उनके मंत्री थे। धरन शाह ने धार्मिक प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर भगवान ऋषभदेव का मंदिर बनवाने का निर्णय लिया था।

कहा जाता है कि एक रात उन्हें स्वप्न में नलिनीगुल्मा विमान के दर्शन हुए, जो पवित्र विमानों में सर्वाधिक सुंदर माना जाता है। इसी विमान की तर्ज पर धरन शाह ने मंदिर बनवाने का निर्णय लिया। मंदिर निर्माण के लिए धरन शाह ने कई वास्तुकारों को आमंत्रित किया। इनके द्वारा प्रस्तुत कोई भी योजना उन्हें पसंद नहीं आई। अंततः मुंदारा से आए एक साधारण से वास्तुकार दीपक की योजना से वे संतुष्ट हो गए।

मंदिर निर्माण के लिए धरन शाह को मलगढ़ नरेश कुंभा राणा ने जमीन दी। उन्होंने मंदिर के समीप एक नगर बसाने का भी सुझाव दिया। मंदिर के समीप मदगी नामक गांव को इसके लिए चुना गया तथा मंदिर एवं नगर का निर्माण साथ ही प्रारंभ हुआ। राजा कुंभा राणा के नाम पर इसे रणपुर कहा गया, जो बाद में रणकपुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज का रणकपुर पुरानी विरासत और इसे सहेजकर रखने वालों के बारे में भी संदेश देता है जिनके कारण रणकपुर मात्र एक विचार से वास्तविकता में बदल सका।

वैसे भी राजस्थान अपने भव्य स्मारकों तथा भवनों के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थुान में स्थित रणकपुर मंदिर जैन धर्म के 5 प्रमुख तीर्थस्थरलों में से एक है। यह मंदिर खूबसूरती से तराशे गए प्राचीन जैन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर परिसर के आसपास ही नेमीनाथ और पार्श्वनाथ को समर्पित 2 मंदिर हैं, जो हमें खजुराहो की याद दिलाते हैं। यहां निर्मित सूर्य मंदिर की दीवारों पर योद्धाओं और घोड़ों के चित्र उकेरे गए हैं, जो अपने आप में एक उत्कृष्ट उदाहरण के समान है। यहां से लगभग 1 किलोमीटर दूरी पर माता अम्बा का मंदिर भी है।

कैसे पहुंचें:-

सड़क मार्ग:- उदयपुर देश के प्रमुख शहरों से सड़कों के जरिए जुड़ा हुआ है। उदयपुर से यहां के लिए प्राइवेट बसें तथा टैक्सियां उपलब्ध रहती हैं। आप यहां अपने निजी वाहन से भी जा सकते हैं।

रेलवे:- यहां पहुंचने के लिए निकटतम रेलवे स्टे शन उदयपुर ही है, साथ ही रणकपुर के लिए सभी प्रमुख शहरों से रेलगाड़ियां उपलब्धे हैं।

वायु मार्ग:- रणकपुर पहुंचने के लिए नजदीकी हवाई अड्डा उदयपुर है। दिल्लीं, मुंबई से यहां के लिए नियमित उड़ानें हैं।

आसपास के क्षेत्रों में पावापुरी सिरोही, संघवी भेरूतारक तीर्थ धाम, माउंट आबू, दिलवाड़ा का विख्यात जैन मंदिर भी हैं, जहां आसानी से पहुंचा जा सकता है।

CMYK CMYK CMYK CMYK